

हिन्दी, उर्दू, पंजाबी में एक साथ प्रकाशित दिल्ली सरकार की पत्रिका

अंक: अप्रैल-जून 2018

दिल्ली

दिल्ली



पानी की बचत करें

जल एक अमूल्य संसाधन है,
जिम्मेदारी से इसका उपयोग करें



पानी की बचत के आसान तरीके

- सुनिश्चित करें कि कहीं पानी का रिसाव न हो, यदि है तो पंजीकृत पलम्बर से ठीक कराएं।
- दांत साफ करते समय, दाढ़ी बनाते समय, बर्तन और कपड़े धोते समय नल खुला न छोड़ें। यदि संभव हो तो इस्तेमाल किए हुए पानी को फेंकने के बजाय पुनः उपयोग करें।
- वर्षा जल संचयन अपनाएं और पानी के बिलों में छूट पायें।
- घर के ऊपर लगी टंकियों में फ्लोट आपरेटेड बाल्व लगाएँ तथा ओवर फ्लो रोकने के लिए वाटर अलार्म लगाएं।

(*शर्तें लागू)

जल दूषित होने से कैसे बचाएं

- सर्विस पाईप लाईन में ऑन लाईन बूस्टर न लगाएं।
- प्रत्येक 15 वर्ष में फैरुल से टैप तक की घर की पानी की पाईप लाईनों की जाँच करवायें, जंग लगने और क्षतिग्रस्त होने पर बदलवाएं।
- पानी की टंकियों को नियमित रूप से साफ तथा कीटाणु रहित करें (भूमिगत और छत पर लगी टंकियों को नियमित रूप से साफ करें)।
- नियमित अंतराल में पंजीकृत पलम्बर से पाईप लाईन की जाँच करायें।



अरविंद केजरीवाल
मुख्यमंत्री, दिल्ली

दिल्ली सरकार

आप की सरकार

शहरी विकास विभाग
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

दिल्ली

अंक : अप्रैल-जून 2018

प्रधान सम्पादक

डॉ. जयदेव षडंगी

सम्पादक मंडल

संदीप मिश्र

डॉ. पंकज श्रीवास्तव

नलिन चौहान

कंचन आज़ाद

सहायक सूचना अधिकारी (प्रकाशन)

उर्मिला बैनिवाल

छाया चित्र

सुधीर कुमार, अजय कुमार, योगेश जोशी

“दिल्ली” पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में
अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं
तथा दिल्ली सरकार का इनसे सहमत होना
आवश्यक नहीं।

पत्राचार का पता

प्रधान सम्पादक

दिल्ली सूचना एवं प्रसार निदेशालय

दिल्ली सरकार

खंड सं. 9, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

दूरभाष : 23819046, 23817926

फैक्स : 23814081

ई-मेल: delhidip@gmail.com



टाँपर्स के घर जाकर मिले मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री

5

इस अंक में...

हिन्दी

सीबीएसई 12वीं परीक्षा में दिल्ली के सरकारी स्कूलों का शानदार प्रदर्शन.....	2
दिल्ली के स्कूलों में शुरू हुआ खुशियों का कार्यक्रम.....	7
गरीब बच्चों के एडमीशन पर सरकार ने दिखाई सख्ती.....	10
हार्डिंग बम केस के शहीदों को श्रद्धांजलि.....	12
सरकारी स्कूलों के बच्चों को अंग्रेजी का विशेष प्रशिक्षण.....	13
दिल्ली में अब नहीं दिया न्यूनतम वेतन तो हो सकती है जेल.....	14
दिल्ली के 'बस शेल्टर' में होंगे ट्रांसिट मैप.....	15
दिल्ली के निजी स्कूलों ने की बड़ी फीस वापस.....	16
विष्णु खरे बने हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष.....	22
माहवारी पर जागरूकता की शुरुआत घर से हो: सिसोदिया.....	23
पीरियड महोत्सव क्यों मनाया जाता है?.....	24
दमकल विभाग को जागरूकता अभियान.....	25
कविता-गौरवा.....	26
पूर्व यू.एन. महासचिव कोफी अन्नान का निधन.....	27

पंजाबी

सीबीएसई 12वीं प्रीफिआ विच ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ.....	1
ਟਾਪਰਸ ਦੇ ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਮਿਲੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ.....	4
ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਪਾਠਕ੍ਰਮ.....	6
'ਹਾਰਡਿੰਗ ਬੰਬ ਕੇਸ' ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ.....	9
ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਨਿੱਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਕੀਤੀ ਵਧੀ ਫੀਸ ਵਾਪਸ, ਨੌ ਫੀਸਦੀ ਵਿਆਜ ਦੇ ਨਾਲ.....	10
ਸਾਬਕਾ ਯੂ.ਐਨ. ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਦਾ ਦੇਹਾਂਤ.....	12
ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਅੰਗਰੇਜ਼ੀ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਿਖਲਾਈ.....	14

उर्दू

1. سی بی ایس ای 12 ویں امتحان میں دہلی کے سرکاری اسکولوں کا شاندار مظاہرہ.....	1
ٹاپرس کے گھر جا کر ملے وزیراعلیٰ اور نائب وزیراعلیٰ، بچوں کی محنت کو سراہا.....	4
4. ذہین بچوں کی راہ میں غریبی حائل نہیں بنے گی - کچر یوال.....	4
6. دہلی کے اسکولوں میں شروع ہوا خوشیوں کا انصاف تعلیم.....	6
9. ہارڈنگ بم کیس، کے شہیدوں کو خراج عقیدت.....	9
10. سرکاری اسکولوں کے بچوں کو انگریزی کی خصوصی تربیت.....	10
11. دہلی کے پرائیویٹ اسکولوں نے کی بڑھی فیس واپس نو فیصدی نفع کے ساتھ.....	11
13. محلہ کلینک، کوشا نادر قدم بتانے والے سابق یو این سکرٹری جنرل کو فی عمن کا انتقال.....	13

कुओं की मुंडेर पर बिखरा

18



सीबीएसई 12 वीं परीक्षा में दिल्ली के सरकारी स्कूलों का शानदार प्रदर्शन निजी स्कूलों को पीछे छोड़ा

दिल्ली में शिक्षा-व्यवस्था के कायाकल्प का असर हर तरफ़ दिख रहा है। इस बार भी दिल्ली के सरकारी स्कूलों ने बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया और निजी स्कूलों को पीछे छोड़ दिया।

26 मई 2018 को घोषित सीबीएसई 12वीं के नतीजों ने साबित किया कि सरकारी स्कूलों का स्तर साल दर साल बेहतर होता जा रहा है। दिल्ली की सुकृति गुप्ता

ने 99.4 प्रतिशत अंक पाकर टॉप किया। इस प्रदर्शन से खुश होकर दिल्ली के शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया ने ट्वीट कर छात्रों को बधाई दी। पिछले साल दिल्ली के सरकारी स्कूलों से 88.27 प्रतिशत छात्र सफल थे। वहीं इस साल दिल्ली के सरकारी स्कूलों की सफलता का आँकड़ा 2.37 प्रतिशत बढ़ा। कुल 90.64 फीसदी छात्र पास हुए।

शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन की कमान सम्हाल रहे उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि पिछले साल 103 स्कूलों ने 100 प्रतिशत रिजल्ट दिया था, इस बार इनकी संख्या 130 है। यानी इन स्कूलों में सभी बच्चे पास हुए। 546 स्कूलों के 90 प्रतिशत से ज्यादा छात्रों ने सफलता हासिल की है। मनीष सिसोदिया ने इसके लिए सरकारी स्कूलों के छात्रों, अध्यापको, अभिभावकों के साथ-साथ शिक्षा विभाग की पूरी टीम को बधाई दी।

सीबीएसई बोर्ड की 12वीं की परीक्षा के लिए 11510 स्कूलों के कुल 11,84,386 छात्रों ने पंजीकरण कराया था जिनमें से 11 लाख 6 हजार 772 ने परीक्षा दी। इसमें दो ट्रांसजेंडर छात्र भी शामिल थे। इन छात्रों के लिए देश विदेश में कुल 4145 परीक्षा केंद्र बनाए गए थे। जिसमें से कुल 11,06,772 छात्र परीक्षा में शामिल हुए और 9,18,763 छात्र पास हुए।

लड़कियों ने मारी बाजी

छात्राओं का प्रदर्शन शानदार रहा। नोएडा की मेघना श्रीवास्तव ने 500 में से 499 अंक प्राप्त कर अखिल भारतीय स्तर पर टॉप किया। टॉपर सूची की शुरुआत में तीन लड़कियों के नाम हैं। साथ ही, दरियागंज के अनाथालय में रहने वाली शहनाज ने व्यावसायिक शिक्षा में पहला स्थान हासिल किया।

यहाँ रहने वाली अन्य लड़कियों ने भी अच्छे नंबरों से कामयाबी हासिल की। डीटीसी बस चालक के बेटे प्रिंस कुमार ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों में, सीबीएसई की 12वीं की परीक्षा में विज्ञान संकाय में पहला स्थान हासिल किया। उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने प्रिंस कुमार को बधाई दी और कहा कि यह उनके लिए बहुत गर्व का मौका है। प्रिंस कुमार ने 97 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। उसे गणित में 100 में 100 अंक मिले। शिक्षामंत्री ने दिल्ली के सरकारी स्कूलों के वाणिज्य संकाय में अव्वल आने वाली प्राची प्रकाश और कला संकाय में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाली चित्रा कौशिक को भी बधाई दी।

सरकारी ने प्राइवेट स्कूलों को पछाड़ा

लगातार दूसरे साल सीबीएसई के 12वीं के नतीजों में दिल्ली के सरकारी स्कूलों ने प्राइवेट स्कूलों को पीछे छोड़ दिया। इस साल के नतीजों के मुताबिक जहाँ प्राइवेट स्कूलों के 79.29 प्रतिशत बच्चे पास हुए वहीं सरकारी स्कूलों का पास प्रतिशत 88.27 प्रतिशत रहा। इस तरह पास प्रतिशत के मामले में दिल्ली के सरकारी स्कूल, प्राइवेट स्कूलों से 9 फीसदी आगे रहे। सरकारी स्कूलों के अच्छे प्रदर्शन के लिए शिक्षा मंत्री मनीष सिसोदिया को हर ओर से बधाइयाँ मिलीं।





सरकारी स्कूलों में सुधार

उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के पास शिक्षा के अलावा भी कई महत्वपूर्ण विभाग हैं, लेकिन शिक्षा विभाग उनकी प्राथमिकता रहा है। बारहवीं के नतीजों में सरकारी स्कूलों के शानदार प्रदर्शन को उनकी 2 सालों की मेहनत के परिणाम के तौर पर देखा जा रहा है।

दरअसल, दिल्ली के सरकारी स्कूलों का स्तर बढ़ाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए—

दिल्ली में न केवल शिक्षा का बजट बढ़ाया गया, बल्कि शिक्षामंत्री मनीष सिसोदिया ने जम कर स्कूलों का औचक निरीक्षण किया। इससे माहौल बदलना शुरू हुआ। अभिभावकों की भागीदारी स्कूल मैनेजेंट में बढ़ाई गई। शिक्षकों की ट्रेनिंग को गंभीरता से लिया गया। उन्हें विदेश भेजकर प्रशिक्षण दिलाया गया। प्रभावी प्रधानाचार्यों का कमजोर समझे जाने वाले स्कूलों में तबादला किया गया। छुट्टियों के दौरान कमजोर समझे जाने वाले बच्चों के

लिए अलग से पढ़ाई की व्यवस्था कराई गई। बोर्ड परीक्षा से पहले उन्हें एकजाम टिप्स दी गई और 'मोटीवेशनल टाक्स' कराई गई ताकि वे प्रेरित हो सकें।

सरकारी स्कूल के शिक्षकों को कमजोर बच्चों पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया गया। व्यक्तिगत जिम्मेदारियाँ ली गईं। शिक्षा विभाग में अतिरिक्त निदेशक सुनीता कौशिक ने सुल्तानपुरी के सर्वोदय कन्या विद्यालय को गोद लिया था। पिछले साल इस स्कूल के करीब 40 प्रतिशत बच्चे ही पास हुए थे। जबकि इस साल करीब 80 प्रतिशत बच्चे पास हुए।

अब यह पूरी दुनिया मानने लगी है कि दिल्ली की शिक्षा व्यवस्था बेहतर हुई है। स्कूलों का बुनियादी ढाँचा बेहतर हुआ है। शिक्षक-छात्र अनुपात बेहतर हुआ है। साफ-सफाई पर विशेष ध्यान है। कमरों का फर्नीचर और दीवारों का रंग भी बदला है। माहौल सकारात्मक हुआ है तो बच्चों का पढ़ने में मन भी लगने लगा है। बोर्ड परीक्षा के नतीजों में इसका असर साफ नज़र आया। ■



टॉपर्स के घर जाकर मिले मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री, बच्चों की मेहनत को सराहा मेधावी बच्चों की राह में ग़रीबी बाधा नहीं बनेगी-केजरीवाल



दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया सरकारी स्कूलों के उन छात्रों से मिलने उनके घर गए जिन्होंने इंटरमीडिएट परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया। मेरिट लिस्ट में नाम दर्ज कराने वाले भारती राघव, प्रिंस कुमार, प्राची प्रकाश और चित्रा कौशिक के लिए 29 मई 2018 की तारीख यादगार बन गई जब दोनों नेता उनसे मिलने घर पहुँचे।

मुख्यमंत्री केजरीवाल और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया पालम स्थित राजनगर में प्रिंस कुमार के घर बधाई देने

पहुँचे तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। प्रिंस के स्कूल के शिक्षक भी वहाँ मौजूद थे। दोनों नेताओं ने उन्हें भी बधाई दी। प्रिंस जिस किराये के घर में रहता है, वहाँ सिर्फ एक कमरा है। पिता ने घर के बाथरूम को उसके पढ़ने की जगह में तब्दील कराया था। इस छोटी सी जगह में एक व्यक्ति ही बैठ सकता था। कभी प्रिंस और कभी उसकी बहन यहाँ बैठकर पढ़ती थी। किताबों की कमी को पूरा करने के लिए लाइब्रेरी और दोस्तों की मदद लेनी पड़ी। घर में तंगी और बीमार रहने के बावजूद प्रिंस ने स्कूल टॉप किया। मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि



यह पूरे परिवार और समाज के लिए गर्व का पल है। प्रिंस की हिम्मत प्रेरणा देने वाली है। उन्होंने प्रिंस के परिवार को विशेष रूप से बधाई दी।

मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री इसके बाद दरियागंज के एक अनाथालाय गए और वहाँ शहनाज से मिले। शहनाज ने व्यावसायिक शिक्षा में पहला स्थान हासिल किया है। उन्होंने शहनाज के साथ-साथ अनाथालय की बाकी लड़कियों को भी बधाई दी। शहनाज ने बताया कि वह पायलट या डॉक्टर बनना चाहती है। शहनाज के जरिये दिल्ली के स्कूलों में हुए बदलाव की कहानी भी सबके सामने आई। शहनाज ने बताया कि सरकारी स्कूलों में बहुत बदलाव हुआ है। सरकारी स्कूलों में बहुत सारी सुविधाएँ मिल रही हैं। एक्वा गार्ड का पानी मिल रहा है, खाना मिल रहा है, साफ सफाई मिल रही है। दिन में चार-पांच बार झाड़ू-पोंछा लग जाता है, चेकिंग होती है। शहनाज ने कहा कि अब उसका स्कूल किसी प्राइवेट स्कूल से कम नहीं लगता।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने खुशी जताई कि शहनाज के 94.4 प्रतिशत और रोजी के 93.4 प्रतिशत मार्क्स आए। उन्होंने कहा कि यह नतीजे बताते हैं कि सरकारी स्कूलों में कैसा बदलाव आया है। पिछले कुछ सालों में सरकारी स्कूलों की दशा बेहद अच्छी हुई है। एक तरह से गरीबों और अमीरों, दोनों

को अच्छी शिक्षा मिल रही है। उन्होंने कहा कि ये बेटियाँ बड़े सपने देख रही हैं। शहनाज पायलट बनना चाहती है। रोजी साइकोलोजिस्ट बनना चाहती है। उसी तरह से यहाँ के जितने भी बच्चे हैं, सबके सपने हैं। देश का ज़िम्मेदारी इन्हीं बच्चों के कंधों पर है। इन्हे ही देश को संभालना है।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा भविष्य में सरकार इन बच्चों की पढ़ाई में पूरी तरह से मदद करने के लिए तैयार है। वैसे तो 12वीं तक शिक्षा मुफ्त है, लेकिन इसके आगे भी जो बच्चा पढ़ना चाहेगा, सरकार पूरी मदद करेगी। दस

लाख तक का शिक्षा लोन सरकार दिलाएगी, वह भी बिना किसी गारंटी के। नौकरी लगने के बाद 15 साल में आसान किस्तों में लोन चुकाया जा सकता है। अब बच्चे महँगी से महँगी पढ़ाई कर सकते हैं। माँ बाप गरीब हों तो भी बच्चों को पैसे की चिंता करने की जरूरत नहीं है। दिल्ली सरकार उनके साथ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सबको सकारात्मक ढंग से सोचना चाहिए। काम बिगड़ने वाले का नाम नहीं होता। काम अच्छा करने वालों का नाम होता है। सरकार बच्चों को अच्छी शिक्षा देने की कोशिश कर रही है। दिल्ली में माहौल बदल रहा है जिसकी ओर पूरी दुनिया की नज़र है। दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या लगातार बढ़ रही है जो कि एक मिसाल है। ■





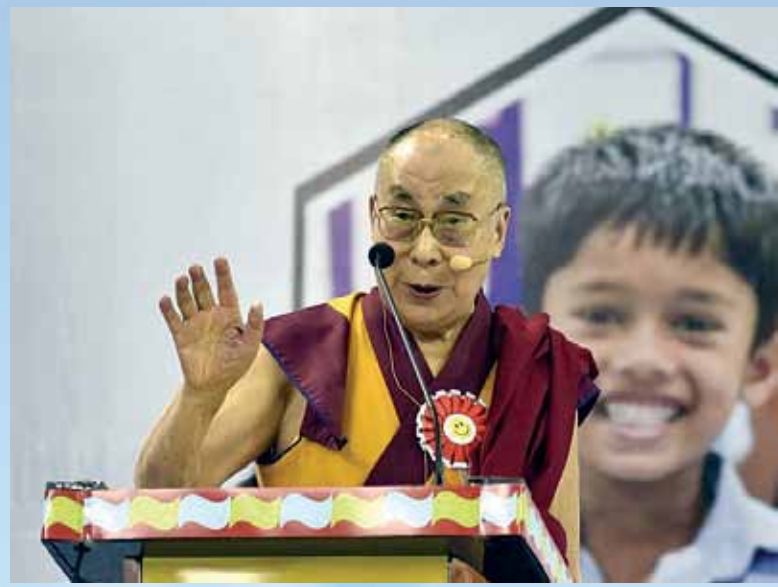
दिल्ली के स्कूलों में शुरू हुआ खुशियों का पाठ्यक्रम

दिल्ली के सरकारी स्कूल के बच्चे अब मन की दुनिया को साधने का भी उपाय सीखेंगे। 2 जुलाई को त्यागराज स्टेडियम में स्कूली बच्चों के लिए बनाए गए 'खुशी पाठ्यक्रम' का शुभारंभ किया गया। इसके तहत नर्सरी से लेकर 8वीं कक्षा तक की हर क्लास पाँच मिनट के "ध्यान" के साथ शुरू होगी। इस पाठ्यक्रम में स्कूल के छात्रों के लिए ध्यान, नैतिक मूल्य और मानसिक अभ्यास शामिल हैं। बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा की उपस्थिति में दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इस पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इसे एक ऐतिहासिक दिन बताया। उन्होंने कहा कि मैकाले ने अंग्रेजी हुकूमत को मजबूती देने के लिए जो शिक्षा नीति दी जिसमें सिर्फ क्लर्क बनाए गए। अब दिल्ली के स्कूलों में हर रोज, हर क्लास में 45 मिनट के लिए 'हैपीनेस करीकुलम' पढ़ाया जाएगा। इसमें ध्यान सिखाकर बच्चों को तनावमुक्त किया जाएगा। उन्हें देशभक्ति का पाठ पढ़ाया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि गाँधी जी कहा करते थे कि शिक्षा का मतलब है अच्छा इंसान बनाना, अच्छा नागरिक बनाना है।





एक आदमी जब शिक्षा पूरी करके निकले तो वो अपना पेट पाल सके। इतना कमा सके कि वो अपने परिवार को पाल सके। आज इन कसौटियों पर हमारी शिक्षा कमजोर पड़ जाती है। लॉर्ड मैकाले ने 150 साल पहले जो सिस्टम दिया था दुर्भाग्यवश आजादी के बाद हमने उसको वैसे ही रखा, बदला नहीं। इसकी वजह से आज की पूरी की पूरी शिक्षा व्यवस्था बच्चों को किताबें रटाने में लगी हुई है। शिक्षा का पाठ्यक्रम भी ऐसा है कि बस बच्चे को उसे रटना है। परीक्षा में उसे एक तरह से उगल के आना है। वे नहीं समझते कि शिक्षा व्यवस्था एक बच्चे को देश भक्ति से ओत-प्रोत करती है या शिक्षा व्यवस्था एक व्यक्ति को एक अच्छा नागरिक बनाती है। इतने सारे लोग इतनी सारी डिग्रियाँ लेकर आज बेरोजगार घूम रहे हैं।

‘हिज़ होलीनेस’ दलाई लामा ने दिल्ली सरकार के इस कदम की जमकर तारीफ की। दलाई लामा ने कहा कि आधुनिक शिक्षा आत्मिक शांति पर कोई बात नहीं करती। स्वस्थ शरीर के साथ शांत दिमाग भी ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि सिर्फ भारत आधुनिक शिक्षा को प्राचीन ज्ञान के साथ जोड़ सकता है। यह मानव भावनाओं को पूरा करने के लिए ज़रूरी है। यह शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए मार्ग प्रशस्त करेगा। गुस्सा, नफरत, और ईर्ष्या जैसी नकारात्मक और विध्वंसकारी भावनाओं के चलते पैदा होने वाले संकट का हल करेगा। भारत आधुनिक और प्राचीन

ज्ञान को एकजुट कर दुनिया का नेतृत्व कर सकता है और यह नकारात्मक भावनाओं से उभरने में मदद कर सकता है।

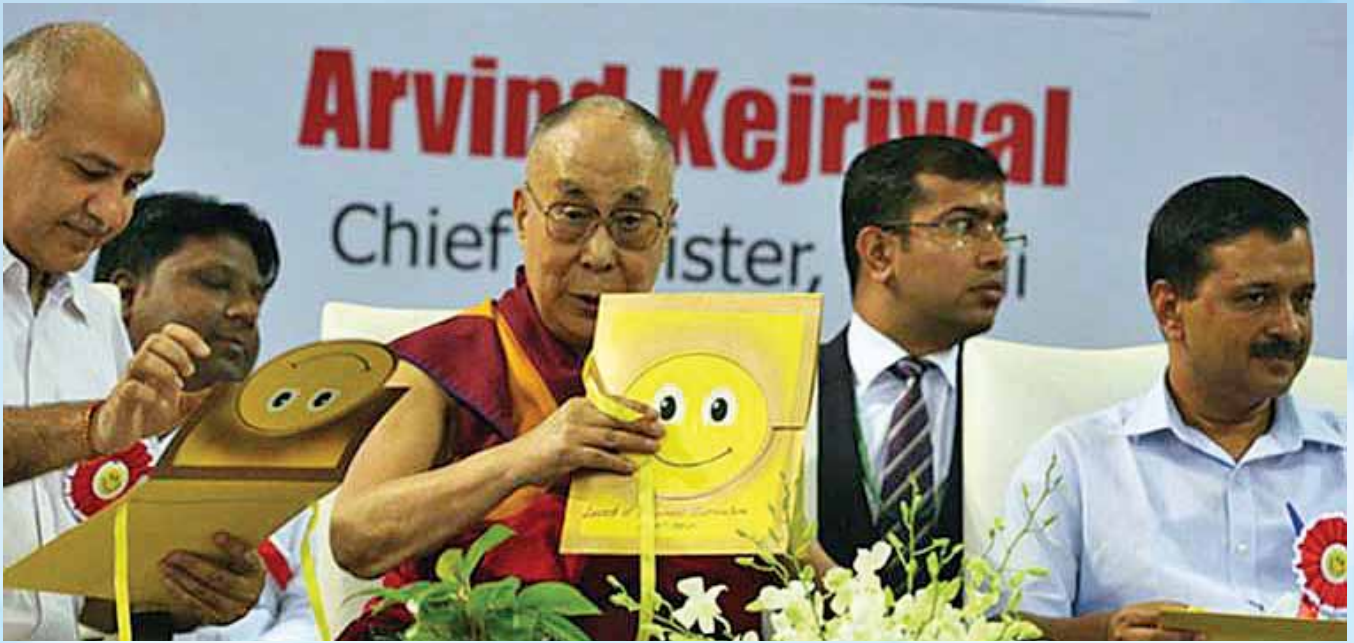
इस पाठ्यक्रम की कल्पना करने वाले दिल्ली के शिक्षा मंत्री और उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि इस मौके पर दलाई लामा की उपस्थिति से बड़ा आशीर्वाद कुछ नहीं हो सकता। शांति के लिए पूरी दुनिया उनकी ओर देखती है।

श्री सिसोदिया ने कहा कि आधुनिक शिक्षा शानदार काम कर रही है, लेकिन आधा ही काम कर रही है। शानदार इंजीनियर, डॉक्टर और प्रोफेशनल्स मिल रहे हैं। 50 साल पहले यह सोचा नहीं जा सकता था कि भारत में पढ़े इंजीनियर दिल्ली जैसे व्यस्त शहर में मेट्रो का जाल बिछा देंगे। लेकिन इस शिक्षा में ‘मानवीय मूल्यों’ की कमी है। पुराने लोग लगातार कहते हैं कि पहले समाज में वैल्यू सिस्टम था जो अब नहीं है। हमने शिक्षा क्षेत्र में बदलाव किया। स्कूल की बिल्डिंग बनी। कमरे और फर्नीचर बेहतर हुए। एक क्लास में 150 बच्चे बैठते थे तो पहला मकसद कम्फर्ट लाना था, उस समय हैपीनेस की बात नहीं कर सकते थे। दिल्ली के स्कूलों में अब माहौल बदला है, तो हम पढ़ाई के साथ-साथ शिक्षा के बुनियादी उद्देश्यों पर भी काम कर रहे हैं।



उपमुख्यमंत्री ने कहा कि जिन लोगो ने 100 साल पहले एटम, प्रोटोन, न्यूट्रॉन खोजा वो हमे इमोशनस नहीं समझा सकते। हमारे पास पाँच-छह हजार साल का इतिहास है इसे सीखने का। इस विचार के साथ 'खुशी का पाठ्यक्रम' शुरू किया जा रहा है। शिक्षा लेने के दो तरीके हैं। एक ये कि शिक्षा मिले ताकि हम खुश रहें और दूसरा ये कि हम खुश होकर शिक्षा लें। बच्चों को पढ़ने में और शिक्षकों को पढ़ाने में खुशी मिलनी चाहिए। खुशी-खुशी पढ़े और पढ़ाएँगे तो तनाव कम होगा। अच्छे नंबर मिल सकते हैं, लेकिन खुशी मिल जाए ये ज़रूरी नहीं है।

उठाते हैं, इसलिए एक शब्द दिया गया है—'माइंडफुलनेस।' माइंडफुलनेस का मतलब है साइंटिफिक मेडिटेशन। हर क्लास रोजाना 5 मिनट के मेडिटेशन से शुरू होगी और 5 मिनट के मेडिटेशन से खतम होगी। भारत के इतिहास में बहुत लोग मेडिटेशन करते थे। मेडिटेशन से, माइंडफुलनेस से बहुत एनर्जी पैदा होती थी। वो भारत को भारत बनाती है। सोचिए दिल्ली में दस लाख बच्चे एक साथ मेडिटेशन करेंगे तो एक साथ कितनी एनर्जी पैदा होगी। श्री सिसोदिया ने कहा कि यह पाठ्यक्रम पूरी तरह मौलिक है।



उन्होंने कहा कि 'हैप्पीनेस करीकुलम' शायद दुनिया का पहला प्रयोग है जहाँ हर स्कूल में रोजाना 45 मिनट की 'हैप्पीनेस क्लास' होगी। उन्होंने बताया कि इस विषय में उन्होंने हार्वर्ड के एक्सपर्ट्स से बात की तो वे भी हैरान थे कि दिल्ली के एक हजार स्कूलों में आठवीं कक्षा तक रोज़ाना हैप्पीनेस की क्लास होगी।

श्री सिसोदिया ने कहा कि दिल्ली में अगर 40 लाख बच्चे पढ़ते हैं तो उन 40 लाख बच्चों की ज़िदगी में हैप्पीनेस की रोजाना प्रेक्टिस ज़रूरी होगी। शुरुआत 10 लाख बच्चों से कर रहे हैं जो नर्सरी से 8वीं क्लास तक पढ़ते हैं। मेडिटेशन कहते ही बहुत लोग धर्म, गुरु या प्रथा का सवाल

किसी देश से उधार नहीं लिया गया है। छह महीने तक, दिन रात मेहनत करके करीब 40 शिक्षकों और एजुकेटर्स के टीम ने इस हैप्पीनेस करीकुलम को तैयार किया। आतंकवाद से लेकर प्रदूषण तक की समस्या इससे दूर होगी। ऐसी पीढ़ी पैदा होगी जिसके अंदर मानवीय मूल्य भरे होंगे।

दिल्ली सरकार के इस कदम की काफी सराहना हो रही है। खुशी पाठ्यक्रम का मकसद है बच्चों को भावनात्मक रूप से मजबूत बनाना। बच्चों को ऐसी गतिविधियों से जोड़ा जाएगा जिससे उनमें गुस्सा न पैदा हो। बच्चों को प्रेरणादायी कहानियाँ सुनाई जाएँगी। उन्हें असाइनमेंट दिए जाएँगे लेकिन कोई किताब या परीक्षा नहीं होगी। ■





गरीब बच्चों के एडमीशन पर सरकार ने दिखाई सख्ती

दिल्ली सरकार ने आर्थिक रूप से कमजोर (ई.डब्लू.एस) वर्ग के बच्चों के एडमीशन के लिए इस बार विशेष प्रयास किए। सरकार को शिकायतें मिली थीं कि कुछ निजी स्कूल, बच्चों से किताबों और वर्दी के लिए पैसे माँग रहे हैं, जिन्हें कड़ी चेतावनी दी गई।

शिक्षा निदेशालय ने अभिभावकों की शिकायत पर स्कूलों को भेजे संदेश में कहा कि "स्कूलों के इंकार को

सरकार बहुत गंभीरता से ले रही है। इसलिए स्कूलों को निर्देश दिया जाता है की वे ई.डब्लू.एस के तहत दाखिला पाने वालों को निशुल्क किताबें, वर्दी और अन्य चीजें दें। आदेश को नहीं मानने पर नियमों के तहत कड़ी कार्यवाही होगी।"

- ▶ प्रवेश के लिए बच्चों की आयु सीमा (31 मार्च तक)
- ▶ नर्सरी या प्री-स्कूल: आयु सीमा तीन से पाँच साल तक
- ▶ केजी या प्री प्राइमरी: आयु सीमा चार से छ वर्ष
- ▶ कक्षा प्रथम: आयु सीमा पाँच से सात वर्ष

दिल्ली सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के सभी स्कूलों को निर्देश दिया कि वे अपने नोटिस बोर्ड पर ई.डब्लू.एस (डीजी) श्रेणी के



तहत सीटों और दाखिलों का ब्यौरा दें। स्कूलों से कहा गया कि वे इन विवरणों के बोर्ड ऐसी जगह लगाएँ कि वे स्कूल के बहार से भी दिखाई पड़े। साथ ही सभी सूचनाएँ ऑनलाइन प्रकाशित करने का भी निर्देश दिया गया। स्कूलों से कहा गया कि हिंदी और अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में सूचनाएँ दें। इसमें ई.डब्लू.एस श्रेणी के तहत सीटों की कुल संख्या, प्राप्त आवेदनो की संख्या और किसी खास तारीख पर उपलब्ध सीटों की स्थिति शामिल हो।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार निजी स्कूलों में 25 फीसदी सीटें ई.डब्लू.एस श्रेणी के लिए आरक्षित हैं। इस साल शिक्षा निदेशालय को ई.डब्लू.एस श्रेणी की 31 हजार 653 सीटों के लिए एक लाख 13 हजार 991 ऑनलाइन आवेदन मिले थे। कम्प्यूटर के जरिये हुए ड्रा से कुल 31 हजार 269 उम्मीदवारों को उनकी पसंद के अनुसार स्कूलों का आवंटन किया गया। एडमिशन में किसी तरह की कोताही न हो, इसके लिए सरकार की ओर से औचक निरीक्षण भी कराया गया और

करीब 300 ऐसे स्कूलों की पहचान की गई जिन्होंने इस मामले में लापरवाही बरती थी।

क्या है ई.डब्लू.एस का अर्थ

ई.डब्लू.एस मुख्य रूप से आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के लिए है। ई.डब्लू.एस प्रवेश उन लोगो के लिए है जिनके परिवार की वार्षिक आय एक लाख रुपए से कम है। आवेदन करते समय उन्हें दस्तावेजो के रूप में आय-प्रमाणपत्र जमा करना अनिवार्य होता है। इस श्रेणी के तहत आवेदन करने वालों को किसी भी प्रकार के शुल्क का भुगतान नहीं करना पड़ता है।

डी.जी वर्ग मुख्य रूप से नुकसान समूह के लिए है। इस श्रेणी के अंतर्गत सभी लोग जो अक्षम, अनाथ, ट्रान्सजेंडर या अनुसूचित जाति, जनजाति, ओबीसी वर्ग से संबन्धित है, आवेदन कर सकते हैं। एससी/एसटी उम्मीदवारों के लिए 25 प्रतिशत सीट आरक्षित हैं। ■

शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के अनुसार निजी स्कूलों में 25 फीसदी सीटें ई.डब्लू.एस श्रेणी के लिए आरक्षित हैं। इस साल शिक्षा निदेशालय को ई.डब्लू.एस श्रेणी की 31 हजार 653 सीटों के लिए एक लाख 13 हजार 991 ऑनलाइन आवेदन मिले थे। कम्प्यूटर के जरिये हुए ड्रा से कुल 31 हजार 269 उम्मीदवारों को उनकी पसंद के अनुसार स्कूलों का आवंटन किया गया।

‘हार्डिंग बम केस’ के शहीदों को श्रद्धांजलि

‘हार्डिंग बम केस’ स्वतंत्रता आंदोलन का एक गौरवशाली अध्याय है। दिल्ली के इस धमाके की गूँज सात समंदर पार भी सुनाई पड़ी थी। पूरा ब्रिटिश शासन हिल उठा था। इस केस में मास्टर अमीर चंद, भाई बाल मुकुंद और मास्टर अवध बिहारी को फाँसी दे दी गई थी लेकिन दिल्ली वालों के दिलों में उनके नाम हमेशा के लिए अंकित हो गए।

हर साल इन शहीदों के स्मारक पर श्रद्धांजलि देने बड़ी तादाद में लोग पहुँचते हैं। तत्कालीन फाँसीघर की जगह यह स्मारक

बना है जो अब मौलाना आज़ाद मेडिकल कॉलेज परिसर में है। आज़ादी के तीनों दीवानों को यहीं 8 मई को फाँसी दी गई थी। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने स्मारक स्थल पहुँचकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर सरकार के कई आला अफसर और विभिन्न विभागों के कर्मचारी भी मौजूद थे।

श्री सिसोदिया ने कहा कि इन महान देशभक्तों का बलिदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। आज़ादी के ऐसे दीवानों के सर्वोच्च बलिदान की वजह से ही भारत आज़ाद हो सका।

इस मौके पर गंधर्व महाविद्यालय के छात्रों ने शहीदों की स्मृति में गीत गाए। दरअसल, 1911 में अंग्रेजों ने भारत की राजधानी को कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित कर

दिया था। 23 दिसंबर 1912 को भारत की नई राजधानी में प्रवेश करने के लिए एक शाही जुलूस निकाला गया था जिसमें तत्कालीन वायसराय “लॉर्ड हार्डिंग” बादशाही ठाठ के साथ हाथी पर सवार था। जगह-जगह भारी सुरक्षा व्यवस्था थी। शानो-शौकत देखने के लिए अपार जन

समूह एकत्रित था। जब जुलूस चौंदनी चौक से गुजर रहा था, तभी हाथी पर एक बम फेंक दिया गया जिसमें महावत की मौत हो गयी लेकिन लॉर्ड हार्डिंग बच निकले।

इस हमले से ब्रिटिश सरकार

हिल गई। उसने भीषण दमन चक्र चलाया। तमाम लोग गिरफ्तार कर लिए गए। आरोपियों के खिलाफ सत्र नयायालय में मुकदमा शुरू हुआ जो लगभग एक साल तक चला। मास्टर अमीर चंद, भाई बाल मुकुन्द और अवध बिहारी। और वसंत कुमार विश्वास को फाँसी की सजा सुनाई गयी। वसंत कुमार को 9 मई को अंबाला जेल में फाँसी दी गई जबकि लाला हनुमंत सहाय को आजीवन कारावास दिया गया था।

यह हमला अपनी तरह का सबसे सफल हमला माना गया था। तब तक ब्रिटिश शासन के सर्वोच्च प्रतीक पर इस तरह हमले की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। इस घटना ने पूरी दुनिया का ध्यान भारत की स्वतंत्रता के मुद्दे की ओर आकर्षित किया था। ■



सरकारी स्कूलों के बच्चों को अंग्रेजी का विशेष प्रशिक्षण

अंग्रेजी के विश्व्यापी महत्व को देखते हुए दिल्ली सरकार ने एक विशेष अभियान चलाया। वह नहीं चाहती कि दिल्ली के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चें अंग्रेजी में कमजोरी की वजह से मात खा जाएँ, इसलिए 'स्पोकन इंग्लिश' यानी अंग्रेजी बोलना सिखाने का विशेष कोर्स शुरू किया गया।

"स्पोकन इंग्लिश" कोर्स में दाखिला लेने के लिए 23 मई 2018 तक रजिस्ट्रेशन का अवसर दिया गया। इस कोर्स को ब्रिटिश काउंसिल, इंडिया मैकमिलन एजुकेशन, अकादमी फॉर कमप्यूटर्स ट्रेनिंग (गुजरात) और ट्रिनिटी कॉलेज, लंदन के सहयोग से शुरू किया गया। ये कोर्स फुल टाइम रेगुलर छात्रों के लिए था जिन्होंने कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा में भाग लिया और एक विषय के रूप में अंग्रेजी के साथ तीन विषयों में प्री-बोर्ड परीक्षा पास की।

जून में यह कोर्स शुरू हुआ। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट किया—"सरकारी स्कूल के छात्र ज़्यादातर आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि से आते हैं। जब मैं उनसे मिलता हूँ, तो यह उनकी सबसे बड़ी माँग होती है कि सर हमें इंग्लिश बोलना सिखवा दीजिये। मुझे बहुत खुशी है की यह कोर्स अब सरकारी स्कूल के छात्रों के लिए शुरू हो रहा है।"

आर्थिक वैश्वीकरण के इस युग में अंग्रेजी भाषा का अध्ययन आवश्यक हो गया है। अंग्रेजी भाषा विभिन्न देशों

के बीच संचार और संवाद की सबसे महत्वपूर्ण भाषा है। भारत में विभिन्न राज्यों की अपनी अपनी भाषा है लेकिन उनमें आपसी संपर्क की भाषा भी अंग्रेजी ही है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने जिन पाँच भाषाओं को आधिकारिक भाषाओं के रूप में मान्यता दी है उनमें सबसे पहला स्थान अंग्रेजी का है। इसे सीखना और बोलना आसान है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें तो पता चलता है की दुनिया का आधा हिस्सा किसी समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अधीन था। जो देश ब्रिटिश शासन के अधीन थे, अंग्रेजी वहाँ लाद दी गई। मजबूरी में ही सही, लोगों को सीखना

पड़ा। इस प्रकार आधे से ज़्यादा विश्व में अंग्रेजी का प्रचार-प्रसार हो गया और आज वह आवश्यकता बन गई है।

नतीजा यह है कि कभी विदेशी कही जाने वाली भाषा अंग्रेजी, आज भारत की

ही एक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो चली है। न सिर्फ विदेशों से संपर्क के मामले में बल्कि देश में भी संपर्क भाषा के रूप में इसका महत्व निर्विवाद है। विज्ञान और टेक्नोलॉजी जैसे विषय ही नहीं, दर्शन और सामाजिक विज्ञान का अध्ययन भी अंग्रेजी में बेहतर माना जाता है क्योंकि पाठ्य-सामग्री की उपलब्धता बढ़ जाती है।

दिल्ली सरकार ने इसी को ध्यान में रखते हुए सरकारी स्कूल के बच्चों को अंग्रेजी बोलना सिखाने की योजना शुरू की ताकि उन्हें भविष्य में मिल सकने वाले तमाम अवसरों से वंचित न रह जाना पड़े। ■





दिल्ली में अब नहीं दिया न्यूनतम वेतन तो हो सकती है 3 साल जेल

न्यूनतम वेतन (दिल्ली) संशोधन विधेयक को केंद्र से भी मिली मंजूरी

दिल्ली में न्यूनतम वेतन नहीं दिए जाने पर अब तीन साल तक की सजा के साथ 50 हजार रुपये का जुर्माना भी हो सकता है। दिल्ली सरकार ने विधानसभा में न्यूनतम वेतन (दिल्ली) संशोधन विधेयक पास किया था, जिसे अब केंद्र की मंजूरी मिल गई है।

केंद्र की मंजूरी मिलने के बाद अब न्यूनतम वेतन नहीं देने के मामले में सजा में बढ़ोतरी का कानून लागू हो गया है। सीएम अरविंद केजरीवाल ने ट्वीट कर कहा कि 'आखिरकार बिल को केंद्र की मंजूरी मिल गई। न्यूनतम वेतन नहीं देने वालों के खिलाफ अब सख्ती से निपटा जाएगा और दिल्ली सरकार कड़ी कार्रवाई करेगी।'

दिल्ली के श्रम मंत्री गोपाल राय ने कहा कि यह मजदूरों की बड़ी जीत है और दिल्ली सरकार पिछले ढाई साल

से इस बिल को पास करवाने की कोशिशों में लगी हुई थी। पहली बार जब विधानसभा में यह संशोधन विधेयक पास हुआ तो केंद्र ने वापस कर दिया। उसके बाद पिछले साल अगस्त में फिर से यह बिल पेश किया गया और आखिरकार बिल को मंजूरी मिल गई है। राय ने कहा कि अभी तक कानून कमजोर था और इसका फायदा उठाया जाता था। मजदूरों को न्यूनतम वेतन नहीं देने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई नहीं हो पाती थी लेकिन अब दिल्ली सरकार इस कानून के सहारे मजदूरों को उनका हक दिलवाएगी। जल्द ही डिपार्टमेंट की मीटिंग कर पूरा प्लान तैयार किया जाएगा। गोपाल राय ने कहा कि दिल्ली सरकार ने पिछले साल न्यूनतम मजदूरी में 37 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है लेकिन न्यूनतम मजदूरी न मिलने की शिकायतें मिलती रहती हैं। अब ऐसा करने वालों को सजा मिलेगी। ■

दिल्ली के 'बस शेल्टर' पर होंगे ट्रांसिट मैप नक्शा देखकर मिलेगी बस-रूट और नंबर की जानकारी

दिल्ली में बसों का रूट या नंबर जानने के लिए अब अजनबियों की सहायता लेने को मजबूर नहीं होना पड़ेगा। इसके बजाय बस शेल्टरों पर ट्रांसिट मैप होंगे जिन्हें देखकर यात्री अपनी सुविधा की बस का चुनाव कर सकेंगे।

यह योजना फिलहाल पायलट प्रोजेक्ट के रूप में चार बस शेल्टरों पर शुरू की गई है जिसका उद्घाटन परिवहन मंत्री कैलाश गहलौत ने दिल्ली सचिवालय बस स्टॉप पर किया। 'इंटीग्रल ट्रांसिट मैप' इस तरह से डिज़ाइन किए गए हैं कि यात्री आसानी से बस का रूट और नंबर देख पाएँ। साथ ही मेट्रो और दिल्ली के तमाम लैंडमार्क भी इसमें दिखेंगे। दिल्ली में करीब 5000 बस स्टॉप हैं जिनमें 1200 बस शेल्टर हैं।

परिवहन मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि दिल्ली सरकार सार्वजनिक परिवहन को आधुनिक और सुगम बनाने के पूरे प्रयास कर रही है ताकि यह दिल्ली की जनता और पर्यटकों की पसंद बन सके। अगले डेढ़ साल में सभी बस शेल्टरों पर ये ट्रांसिट मैप लगा दिए जाएँगे। साथ ही बसों की रियल टाइम ट्रैकिंग भी हो सकेगी और यात्री देख पाएँगे कि उनकी बस कहाँ है और कितनी देर में बस स्टॉप तक पहुँचेगी।

परिवहन मंत्री ने बताया कि न्यूयॉर्क और लंदन में ट्रांसिट मैप आम चलन में हैं और अब ये दिल्ली में भी लगेंगे। यात्रियों को अपने बस स्टॉप के चारों ओर एक किलोमीटर के इलाके की पूरी जानकारी दी जाएगी। खासतौर पर पास के मेट्रो स्टेशन और उसके प्रवेश द्वार के बारे में ताकि यात्रियों को आसानी हो। ■





दिल्ली के निजी स्कूलों ने की बढ़ी फ़ीस वापस, नौ फ़ीसदी ब्याज़ के साथ

लो गों के लिए यह अचरज की बात है, लेकिन दिल्ली में सैकड़ों स्कूलों ने बढ़ी हुई फीस वापस की। सरकार ने 575 स्कूलों को 9 फीसदी ब्याज़ के साथ बढ़ी हुई फीस लौटाने का निर्देश जारी किया था। यह बढ़ी हुई फीस, स्कूलों ने छठों वेतन आयोग लागू करने के नाम पर वसूली गई थी। शिक्षा निदेशालय ने साफ कहा था कि आदेश का पालन न करने वाले स्कूलों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

हाई कोर्ट की कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर शिक्षा निदेशालय ने यह निर्देश जारी किया था। कमेटी ने सिफारिश की थी कि स्कूल, जून 2016 से लेकर जनवरी 2018 तक ली गई बढ़ी हुई फीस 9 प्रतिशत ब्याज के साथ वापस करें। जिन स्कूलों को यह आदेश दिया गया है, उनमें कई नामी स्कूल भी शामिल हैं।

इस मामले को लेकर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल काफी गंभीर नजर आए। शिकायत मिलने पर उन्होंने खुद हस्तक्षेप किया। यहाँ तक कि जनता से संवाद के दौरान मिली शिकायतों पर भी सख्त कार्रवाई की। मॉडल टाउन के क्वीन मैरी स्कूल का ऐसा ही मामला सामने आया था। मुख्यमंत्री के जनता संवाद के दौरान कुछ अभिभावकों ने शिकायत की थी कि स्कूल ने मनमानी ढंग से फीस बढ़ा दी है। मुख्यमंत्री ने इस पर सख्त रुख अपनाया और स्कूल के खिलाफ कार्रवाई करते हुए शिक्षा विभाग ने स्कूल को नोटिस जारी करते हुए फीस बढ़ाने का फैसला तत्काल प्रभाव से वापस लेने को कहा। यह भी निर्देश दिया कि जिन अभिभावकों से बढ़ी हुई फीस वसूली गई है उन्हें वापस किया जाए, अन्यथा सरकार स्कूल के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करेगी।

शिक्षा विभाग के नोटिस के जवाब में स्कूल ने सूचित किया कि सत्र 2018-19 के लिए फीस बढ़ाने का फैसला वापस ले लिया गया है। अगर किसी से बढ़ी हुई फीस ली गई है तो उसे या तो वापस कर दिया जाएगा या फिर आगे की फीस में एडजस्ट कर दिया जाएगा।

फीस बढ़ोतरी की शिकायत करने वाले अभिभावकों में शामिल रुचि जैन ने स्कूल द्वारा फीस बढ़ोतरी का फैसला वापस लिये जाने पर बेहद खुशी जताते हुए कहा कि इससे सरकार और मुख्यमंत्री के प्रति उनका भरोसा और मजबूत हुआ है। उनके मुताबिक, उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि मुख्यमंत्री के साथ मीटिंग इतनी आसानी से हो जाएगी और वो इतनी आसानी से हम लोगों के लिए

उपलब्ध हो पाएंगे। लेकिन बहुत आराम से मुख्यमंत्री आवास पर जनता संवाद के दौरान उनसे मुलाकात हो गई।



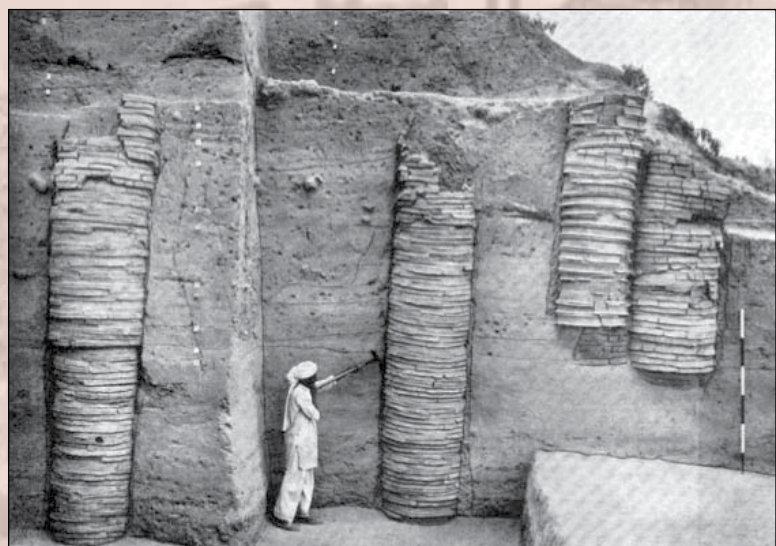
मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल रोजाना अपने आवास पर 10 से 11 बजे के बीच जनता संवाद में लोगों से बिना किसी एप्वाइंटमेंट के मिलते हैं। जनता संवाद में मनमाने तरीके से फीस बढ़ाने और ईडब्ल्यूएस कैटेगरी

के बच्चों को मुफ्त में यूनिफॉर्म, किताबें और स्टेशनरी इत्यादि न मुहैया कराने जैसी शिकायतें मिलीं थीं। इन शिकायतों के बाद मुख्यमंत्री ने शिक्षा विभाग को निर्देश दिया कि ऐसा करने वाले स्कूलों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए। ■



कुओं की मुंडेर पर बिखरा, दिल्ली का इतिहास

दिल्ली और कुओं का बरसों-बरस पुराना, इतिहास-सम्मत नाता है। इस बात का जीवंत प्रमाण पुराना किला में देखने को मिलता है। यह एक कम जानी बात है कि दिल्ली में पुराना किला के उत्खनन (2014) में आज से 23 सौ साल पहले से लेकर 3 हजार साल पहले तक प्रचलन में रहे रिंग-वेल (वलय कूप) मिला है। मिट्टी के छल्लों का 70 सेंटीमीटर व्यास



Ring Wells from Mohenjo-daro excavation picture

वाला यह कुआं मौर्य काल की विशेषता को रेखांकित करता है। ए.एस.आई के पूर्व महानिदेशक प्रो.बी.बी.लाल ने अपनी पुस्तक 'हस्तिनापुर' में रिंगवेल का उल्लेख करते हुए बताया है कि गड्ढे की खुदाई कर पक्की मिट्टी के रिंग बनाकर सेट किए जाते थे। ऐसे कुएं मौर्य काल तक प्रचलित थे।

ईंटों से बने हुए कुएँ सर्वप्रथम सिन्धु घाटी की सभ्यता (2500 से 1900 ईसा पूर्व) में केवल मोहनजोदड़ो जैसे शहरों में नहीं बल्कि कराची के समीप अलाहदिनो जैसे स्थानों पर भी देखे गए, जहाँ पर इन कुओं से निकाले हुए पानी से निचली जमीन के खेतों की सिंचाई होती थी। इसके बाद ऋग्वेद में (ईसा से 1000 साल पूर्व) एक-दूसरे प्रकार की गरारी और पहिए द्वारा पानी को ऊँचाई पर उठाने का प्रमाण मिलता है।

दिल्ली में ही तेरहवीं सदी का एक अभिलेख में, जो कि पालम गांव के एक सीढ़ीदार कुएँ से मिला है, उल्लेख

है कि दिल्ली के एक व्यक्ति ने सीढ़ीदार कुएँ का निर्माण कराया था। यह अभिलेख मुलतान जिले में उच्छ से आए उद्धार (नामक व्यापारी) द्वारा (देहली से ठीक बाहर) पालम में एक बावली और एक धर्मशाला के निर्माण की बात दर्ज करता है। बलबन के समय के पालम-बावली अभिलेख (तिथि 1272 ईस्वी, विक्रम संवत् 1333) में लिखा है कि हरियाणा पर पहले तोमरों ने तथा बाद में चौहानों ने शासन किया।

यह अभिलेख कहता है कि सबसे पहले तोमरों का हरियाणा की भूमि पर स्वामित्व था, उसके बाद चौहानों का तथा बाद में शकों का हुआ। शिलालेख की सूची से पता चलता है कि 'शक' शब्द का प्रयोग दिल्ली के पूर्व सुल्तानों मुहम्मद गोर से बलबन तक के लिए होता है।

बलबन सहित गुलाम वंश के सभी शासकों को 'शक शासक' की संज्ञा दी गई है। यहां शहर का नाम दिल्लीपुरा दिया गया है जिसका वैकल्पिक नाम योगिनीपुर भी कहा गया है। योगिनीपुर पालम बावली के अभिलेख में दिल्ली के वैकल्पिक नाम के रूप में आता है

इसमें पालम्ब गांव का भी उल्लेख है। स्पष्ट है कि यह आधुनिक पालम का नाम है। दिल्ली और योगिनीपुर, ये दोनों नाम जैन पट्टावलियों में बार-बार आते हैं।

“दिल्ली सल्तनत के संस्कृत शिलालेख”

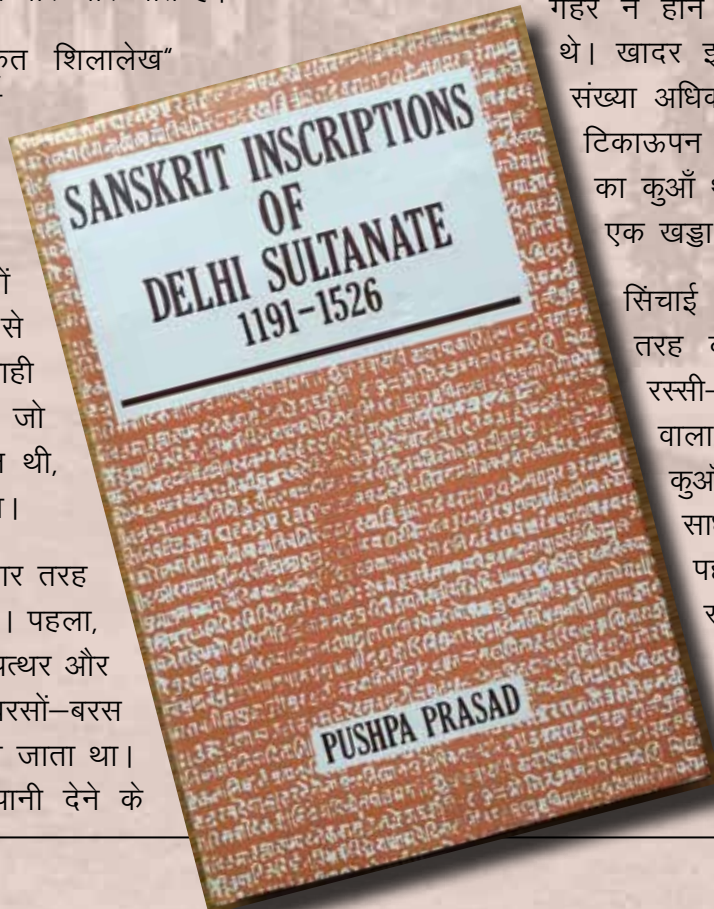
पुस्तक में पुष्पा प्रसाद लिखती हैं कि छह अभिलेख, दिल्ली के सुल्तानों के समय में दिल्ली के अंचल में धनी व्यापारियों द्वारा बनवाए कुओं (जिसमें एक बावली भी है) से संबंधित हैं। एक कुआं शाही परिवार की शहजादी आयशा, जो कि सिकंदर लोदी की बहन थी, की ओर से बनवाया गया था।

उस दौर में मुख्य रूप से चार तरह के कुओं का प्रयोग होता था। पहला, चिनाई वाला कुआँ जो ईट पत्थर और गारे से बना होता था। इसे बरसों-बरस उपयोग के हिसाब से बनाया जाता था। ऐसे कुएँ लंबे समय तक पानी देने के



काम आते थे। दूसरे, मजबूती के हिसाब से बनने वाले शुष्क चिनाई वाले कुएँ थे जो कि मुख्य रूप से पहाड़ी इलाकों में होते थे, जहाँ आस-पास चट्टान के होने के कारण कुएँ को बनाने में पत्थरों का उपयोग सस्ता पड़ता था। तीसरे, लकड़ी के कुएँ थे। ऐसे कुओं के चारों ओर बैलगाड़ी के पहिए के समान लकड़ी के नौ इंच से दो फीट लंबे घुमावदार टुकड़े लगे होते थे जो कि अधिक गहरे न होने पर भी बरसों पानी देते थे। खादर इलाके के गांवों में इनकी संख्या अधिक थी। चौथे, सिंचाई और टिकाऊपन के हिसाब से उपयोगी झार का कुआँ था जो कि जमीन में खुदा एक खड्डा भर होता था।

सिंचाई और पेयजल के लिए दो तरह के कुएँ होते थे। पहला रस्सी-और-मशक यानी चड़स वाला और दूसरा रहट वाला कुआँ। आज सिंचाई के जिस साधन को चड़स के नाम से पहचाना जाता है, वह मूल रूप से चमड़े का होता था। बैलों के बल के सहारे कुएँ से जल को पात्र (चड़स) में भरकर ऊपर उठाया

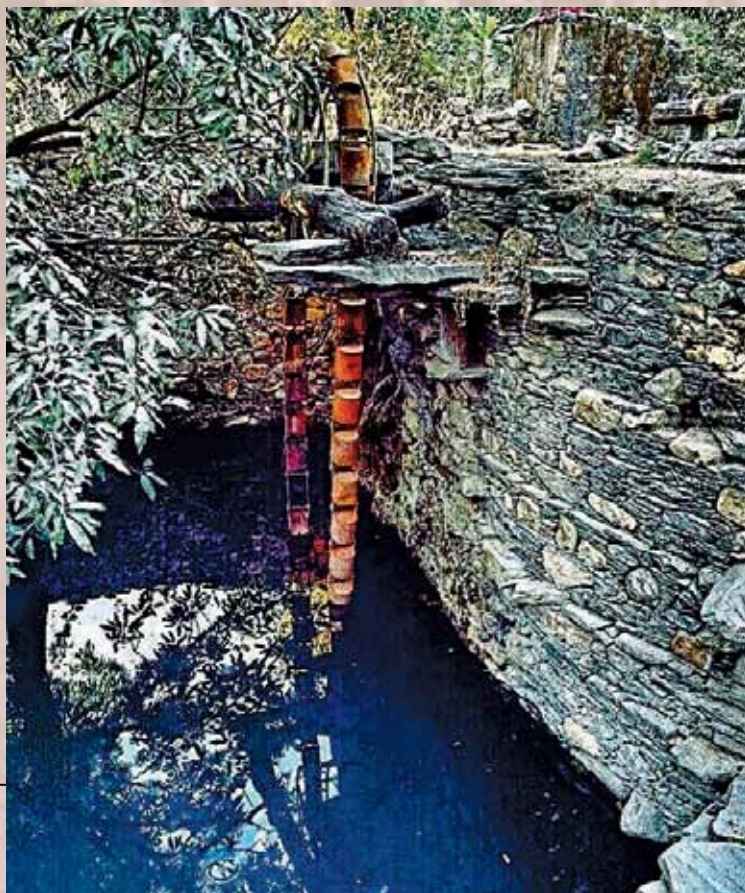




जाता और खाली कर पानी को इच्छित स्थान पर पहुंचाया जाता था। भ्रमणी (भूण) व ताकलिया (बेलनाकार चरखी) से लैस कुएँ पर ही इसे संचालित किया जाता था। जबकि रहट खेतों की सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार का गोलाकार पहिए रूपी यंत्र होता था और जिस पर मिट्टी के हाँड़ियों की माला पड़ी रहती है। इसी पहिए के घूमने से कुएँ में नीचे से हाँड़ियों में भरकर पानी ऊपर आता था।

इस प्रकार के गियर युक्त रहट के बारे में सर्वप्रथम श्रेष्ठ वर्णन बाबर (1526–30) के वक्तव्य में मिलता है। बाबर ने इसके बारे में लिखा है कि इस प्रकार के रहट पंजाब और हरियाणा के सीमावर्ती इलाकों लाहौर, दीपालपुर और सरहिन्द में सामान्य रूप से प्रयुक्त होते थे।

“मध्यकालीन दौर में प्रौद्योगिकी” में इरफान हबीब के अनुसार, भारत में सबसे पहले रहट का पंचतंत्र में (सदी 300 वर्ष) में उल्लेख मिलता है। वहाँ एक व्यक्ति को अरहट्टा चलाते हुए बताया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ है एक पहिया जिसकी तीलियों में मिट्टी के बर्तन (घट) बंधे हों। इसका प्राकृत अरहट्टा था। यह शब्द बुद्धघोष (पांचवी सदी) में मिलता है। इस प्रकार की माला का सर्वप्रथम सन्दर्भ ईसवी 532 में यशोधरम के मंदसोर के शिलालेख



में मिलता है। यहां तक कि बारहवीं सदी के अन्त में राजस्थान के एक मन्दिर के शिलालेख में एक अरहट्टा की स्वीकृति का उल्लेख है। रहट या अरहट को घटीयंत्र भी कहा जाता है। घटीमालयंत्र भी इसी का नाम है और ये नाम पंचतंत्र से लेकर छठी सदी के अभिलेख में भी हैं।

इतना ही नहीं, उर्दू के अजीम शायर मिर्जा गालिब ने भी अपने खतों में दिल्ली के पानी के हालात बयान किए हैं। 1860–61 में लिखे एक खत में गालिब कहते हैं कि अगर कुएँ गायब हो गए और ताजा पानी मोती की तरह दुर्लभ हो जाएगा तो यह शहर कर्बला की तरह एक वीराने में बदल जाएगा। 1860 तक, शहर में 1,000 कुएँ होने बात दर्ज थी, जिनमें लगभग 600 निजी स्वामित्व और 400 सार्वजनिक उपयोग में थे।

गौरतलब है कि अंग्रेजी राज में 1857 के बाद 1912 तक दिल्ली पंजाब सूबे का केवल एक जिला था और दो अन्य तहसीलें, सोनीपत और वल्लभगढ़, जो अब हरियाणा राज्य की हिस्सा है, इसमें शामिल थीं। सन् 1869 में दिल्ली म्यूनिसिपल कमेटी ने डबलिन में पानी की आपूर्ति का काम किए हुए क्रास्टवेट नामक एक अंग्रेज़ सिविल इंजीनियर से शहर में एक पेयजल आपूर्ति योजना के प्रस्ताव को स्वीकार किया। तब क्रास्टवेट ने अली मर्दन

नहर के बेकार होने के कारण पानी के लिए शहर में नए कुओं को खोदने की आवश्यकता पर जोर दिया। उसका मानना था कि नदी के किनारे पर डूब के क्षेत्र में कुएँ बनाकर पानी की नियमित आपूर्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है जहाँ साफ और शुद्ध पानी की अंतर्धारा साल के बारह मास उपलब्ध होती है।

चकबंदी के वर्षों (1872-75) में, पंजाब जिले में कुल 8841 कुएँ थे, जिनमें दिल्ली में 2,256, सोनीपत में 4797 और वल्लभगढ़ में 1,788 कुएँ थे। दिल्ली में वॉटर वर्क्स सन 1889 में बनना शुरू हुआ और 1895 में बनकर तैयार हुआ। उसके बाद शहर में नल लगाने शुरू हुए। शुरू-शुरू में नल का पानी अशुद्ध माना जाता था। पीने के काम में कुओं का पानी आता था। पुराने संस्कारों के लोग नल का पानी नहीं पीते थे।

दिल्ली के गजेटियर (1883-84) के अनुसार, "पंजाब सूबे के सभी जिलों में दिल्ली खेती के लिए सिंचाई योग्य क्षेत्र के मामले में अब्बल थी। अकाल आयोग को दिए गए आंकड़ों के हिसाब से कुल 37 सिंचाई योग्य क्षेत्रों में से 15 क्षेत्र कुओं से सिंचित होते थे जबकि चार सिंचाई योग्य



क्षेत्रों में झील पर बने बंध से और अठारह सिंचाई योग्य क्षेत्रों में नहरों के पानी से सिंचाई की जाती थी।" जबकि दिल्ली के गजेटियर (1912) के अनुसार, "दिल्ली में होने वाली कुल सिंचित क्षेत्र में 57 प्रतिशत में सिंचाई के कृत्रिम साधनों से, 19 प्रतिशत में कुओं से, 18 प्रतिशत में नहरों से, और 20 प्रतिशत में बंध से होती थी।"

"आज भी खरे हैं तालाब" में अनुपम मिश्र लिखते हैं कि दिल्ली के सन् 1930 के एक दुर्लभ नक्शे में उस समय के शहर में तालाबों और कुओं की गिनती लगभग 350 की संख्या का छूती है। उसी दौर में नल लगाने लगे थे। इसके विरोध की एक हल्की सुरीली आवाज सन् 1900 के आसपास विवाहों के अवसर पर गाई जाने वाली गारियों,—गीतों में दिखी थी। बारात जब पंगत में बैठती तो स्त्रियाँ 'फिरंगी नल मत लगवाय दियो' गीत गातीं। लेकिन नल लगते गए और जगह-जगह बने तालाब, कुएं और बावलियों के बदले अंग्रेज द्वारा नियंत्रित वाटर वर्क्स से पानी आने लगा।

(नलिन चौहान) ■





विष्णु खरे बने हिंदी अकादमी के उपाध्यक्ष

विशिष्ट हिंदी कवि, आलोचक और वरिष्ठ पत्रकार विष्णु खरे दिल्ली हिंदी अकादमी के नए उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। पिछले तीन साल से इस पद को संभाल रही वरिष्ठ साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा का कार्यकाल समाप्त हो गया है।

दिल्ली सरकार ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अध्यक्षता वाली अकादमी की 18 सदस्यीय गवर्निंग बॉडी का पुनर्गठन किया है। 22 जून को इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई।

विष्णु खरे, कई शीर्ष अखबारों और पत्रिकाओं में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभा चुके हैं। लेकिन पत्रकार से ज्यादा उनकी पहचान हिंदी के एक अनोखे कवि और विचारक के रूप में है, जिसने कविता और विचार के तमाम पूर्व निर्धारित खोंचों को तोड़ा है। विष्णु खरे, खरी-खरी बात कहने के लिए भी मशहूर हैं। कुछ साल पहले वे दिल्ली छोड़कर अपने गृहजिले छिंदवाड़ा चले गए थे। बीच में उनके मुंबई में होने की खबर थी। वे हिंदी के ऐसे लेखक हैं जो विश्व सिनेमा पर पूरे अधिकार से लिखते हैं।

9 फरवरी 1940 को छिंदवाड़ा में जन्मे विष्णु खरे ने शुरुआत में इंदौर और दिल्ली के कॉलेजों में पढ़ाया भी था, लेकिन फिर शब्दों की दुनिया में रम गए। नवभारत टाइम्स से उनका लंबा जुड़ाव रहा। वे इस अखबार के लखनऊ और जयपुर संस्करणों के संपादक भी रहे।

1960 में आया टी.एस.इलियट की कविताओं का अनुवाद 'मरु प्रदेश और अन्य कविताएँ' उनका पहला प्रकाशन था और 1970 में प्रकाशित 'एक गौर रूमानी समय में' पहला काव्य संग्रह। 'खुद अपनी आँख से', 'सबकी आवाज की परदे में', 'पिछला बाकी' और 'काल और अवधि के दरमियान' उनके अन्य संग्रह हैं।

विष्णु खरे को फ़िनलैंड के राष्ट्रीय सम्मान 'नाइट ऑफ़ दी आर्डर ऑफ़ दी वाइट रोज' से भी सम्मानित किया गया है इसके अतिरिक्त रघुवीर सहाय सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, शिखर सम्मान, हिन्दी अकादमी दिल्ली का 'साहित्यकार सम्मान', उन्हें मिल चुके हैं।

दिल्ली हिंदी अकादमी बीते कुछ वर्षों में अपनी सक्रियता के लिए पहचानी गई है। खासतौर पर मैत्रेयी पुष्पा ने उपाध्यक्ष बनने के बाद अकादमी को दिल्ली के सांस्कृतिक परिदृश्य की अनिवार्य उपस्थिति बना दिया था। अकादमी की ओर से लगातार आयोजन हुए। खासतौर पर दिल्ली के कालेजों और स्कूलों के छात्र-छात्राओं को जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया गया। साथ ही अकादमी की पत्रिका 'इंद्रप्रस्थ भारती' भी अपने नए कलेवर के साथ सामने आई जिसका साहित्य जगत में व्यापक स्वागत हुआ।

उम्मीद की जानी चाहिए कि विष्णु खरे के उपाध्यक्ष बनने से अकादमी की शकल और निखरेगी। उनकी नियुक्ति की साहित्य जगत में व्यापक सराहना हो रही है। ■

माहवारी पर जागरूकता की शुरुआत घर से हो: सिसोदिया

आज भी माहवारी को लेकर देश जागरूक नहीं हुआ है। आज भी बहुत सी महिलाएँ इसका जिक्र करते हुए भी झिझकती हैं। आज भी समाज में 'पीरियड्स' को समस्या मानकर लोग बुरी नजर से देखते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए दुनिया भर में 2014 से 28 मई को 'माहवारी दिवस' मनाया जाता है।



पीरियड्स को अपने रास्ते कि बाधा नहीं बनने दिया। यह कार्यक्रम संगठन 'सच्ची सहेली' और महिला एवं बाल कल्याण विभाग ने मिलकर किया था। सच्ची सहेली की संयोजक डॉ. सुरभि सिंह ने कहा कि इस आयोजन का मकसद पीरियड्स पर अपनी चुप्पी को तोड़ना है। यह बताना है कि "यह शर्म नहीं, गर्व का विषय है।" बाल आयोग की सदस्य रंजना प्रसाद रूप ने आयोजन को ऐतिहासिक बताया।

दिल्ली सरकार भी माहवारी को लेकर फैले अंधविश्वास को खत्म करने के लिए प्रयासरत है। इसी उद्देश्य से इस वर्ष 27 मई को राजीव चौक पर 'पीरियड महोत्सव' और 'पैड यात्रा' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने कहा कि पीरियड्स के प्रति जागरूकता की शुरुआत अपने घरों से ही करनी होगी। इससे जुड़े अंधविश्वास को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करना होगा। उन्होंने कहा कि यदि हम घर से प्रयास करते हैं, लोगो को जागरूक करते हैं तो जल्द ही यह समस्या दूर हो जाएगी।

कार्यक्रम में मौजूद दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मलिवाल ने कहा कि रानी लक्ष्मीबाई से लेकर साइना नेहवाल तक, किसी नामी-गिरामी हस्ती ने

कार्यक्रम के दौरान दर्शको और स्कूल के बच्चों से बातचीत की गई और पीरियड्स संबंधी उनकी पुरानी अवधारणाओं को तोड़ा गया। पूरे कार्यक्रम को छः भागों में बाँटा गया था, 'हेल्थ जोन' में पीरियड संबंधी सवाल के जवाब विशेषज्ञ डॉक्टर दे रहे थे। इस विषय पर तमाम खेल और अन्य प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। चित्र भी बनाए गए। नृत्य और संगीत की भी धूम मची। इसके बाद दर्शकों को शामिल करते हुए राजीव चौक (इनर सर्कल) में पैड यात्रा निकाली गई। कुल मिलाकर एक गंभीर लेकिन गोपनीय समझे जाने वाले विषय को लेकर चली आ रही हिचक को तोड़ने में कार्यक्रम ने अहम भूमिका अदा की। ■



मासिक महोत्सव

2018

‘पीरियड महोत्सव’ क्यों मनाया जाता है?

साल 2014 से 28 मई को विश्व ‘मासिक-धर्म स्वच्छता दिवस’ मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य समाज में फैली ‘मासिक-धर्म’ संबंधी गलत अवधारणा को दूर करना और महिलाओं और किशोरियों को ‘माहवारी प्रबंधन’ संबंधी सही जानकारी देना है।

एक आँकड़े के अनुसार आज भी 60 प्रतिशत किशोरियाँ मासिक-धर्म के कारण स्कूल नहीं जाती हैं। महिलाओं को आज भी इस मुद्दे पर बात करने में शर्म आती है जबकि आधे से ज्यादा को तो ये लगता है कि मासिक-धर्म कोई अपराध है। मासिक-धर्म को आज भी समाज गलत मानता है। इस दौरान महिलाओं को अशुद्ध मानते हुए उन्हें अन्य लोगों से अलग रहने को कहा जाता है। मासिक-धर्म को समाज में बुरी नजर से देखा जाता है।

भारत के ज्यादातर हिस्सों में मासिक-धर्म के दौरान महिलाओं पर लगाई जाने वाली सामाजिक पाबंदियों और अछूतों जैसे व्यवहार की वजह से, हर महीने तीन-चार दिनों का यह समय किशोरियों व महिलाओं के लिए किसी सजा से कम नहीं होता। कई परिवारों में लड़कियों को मासिक धर्म के दौरान परिवार से अलग-थलग कर दिया जाता है। मंदिर जाने या पूजा करने की मनाही होती है, रसोई में प्रवेश वर्जित होता है। यहाँ तक कि उनका बिस्तर अलग कर दिया जाता है और परिवार के किसी भी पुरुष सदस्य से इस विषय में बातचीत न करने कि हिदायत दी जाती है।

ग्रामीण इलाकों में रहने वाली महिलाओं में इसे लेकर कुछ ज्यादा ही भ्रातियाँ देखने को मिलती हैं। ‘हेल्थ राइट’ नाम से की गयी स्टडी में ये बात सामने आई थी कि अभी भी हमारे देश में 88 फीसदी महिलाएँ सेनेट्री पैड का प्रयोग नहीं करतीं। बहुत सी महिलाएँ माहवारी के दिनों में पुराने तरीके जैसे कपड़े, अखबारो या सुखी पत्तियों का प्रयोग करती हैं। ग्रामीण इलाकों में ‘सेनेट्री पैड’ के इस्तेमाल को लेकर बहुत कम जागरूकता है। इसके पीछे एक कारण ‘सेनेट्री पैड’ की लागत भी है। गरीब महिला इसका खर्च नहीं उठा सकती। कपड़ों को बार-बार प्रयोग करने से ग्रामीण इलाकों की 70 प्रतिशत महिलाएँ संक्रमण से पीड़ित हैं।

बेहतर हो कि माताएँ इस बारे में अपनी सोच बदलें और बेटियों को ठीक से समझाएँ ताकि उनकी बेटी को किसी के सामने शर्मिंदा न होना पड़े। टीवी, इन्टरनेट पर आज हर तरह की सामाग्री मौजूद है, जिसने लोगों की मासिक-धर्म के बारे में राय बदली है लेकिन अभी भी काफी लोग इस बारे में खुलकर बात नहीं करते।

बहरहाल, बदलते समय के साथ-साथ अब इस हालत में धीरे धीरे बदलाव आ रहा है। इसकी एक वजह महिलाओं का कामकाजी होना तो दूसरी वजह पारिवारिक ढाँचे का सिकुड़ना है। आज का आधुनिक समाज पुरुष तथा महिला में कोई फर्क नहीं करता। आधुनिक दौर में महिलाएँ, पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। उन्हें मासिक धर्म की वजह से अलगाव में नहीं डाला जा सकता। ■

दमकल विभाग का जागरूकता अभियान

दिल्ली के तमाम दूसरे विभागों की तरह ही फायर सर्विस (दमकल) विभाग भी जनता की सेवा में जुटा हुआ है। विभाग आग लगने के कारण होने वाली दुर्घटनाओं के असर को कम करने के लिए 24 घंटे सचेत रहता है।

मई महीने में विभाग के पास अग्निदुर्घटनाओं से जुड़ी 3492 सूचनाएँ प्राप्त हुईं। इसमें एक गंभीर और बाकी औसत दर्जे की थीं। इनसे जूझते हुए दमकल विभाग के एक कर्मचारी समेत 158 व्यक्ति घायल हुए।

विभाग ने झुग्गी-झोपड़ियों से लेकर संस्थानों और बाजारों में कुल 29 जगहों पर जागरूकता अभियान चलाया। पोस्टर और पर्चा बाँटकर लोगों को आग से बचने का उपाय बताया गया।





कविता

गौरैया दिल्ली का राज्यपक्षी है, लेकिन एक ज़माने में हर जगह दिखने वाली गौरैया अब तेज़ी से लुप्त हो रही है। बढ़ते शहरीकरण और प्रदूषण ने इसके लिए स्थितियाँ प्रतिकूल कर दी हैं। गौरैया का हमारे जीवन में महत्व रेखांकित करती एक कविता प्रस्तुत है—

गौरैया

मैं गौरैया, मैं चिरैया अँगना तेरे आऊँगी
चीँ—चीँ राग सुनाऊँगी, दाना—पानी खाऊँगी
मुँडेर पर चढ़ जाऊँगी
फुर से फिर उड़ जाऊँगी

नई उमंगे, नया सवेरा कल संग मैं लाऊँगी
नया गीत मैं गाऊँगी, गाके तुझे जगाऊँगी
कोने—कोने शोर मचाऊँगी
फुर से फिर उड़ जाऊँगी

सुंदर सुमन खिलें तेरे आँगन
रखना वातावरण शुद्ध मन—भावन
आ—आ रोज़ नहाऊँगी
फुर से फिर उड़ जाऊँगी

भोर भये तेरे चौक चहचहाऊँगी
फुदक—फुदक मानवता गान सुनाऊँगी
दाना—तिनका खाऊँगी
फुर से फिर उड़ जाऊँगी

घर में तेरे रहे हरियाली
मिले मुझे भी आश्रय डाली
घोसला एक बनाऊँगी
फिर फुर उड़कर न जाऊँगी

कुमार हृदेश ■



‘मोहल्ला क्लीनिक’ को शानदार कदम बताने वाले पूर्व यू.एन. महासचिव कोफ़ी अन्नान का निधन

संयुक्त राष्ट्र संघ के पूर्व महासचिव एवं नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कोफ़ी अन्नान का 18 अगस्त को 80 साल की उम्र में निधन हो गया। नोबेल पुरस्कार से सम्मानित कोफ़ी अन्नान दिल्ली सरकार की मोहल्ला क्लीनिक योजना के बड़े प्रशंसक थे और जनवरी 2017 में उन्होंने मुख्यमंत्री केजरीवाल को इस संबंध में पत्र भी लिखा था।

8 अप्रैल, 1938 को घाना के कुमासी में जन्मे कोफ़ी अन्नान ने संयुक्त राष्ट्र में एक एक छोटे पद से शुरुआत की थी और बढ़ते-बढ़ते महासचिव पद पर पहुँचे। वे संयुक्त राष्ट्र संघ के सातवें महासचिव चुने गए थे और इस पद पर वे दो बार रहे। भव्य शैली, शांत स्वभाव और राजनीतिक समझ के लिए जाने जाने वाले कोफ़ी अन्नान 1 जनवरी, 1997 से 31 दिसंबर, 2006 तक इस पद पर रहे। 2001 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र के साथ नोबेल शांति पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। वे पद से हटने पर एक ऐसा संयुक्त राष्ट्र छोड़ गए जो पूरी तत्परता के साथ विश्व में

शांति का माहौल बनाने और गरीबी से लड़ने के लिए लगा हुआ था।

संयुक्त राष्ट्र के मौजूदा महासचिव एंटोनियो गुतेरेस के मुताबिक— ‘कोफ़ी अन्नान अच्छाई के लिए एक मार्गदर्शक शक्ति थे। उन्होंने उस समय संयुक्त राष्ट्र की अध्यक्षता की जब 11 सितम्बर 2001 के हमलों के बाद आतंकवाद के खिलाफ विश्व एकजुट था। इसके बाद इराक के खिलाफ अमेरिकी युद्ध को लेकर बंट गया था।’

‘कोफ़ी अन्नान अच्छाई के लिए एक मार्गदर्शक शक्ति थे। उन्होंने उस समय संयुक्त राष्ट्र की अध्यक्षता की जब 11 सितम्बर 2001 के हमलों के बाद आतंकवाद के खिलाफ विश्व एकजुट था। इसके बाद इराक के खिलाफ अमेरिकी युद्ध को लेकर बंट गया था।’

उन्होंने कहा, ‘मुझे उनके निधन के बारे में पता चलने पर बड़ा दुख हुआ। कई मायनों में कोफ़ी अन्नान संयुक्त राष्ट्र थे। वह गरिमा और दृढ़ संकल्प के साथ संगठन का नेतृत्व करते हुए इसे नई सहस्राब्दी में लेकर गये।’

कोफ़ी अन्नान ने 1961 में सेंट पॉल मिन्नेसोटा में मैकैलेस्टर कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक किया। वहां से वह जेनेवा चले गए जहां उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मामलों में स्नातक अध्ययन शुरू किया और अपने यूएन कैरियर की शुरुआत की।



अन्नान ने एक नाइजीरियाई महिला तिती अलाकिजा से 1965 में विवाह किया था। उनकी एक बेटी आमा और एक पुत्र कोजो हैं। वे 1971 में अमेरिका लौटे और मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के स्लोन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट से मास्टर डिग्री हासिल की। वह 1970 के दशक में अपनी पत्नी से अलग हो गए थे और स्वीडिश वकील नाने लागेग्रेन से 1984 में उन्होंने दूसरी शादी की थी।

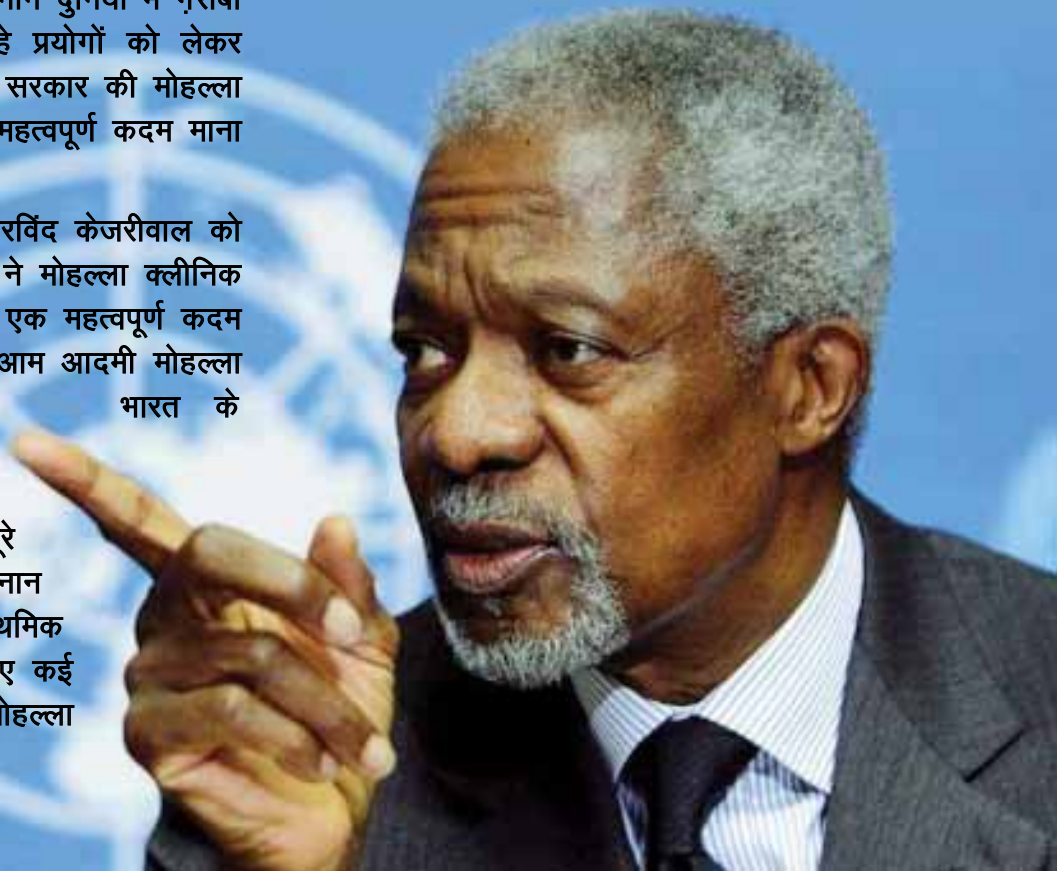
पद से हटने के बाद भी कोफी अन्नान दुनिया में गरीबी और स्वास्थ्य के मोर्चे पर हो रहे प्रयोगों को लेकर लगाकार उत्सुक रहते थे। दिल्ली सरकार की मोहल्ला क्लीनिक योजना को उन्होंने एक महत्वपूर्ण कदम माना था।

25 जनवरी 2017 को मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को लिखे अपने पत्र में कोफी अन्नान ने मोहल्ला क्लीनिक को प्राथमिक चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम बताया था। उन्होंने कहा था कि आम आदमी मोहल्ला क्लीनिक दिल्ली ही नहीं पूरे भारत के हेल्थ सिस्टम में सुधार के लिए एक बेहतर मॉडल बन सकता है। दिल्ली सरकार के इस मॉडल को पूरे देश में अपनाने की जरूरत है। अन्नान ने मोहल्ला क्लीनिक के साथ प्राथमिक चिकित्सा को बेहतर बनाने के लिए कई सुझाव भी दिए थे। उन्होंने मोहल्ला

क्लीनिक को पैसों की तंगी से जूझ रहे गरीब तबके के लिए शानदार कदम बताया था।

अन्नान ने पत्र में लिखा— 'हमें पता है दिल्ली में आपकी सरकार यूनिवर्सल हेल्थ कवरेज को अपना रही है। आपका एडमिनिस्ट्रेशन इस दिशा में एक साथ कई काम कर रहा है, जिसमें प्री प्राइमरी हेल्थ केयर के रूप में आपका मोहल्ला क्लीनिक काफी सफल साबित हो रहा है।'

कोफी अन्नान को श्रद्धांजलि। ■





ਸੀਬੀਐਸਈ 12ਵੀਂ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਪਿਛੇ ਛੱਡਿਆ

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਸਿੱਖਿਆ-ਵਿਵਸਥਾ ਦੇ ਕਾਇਆਕਲਪ ਦਾ ਅਸਰ ਹਰ ਪਾਸੇ ਦਿਸ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਰ ਵੀ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਬੋਰਡ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਨਿਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਪਿੱਛੇ ਛੱਡ ਦਿਤਾ।

26 ਮਈ 2018 ਨੂੰ ਐਲਾਨੇ ਸੀਬੀਐਸਈ 12ਵੀਂ ਦੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਨੇ ਸਾਬਿਤ ਕੀਤਾ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਪੱਧਰ ਸਾਲ ਦਰ

ਸਾਲ ਚੰਗਾ ਹੁੰਦਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸ਼ੁਕ੍ਰਿਤੀ ਗੁਪਤਾ ਨੇ 99.4 ਫੀਸਦੀ ਨੰਬਰ ਹਾਂਸਲ ਕਰਕੇ ਟਾਪ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਤੋਂ ਖੁਸ਼ ਕੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਟਵੀਟ ਕਰਕੇ ਵਿਦਿਆਰਥਣਾਂ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿੱਤੀ। ਪਿਛਲੇ ਸਾਲ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ 88.27 ਫੀਸਦੀ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਸਫਲ ਸਨ। ਉਧਰ ਇਸ ਸਾਲ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਸਫਲਤਾ ਦਾ ਆਂਕੜਾ 2.37 ਫੀਸਦੀ ਰਿਹਾ। ਕੁਲ 90.64 ਫੀਸਦੀ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਪਾਸ ਹੋਏ।

ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਦੀ ਕਮਾਨ ਸੰਭਾਲ ਰਹੇ ਉਪ ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਪਿਛਲੇ ਸਾਲ 103 ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ 100 ਫੀਸਦੀ ਰਿਜ਼ਲਟ ਦਿਤਾ ਸੀ, ਇਸ ਵਾਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ 130 ਹੈ। ਯਾਨੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸਾਰੇ ਬੱਚੇ ਪਾਸ ਹੋਏ। 546 ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ 90 ਫੀਸਦੀ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਸਫਲਤਾ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਇਸ ਦੇ ਲਈ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ, ਅਧਿਆਪਕਾਂ, ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਦੀ ਪੂਰੀ ਟੀਮ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ।

ਅਨਾਥ ਆਸ਼੍ਰਮ ਵਿਚ ਰਹਿਣ ਵਾਲੀ ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਨੇ ਵਿਵਸਾਇਕ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਚ ਪਹਿਲਾ ਸਥਾਨ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ। ਇਥੇ ਰਹਿਣ ਵਾਲੀਆਂ ਹੋਰ ਲੜਕੀਆਂ ਨੇ ਵੀ ਚੰਗੇ ਨੰਬਰਾਂ ਨਾਲ ਕਾਮਯਾਬੀ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ।

ਡੀਟੀਸੀ ਬਸ ਚਾਲਕ ਦੇ ਬੇਟੇ ਪ੍ਰਿੰਸ ਕੁਮਾਰ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ, ਸੀਬੀਐਸਈ ਦੀ 12ਵੀਂ ਦੀ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਵਿਗਿਆਨ ਸੰਕਾਏ ਵਿਚ ਪਹਿਲਾ ਸਥਾਨ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ। ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਪ੍ਰਿੰਸ ਕੁਮਾਰ ਨੂੰ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ ਅਤੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਲਈ ਬਹੁਤ ਫ਼ਖਰ ਦਾ



ਸੀਬੀਐਸਈ ਬੋਰਡ ਦੀ 12ਵੀਂ ਦੀ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਦੇ ਲਈ 11510 ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਕੁਲ 11,84,386 ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਰਜਿਸਟਰੇਸ਼ਨ ਕਰਾਇਆ ਸੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ 11 ਲੱਖ 6 ਹਜ਼ਾਰ 772 ਨੇ ਇਮਤਿਹਾਨ ਦਿਤਾ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਦੋ ਟਰਾਂਸਜੈਂਡਰ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਸਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਦੇ ਕੁਲ 4145 ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਕੇਂਦਰ ਬਣਾਏ ਗਏ ਸਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋਂ ਕੁਲ 11,06,772 ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਇਮਤਿਹਾਨ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਹੋਏ ਅਤੇ 9,18,763 ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਪਾਸ ਹੋਏ।

ਲੜਕੀਆਂ ਨੇ ਮਾਰੀ ਬਾਜ਼ੀ

ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦਾ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਰਿਹਾ। ਨੌਇਡਾ ਦੀ ਮੇਘਨਾ ਸ਼੍ਰੀਵਾਸਤਵ ਨੇ 500 ਵਿਚੋਂ 499 ਅੰਕ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਕੇ ਅਖਿਲ ਭਾਰਤੀ ਪੱਧਰ ਤੇ ਟਾਪ ਕੀਤਾ। ਟਾਪਰ ਸੂਚੀ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਵਿਚ ਤਿੰਨ ਲੜਕੀਆਂ ਦੇ ਨਾਮ ਹਨ। ਨਾਲ ਹੀ, ਦਰਿਆਜਗੰਜ ਦੇ

ਮੋਕਾ ਹੈ। ਪ੍ਰਿੰਸ ਕੁਮਾਰ ਨੇ 97 ਫੀਸਦੀ ਅੰਕ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕੀਤੇ। ਉਸ ਨੂੰ ਗਣਿਤ ਵਿਚੋਂ 100 ਵਿਚੋਂ 100 ਨੰਬਰ ਮਿਲੇ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਵਾਣਿਜ ਸੰਕਾਏ ਵਿਚ ਟਾਪ ਆਉਣ ਵਾਲੀ ਪ੍ਰਾਚੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਅਤੇ ਕਲਾ ਸੰਕਾਏ ਵਿਚ ਉਚ ਸਥਾਨ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਵਾਲੀ ਚਿਤਰਾ ਕੋਸ਼ਿਕ ਨੂੰ ਵੀ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ।

ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਪਿਛੇ ਛੱਡਿਆ

ਲਗਾਤਾਰ ਦੂਜੇ ਸਾਲ ਸੀਬੀਐਸਈ ਦੇ 12ਵੀਂ ਦੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਪਿਛੇ ਛੱਡ ਦਿਤਾ। ਇਸ ਸਾਲ ਦੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ ਜਿਥੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ 79.29 ਫੀਸਦੀ ਬੱਚੇ ਪਾਸ ਹੋਏ ਉਧਰ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਪਾਸ ਫੀਸਦੀ 88.27 ਫੀਸਦੀ ਰਿਹਾ। ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਪਾਸ ਫੀਸਦੀ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ,



ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲਾਂ ਤੋਂ 9 ਫੀਸਦੀ ਅੱਗੇ ਰਹੇ। ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਚੰਗੇ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਦੇ ਲਈ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੂੰ ਹਰ ਪਾਸੇ ਤੋਂ ਵਧਾਈਆਂ ਮਿਲੀਆਂ।

ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ

ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਦੇ ਕੋਲ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਇਲਾਵਾ ਵੀ ਕਈ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਵਿਭਾਗ ਹਨ, ਲੇਕਿਨ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਪਹਿਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਬਾਹਰਵੀਂ ਦੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ 2 ਸਾਲਾਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਦੇ ਨਤੀਜੇ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਦੇਖਿਆ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਦਰਅਸਲ, ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਪੱਧਰ ਵਧਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਕਈ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕਦਮ ਚੁਕੇ ਗਏ—

ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਨਾ ਕੇਵਲ ਸਿੱਖਿਆ ਬਜਟ ਵਧਾਇਆ ਗਿਆ, ਬਲਕਿ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਜਮ ਕੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਅਚਾਨਕ ਜਾਇਜ਼ਾ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਨਾਲ ਮਾਹੌਲ ਬਦਲਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ। ਸਰਪ੍ਰਸਤਾਂ ਦੀ ਭਾਗੀਦਾਰੀ ਸਕੂਲ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਵਿਚ ਵਧਾਈ ਗਈ। ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਦੀ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਨੂੰ ਗੰਭੀਰਤਾ ਨਾਲ ਲਿਆ ਗਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਿਦੇਸ਼ ਭੇਜ ਕੇ ਟਰੇਨਿੰਗ ਦਿਵਾਈ ਗਈ। ਪ੍ਰਭਾਵੀ ਪ੍ਰਿੰਸੀਪਲਾਂ ਦਾ ਕਮਜ਼ੋਰ ਸਮਝੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਬਦਲੀ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਛੁੱਟੀਆਂ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਕਮਜ਼ੋਰ ਸਮਝੇ

ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਅਲਗ ਨਾਲ ਪੜ੍ਹਾਈ ਦਾ ਪ੍ਰਬੰਧ ਕੀਤਾ। ਬੋਰਡ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਐਗਜ਼ਾਮ ਟਿਪਸ ਦਿਤੇ ਗਏ ਅਤੇ 'ਮੋਟੀਵੇਸ਼ਨਲ ਟਾਕਸ' ਕਰਾਈ ਗਈ ਤਾਂ ਕਿ ਉਹ ਪ੍ਰੇਰਿਤ ਹੋ ਸਕਣ।

ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਕਮਜ਼ੋਰ ਬੱਚਿਆਂ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਕਿਹਾ ਗਿਆ। ਵਿਅਕਤੀਗਤ ਜਿੰਮੇ ਦਾਰੀਆਂ ਲਈਆਂ ਗਈਆਂ। ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਵਿਚ ਅਡੀਸ਼ਨਲ ਡਾਇਰੈਕਟਰ ਸੁਨੀਤਾ ਕੋਸ਼ਿਕ ਨੇ ਸੁਲਤਾਨਪੁਰੀ ਦੇ ਸਰਵੋਦਯ ਕੰਨਿਆ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਗੋਦ ਲਿਆ ਸੀ। ਪਿਛਲੇ ਸਾਲ ਇਸ ਸਕੂਲ ਦੇ ਕਰੀਬ 40 ਫੀਸਦੀ ਬੱਚੇ ਹੀ ਪਾਸ ਹੋਏ ਸਨ। ਜਦ ਕਿ ਇਸ ਸਾਲ ਕਰੀਬ 80 ਫੀਸਦੀ ਬੱਚੇ ਪਾਸ ਹੋਏ।

ਹੁਣ ਇਹ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਮੰਨਣ ਲਗੀ ਹੈ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਚੰਗੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਸਕੂਲਾਂ ਦਾ ਬੁਨਿਆਦੀ ਢਾਂਚਾ ਚੰਗਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਅਧਿਆਪਕ-ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਅਨੁਪਾਤ ਚੰਗਾ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਸਾਫ-ਸਫਾਈ ਤੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਧਿਆਨ ਹੈ। ਕਮਰਿਆਂ ਦਾ ਫਰਨੀਚਰ ਅਤੇ ਦੀਵਾਰਾਂ ਦਾ ਰੰਗ ਵੀ ਬਦਲਿਆ ਹੈ। ਮਾਹੌਲ ਸਕਾਰਾਤਮਕ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਤਾਂ ਬੱਚਿਆਂ ਦਾ ਪੜ੍ਹਨ ਵਿਚ ਵੀ ਮਨ ਲਗਾ ਹੈ। ਬੋਰਡ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਦੇ ਨਤੀਜਿਆਂ ਵਿਚ ਇਸ ਦਾ ਅਸਰ ਸਾਫ ਨਜ਼ਰ ਆਇਆ। ■



ਟਾਪਰਸ ਦੇ ਘਰ ਜਾ ਕੇ ਮਿਲੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ, ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਮਿਹਨਤ ਦੀ ਕੀਤੀ ਸ਼ਲਾਘਾ

ਪ੍ਰਤਿਭਾਸ਼ਾਲੀ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਰਾਹ ਵਿਚ ਗਰੀਬੀ ਰੁਕਾਵਟ ਨਹੀਂ ਬਣੇਗੀ - ਕੇਜਰੀਵਾਲ



ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਅਤੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੌਦਿਆ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਘਰ ਗਏ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇੰਟਰਮੀਡੀਏਟ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਪ੍ਰਦਰਸ਼ਨ ਕੀਤਾ। ਮੇਰਿਟ ਲਿਸਟ ਵਿਚ ਨਾਮ ਦਰਜ ਕਰਾਉਣ ਵਾਲੇ ਭਾਰਤੀ ਰਾਘਵ, ਪ੍ਰਿੰਸ ਕੁਮਾਰ, ਪ੍ਰਾਚੀ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ ਅਤੇ ਚਿਤਰਾ ਕੌਸ਼ਿਕ ਦੇ ਲਈ 29 ਮਈ 2018 ਦੀ ਮਿਤੀ ਯਾਦਗਾਰ ਬਣ ਗਈ ਜਦ ਦੋਵੇਂ ਨੇਤਾ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਮਿਲਣ ਘਰ ਪਹੁੰਚੇ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਅਤੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੌਦਿਆ ਪਾਲਮ ਸਥਿਤ ਰਾਜਨਗਰ ਵਿਚ ਪ੍ਰਿੰਸ ਕੁਮਾਰ ਦੇ ਘਰ ਵਧਾਈ

ਦੇਣ ਪਹੁੰਚੇ ਤਾਂ ਉਸ ਦੀ ਖੁਸ਼ੀ ਦਾ ਟਿਕਾਣਾ ਨਹੀਂ ਰਿਹਾ। ਪ੍ਰਿੰਸ ਦੇ ਸਕੂਲ ਦੇ ਅਧਿਆਪਕ ਵੀ ਉਥੇ ਮੌਜੂਦ ਸਨ। ਦੋਵੇਂ ਨੇਤਾਵਾਂ ਨੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ। ਪ੍ਰਿੰਸ ਜਿਸ ਕਿਰਾਏ ਦੇ ਘਰ ਵਿਚ ਰਹਿੰਦਾ ਹੈ, ਉਥੇ ਸਿਰਫ਼ ਇਕ ਕਮਰਾ ਹੈ। ਪਿਤਾ ਨੇ ਘਰ ਦੇ ਬਾਥਰੂਮ ਨੂੰ ਉਸ ਦੇ ਪੜ੍ਹਨ ਦੀ ਜਗ੍ਹਾ ਵਿਚ ਤਬਦੀਲ ਕਰਾਇਆ ਸੀ। ਇਸ ਛੋਟੀ ਜਿਹੀ ਜਗ੍ਹਾ ਵਿਚ ਇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਹੀ ਬੈਠ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਕਦੇ ਪ੍ਰਿੰਸ ਅਤੇ ਕਦੇ ਉਸ ਦੀ ਭੈਣ ਇਥੇ ਬੈਠ ਕੇ ਪੜ੍ਹਦੀ ਸੀ। ਕਿਤਾਬਾਂ ਦੀ ਕਮੀ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਲਾਈਬਰੇਰੀ ਅਤੇ ਦੋਸਤਾਂ ਦੀ ਮਦਦ ਲੈਣੀ ਪਈ। ਘਰ ਵਿਚ ਤੰਗੀ ਅਤੇ ਬੀਮਾਰ ਰਹਿਣ ਦੇ ਬਾਵਜੂਦ ਪ੍ਰਿੰਸ ਨੇ ਸਕੂਲ ਟਾਪ



ਬੇਟੀਆਂ ਵੱਡੇ ਸੁਫ਼ਨੇ ਦੇਖ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਸ਼ਾਹਨਾਜ਼ ਪਾਇਲੈਟ ਬਣਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਰੋਜ਼ੀ ਸਾਈਕੋਲੋਜਿਸਟ ਬਣਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਇਥੋਂ ਦੇ ਜਿੰਨੇ ਵੀ ਬੱਚੇ ਹਨ, ਸਭ ਦੇ ਸੁਫ਼ਨੇ ਹਨ। ਦੇਸ਼ ਦੀ ਜਿੰਮੇਵਾਰੀ ਇਨ੍ਹਾਂ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਮੋਢਿਆਂ ਤੇ ਹੈ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਹੀ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਸੰਭਾਲਣਾ ਹੈ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਭਵਿੱਖ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰ ਇਨ੍ਹਾਂ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਿਚ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਮਦਦ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਤਿਆਰ ਹੈ। ਵੈਸੇ ਤਾਂ 12ਵੀਂ ਤਕ ਸਿੱਖਿਆ ਮੁਫ਼ਤ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਇਸ ਦੇ ਅੱਗੇ ਵੀ ਜੋ ਬੱਚਾ ਪੜ੍ਹਨਾ ਚਾਹੇ ਗਾ, ਸਰਕਾਰ ਪੂਰੀ ਮਦਦ ਕਰੇਗੀ। ਦਸ ਲੱਖ ਤਕ ਦਾ ਸਿੱਖਿਆ ਲੋਨ ਸਰਕਾਰ

ਦਿਵਾਏਗੀ, ਉਹ ਵੀ ਬਿਨਾ ਕਿਸੇ ਗਾਰੰਟੀ ਦੇ। ਨੌਕਰੀ ਲਗਣ ਦੇ ਬਾਅਦ 15 ਸਾਲ ਵਿਚ ਅਸਾਨ ਕਿਸ਼ਤਾਂ ਵਿਚ ਲੋਨ ਚੁਕਾਇਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਬੱਚੇ ਮਹਿੰਗੀ ਤੋਂ ਮਹਿੰਗੀ ਪੜ੍ਹਾਈ ਕਰ ਸਕਦੇ ਹਨ। ਮਾਂ ਪਿਉ ਗਰੀਬ ਹੋਣ ਤਾਂ ਵੀ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੈਸੇ ਦੀ ਚਿੰਤਾ ਕਰਨ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੈ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਭ ਨੂੰ ਸਕਾਰਤਮਕ ਢੰਗ ਨਾਲ ਸੋਚਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ। ਕੰਮ ਵਿਗਾੜਣ ਵਾਲੇ ਦਾ ਨਾਮ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦਾ। ਚੰਗੇ ਕੰਮ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਦਾ ਨਾਮ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਸਰਕਾਰ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਮਾਹੌਲ ਬਦਲ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਜਿਸ ਦੇ ਵਲ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਲਗਾਤਾਰ ਵਧ ਰਹੀ ਹੈ ਜੋ ਕਿ ਇਕ ਮਿਸਾਲ ਹੈ। ■

ਕੀਤਾ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਪੂਰੇ ਪਰਿਵਾਰ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਦੇ ਲਈ ਫ਼ਖਰ ਦਾ ਪਲ ਹੈ। ਪ੍ਰਿੰਸ ਦੀ ਹਿੰਮਤ ਪ੍ਰੇਰਨਾ ਦੇਣ ਵਾਲੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਪ੍ਰਿੰਸ ਦੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਰੂਪ ਨਾਲ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਇਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਦਰਿਆਰਜੀ ਦੇ ਇਕ ਅਨਾਥਆਸ਼੍ਰਮ ਗਏ ਅਤੇ ਉਥੇ ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਨਾਲ ਮਿਲੇ। ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਨੇ ਵਿਵਸਾਇਕ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਚ ਪਹਿਲਾ ਸਥਾਨ ਹਾਸਲ ਕੀਤਾ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਅਨਾਥਆਸ਼੍ਰਮ ਦੀਆਂ ਬਾਕੀ ਲੜਕੀਆਂ ਨੂੰ ਵੀ ਵਧਾਈ ਦਿਤੀ। ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਉਹ ਪਾਈਲੈਟ ਜਾਂ ਡਾਕਟਰ ਬਣਨਾ ਚਾਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਦੇ ਜਰੀਏ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਹੋਏ ਬਦਲਾਅ ਦੀ ਕਹਾਣੀ ਵੀ ਸਭ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਆਈ। ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਬਦਲਾਅ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਸਹੂਲਤਾਂ ਮਿਲ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਅਕਵਾ ਗਾਰਡ ਦਾ ਪਾਣੀ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਖਾਣਾ ਮਿਲ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਸਾਫ਼ ਸਫ਼ਾਈ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਦਿਨ ਵਿਚ ਚਾਰ-ਪੰਜ ਵਾਰ ਝਾੜੂ ਪੋਚਾ ਲਗ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਚੈਕਿੰਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਹੁਣ ਉਸ ਦਾ ਸਕੂਲ ਕਿਸੇ ਪ੍ਰਾਈਵੇਟ ਸਕੂਲ ਤੋਂ ਘਟ ਨਹੀਂ ਲਗਦਾ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਖੁਸ਼ੀ ਜਤਾਈ ਕਿ ਸ਼ਹਨਾਜ਼ ਦੇ 94.4 ਫੀਸਦੀ ਅਤੇ ਰੋਜ਼ੀ ਦੇ 93.4 ਫੀਸਦੀ ਨੰਬਰ ਆਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਨਤੀਜੇ ਦੱਸਦੇ ਹਨ ਕਿ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਕਿਵੇਂ ਬਦਲਾਅ ਆਇਆ ਹੈ। ਪਿਛਲੇ ਕੁਝ ਸਾਲਾਂ ਵਿਚ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੀ ਹਾਲਤ ਬੇਹਦ ਚੰਗੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਇਕ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਗਰੀਬਾਂ ਅਤੇ ਅਮੀਰਾਂ, ਦੋਵਾਂ ਨੂੰ ਚੰਗੀ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲ ਰਹੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ





ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਖੁਸ਼ੀਆਂ ਦਾ ਪਾਠਕ੍ਰਮ

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਦੇ ਬੱਚੇ ਹੁਣ ਮਨ ਦੀ ਦੁਨੀਆਂ ਨੂੰ ਸਾਧਣ ਦਾ ਵੀ ਉਪਾਅ ਸਿਖਣਗੇ। 2 ਜੁਲਾਈ ਨੂੰ ਤਿਆਗਰਾਜ ਸਟੇਡੀਅਮ ਵਿਚ ਸਕੂਲੀ ਬੱਚਿਆਂ ਦੇ ਲਈ ਬਣਾਏ ਗਏ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਦਾ ਸ਼ੁਭਆਰੰਭ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਦੇ ਤਹਿਤ ਨਰਸਰੀ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ 8ਵੀਂ ਕਲਾਸ ਤਕ ਦੀ ਹਰ ਕਲਾਸ ਪੰਜ ਮਿੰਟ ਦੇ ‘‘ਧਿਆਨ’’ ਦੇ ਨਾਲ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਵੇਗੀ। ਇਸ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਵਿਚ ਸਕੂਲ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਧਿਆਨ, ਨੈਤਿਕ ਮੁਲ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਅਭਿਆਸ ਸ਼ਾਮਲ ਹਨ। ਬੋਧ ਧਰਮ ਗੁਰੂ ਦਲਾਈ ਲਾਮਾ ਦੀ ਮੌਜੂਦਗੀ ਵਿਚ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਇਸ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਦਾ ਸ਼ੁਭਆਰੰਭ ਕੀਤਾ।

ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਇਕ ਇਤਿਹਾਸਕ ਦਿਨ ਦੱਸਿਆ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮੈਕਾਲੇ ਨੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਹਕੂਮਤ ਨੂੰ ਮਜ਼ਬੂਤੀ ਦੇਣ ਦੇ ਲਈ ਜੋ ਸਿੱਖਿਆ ਨੀਤੀ ਦਿਤੀ ਜਿਸ ਵਿਚ ਸਿਰਫ ਕਲਰਕ ਬਣਾਏ ਗਏ। ਹੁਣ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਹਰ ਰੋਜ਼, ਹਰ ਕਲਾਸ ਵਿਚ 45 ਮਿੰਟ ਦੇ ਲਈ ‘ਹੈਪੀਨੇਸ ਕਰੀਕੁਲਮ’ ਪੜ੍ਹਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਇਸ ਵਿਚ ਧਿਆਨ ਸਿਖਾ ਕੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਤਣਾਅਮੁਕਤ ਕੀਤਾ ਜਾਵੇਗਾ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਦਾ ਪਾਠ ਪੜ੍ਹਾਇਆ ਜਾਵੇਗਾ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਗਾਂਧੀ ਜੀ ਕਿਹਾ ਕਰਦੇ ਸਨ ਕਿ ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਚੰਗਾ ਇਨਸਾਨ ਬਣਾਉਣਾ, ਚੰਗਾ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣਾਉਣਾ ਹੈ।





ਇਕ ਆਦਮੀ ਜਦ ਸਿੱਖਿਆ ਪੂਰੀ ਕਰਕੇ ਨਿਕਲੇ ਤਾਂ ਉਹ ਆਪਣਾ ਪੇਟ ਪਾਲ ਸਕੇ। ਕਮਾ ਸਕੇ ਕਿ ਉਹ ਆਪਣੇ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਪਾਲ ਸਕੇ। ਅੱਜ ਇਨ੍ਹਾਂ ਕਸੋਟੀਆਂ ਤੇ ਸਾਡੀ ਸਿੱਖਿਆ ਕਮਜ਼ੋਰ ਪੈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਲਾਰਡ ਮੈਕਾਲੇ ਨੇ 150 ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਜੋ ਸਿਸਟਮ ਦਿਤਾ ਸੀ ਬਦਕਿਸਮਤੀ ਨਾਲ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਬਾਅਦ ਅਸੀਂ ਉਸ ਨੂੰ ਵੈਸੇ ਹੀ ਰੱਖਿਆ, ਬਦਲਿਆ ਨਹੀਂ। ਇਸ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਅੱਜ ਦੀ ਪੂਰੀ ਦੀ ਪੂਰੀ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਕਿਤਾਬਾਂ ਰਟਾਉਣ ਵਿਚ ਲਗੀ ਹੋਈ ਹੈ। ਸਿੱਖਿਆ ਦਾ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਹੀ ਐਸਾ ਹੈ ਕਿ ਬਸ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਉਸ ਨੂੰ ਰਟਨਾ ਹੈ। ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਉਸੇ ਤਰ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਉਗਲ ਕੇ ਆਉਣਾ ਹੈ। ਉਹ ਇਹ ਨਹੀਂ ਸਮਝਦੇ ਕਿ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਇਕ ਬੱਚੇ ਨੂੰ ਦੇਸ਼ ਭਗਤੀ ਨਾਲ ਓਤ-ਪ੍ਰੋਤ ਕਰਦੀ ਹੈ ਜਾਂ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਵਸਥਾ ਇਕ ਵਿਅਕਤੀ ਨੂੰ ਇਕ ਚੰਗਾ ਨਾਗਰਿਕ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਇਨ੍ਹੇ ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਇੰਨੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਡਿਗਰੀਆਂ ਲੈ ਕੇ ਅੱਜ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰ ਘੁੰਮ ਰਹੇ ਹਨ।

‘ਹਿਜ਼ ਹੋਲੀਨੇਸ’ ਦਲਾਈ ਲਾਮਾ ਨੇ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਇਸ ਕਦਮ ਦੀ ਜ਼ੋਰ ਕੇ ਤਾਰੀਫ਼ ਕੀਤੀ। ਦਲਾਈ ਲਾਮਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਆਤਮਿਕ ਸ਼ਾਂਤੀ ਤੇ ਕੋਈ ਗਲ ਨਹੀਂ ਕਰਦੀ। ਸਿਹਤਮੰਦ ਸਰੀਰ ਦੇ ਨਾਲ ਸ਼ਾਂਤ ਦਿਮਾਗ ਵੀ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਸਿਰਫ਼ ਭਾਰਤ ਆਧੁਨਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਨੂੰ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਗਿਆਨ ਦੇ ਨਾਲ ਜੋੜ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਇਹ ਮਨੁੱਖੀ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਨੂੰ ਪੂਰਾ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੈ। ਇਹ ਸਰੀਰਿਕ ਅਤੇ ਮਾਨਸਿਕ ਕਲਿਆਣ ਦੇ ਲਈ ਰਸਤਾ ਦਿਖਾਏਗਾ। ਗੁਸਾ, ਨਫਰਤ, ਅਤੇ ਈਰਖਾ ਜਿਹੀਆਂ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਅਤੇ ਵਿਨਾਸ਼ਕਾਰੀ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਦੇ ਚਲਦੇ ਪੈਣਾ ਹੋਣ ਵਾਲੇ ਸੰਕਟ ਦਾ ਹਲ ਕਰੇਗਾ। ਯਤ ਆਧੁਨਿਕ

ਅਤੇ ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਗਿਆਨ ਨੂੰ ਇਕਜੁਟ ਕਰਕੇ ਦੁਨੀਆਂ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਨਕਾਰਾਤਮਕ ਭਾਵਨਾਵਾਂ ਤੋਂ ਉਭਾਰਨ ਵਿਚ ਮਦਦ ਕਰ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਇਸ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਦੀ ਕਲਪਨਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਿੱਖਿਆ ਮੰਤਰੀ ਅਤੇ ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਦਲਾਈ ਲਾਮਾ ਦੀ ਮੌਜੂਦਗੀ ਤੋਂ ਵੱਡਾ ਕੋਈ ਆਸ਼ੀਰਵਾਦ ਨਹੀਂ ਹੋ ਸਕਦਾ। ਸ਼ਾਂਤੀ ਦੇ ਲਈ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਲ ਦੇਖਦੀ ਹੈ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਆਧੁਨਿਕ ਸਿੱਖਿਆ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਅੱਧਾ ਹੀ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ। ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਇੰਜੀਨੀਅਰ, ਡਾਕਟਰ ਅਤੇ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰਨਲਸ ਮਿਲ ਰਹੇ ਹਨ। 50 ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਇਹ ਸੋਚਿਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ ਸੀ ਕਿ ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹੇ ਇੰਜੀਨੀਅਰ ਦਿੱਲੀ ਜਿਹੇ ਬਿਜ਼ੀ ਸ਼ਹਿਰ ਵਿਚ ਮੈਟਰੋ ਦਾ ਜਾਲ ਵਿਛਾ ਦੇਣਗੇ। ਲੇਕਿਨ ਇਸ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਚ ‘ਮਾਨਵੀ ਮੁੱਲ’ ਦੀ ਕਮੀ ਹੈ। ਪੁਰਾਣੇ ਲੋਕ ਲਗਾਤਾਰ ਕਹਿੰਦੇ ਹਨ ਕਿ ਪਹਿਲੇ ਸਮਾਜ ਵਿਚ ਵੈਲਯੂ ਸਿਸਟਮ ਸੀ ਜੋ ਹੁਣ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਸਿੱਖਿਆ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਬਦਲਾਅ ਕੀਤਾ। ਸਕੂਲ ਦੀ ਬਿਲਡਿੰਗ ਬਣੀ। ਕਮਰੇ ਅਤੇ ਫਰਨੀਚਰ ਬੇਹਤਰ ਹੋਏ। ਇਕ ਕਲਾਸ ਵਿਚ 150 ਬੱਚੇ ਬੈਠਦੇ ਸਨ ਤਾਂ ਪਹਿਲਾ ਮਕਸਦ ਅਰਾਮਦਾਇਕੀ ਲਿਆਉਣਾ ਸੀ, ਉਸ ਸਮੇਂ ਅਸੀਂ ਹੈਪੀਨਸ ਦੀ ਗਲ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦੇ ਸੀ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਹੁਣ ਮਾਹੌਲ ਬਦਲਿਆ ਹੈ, ਤਾਂ ਅਸੀਂ ਪੜ੍ਹਾਈ ਵਿਚ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਿੱਖਿਆ ਦੇ ਬੁਨਿਆਦੀ ਉਦੇਸ਼ਾਂ ਤੇ ਵੀ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।





ਉਪਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਲੋਕਾਂ ਨੇ 100 ਸਾਲ ਪਹਿਲਾਂ ਐਟਮ, ਪ੍ਰੋਟੋਨ, ਨਯੂਟ੍ਰਾਨ ਲੱਭਿਆ ਉਹ ਸਾਡੇ ਇਮੋਸ਼ਨਸ ਨਹੀਂ ਸਮਝ ਸਕਦੇ। ਸਾਡੇ ਕੋਲ ਪੰਜ-ਛੇ ਹਜ਼ਾਰ ਸਾਲ ਦਾ ਇਤਿਹਾਸ ਹੈ ਇਸ ਨੂੰ ਸਿੱਖਣ ਦਾ। ਇਸ ਵਿਚਾਰ ਦੇ ਨਾਲ ਖੁਸ਼ੀ 'ਖੁਸ਼ੀ ਦਾ ਪਾਠਕ੍ਰਮ' ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਸਿੱਖਿਆ ਲੈਣ ਦੇ ਦੋ ਤਰੀਕੇ ਹਨ। ਇਕ ਇਹ ਕਿ ਸਿੱਖਿਆ ਮਿਲੇ ਤਾਂ ਕਿ ਅਸੀਂ ਖੁਸ਼ ਰਹੀਏ ਅਤੇ ਦੂਜਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਅਸੀਂ ਖੁਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਸਿੱਖਿਆ ਲਈਏ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਨ ਵਿਚ ਅਤੇ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਨੂੰ ਪੜ੍ਹਾਉਣ ਵਿਚ ਖੁਸ਼ੀ ਮਿਲਣੀ ਚਾਹੀਦੀ ਹੈ। ਖੁਸ਼ੀ-ਖੁਸ਼ੀ ਪੜ੍ਹਨ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹਾਉਣਗੇ ਤਾਂ ਤਣਾਅ ਘਟ ਹੋਵੇਗਾ। ਚੰਗੇ ਨੰਬਰ ਮਿਲ ਸਕਦੇ ਹਨ, ਲੇ ਕਿਨ ਖੁਸ਼ੀ ਮਿਲ ਜਾਏ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ 'ਹੈਪੀਨੇਸ ਕੈਰੀਕੁਲਮ' ਸ਼ਾਇਦ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਪਹਿਲਾ ਪ੍ਰਯੋਗ ਹੈ ਜਿਥੇ ਹਰ ਸਕੂਲ ਵਿਚ ਰੋਜ਼ਾਨਾ 45 ਮਿੰਟ ਦੀ 'ਹੈਪੀਨੇਸ ਕਲਾਸ' ਹੋਵੇਗੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦਸਿਆ ਕਿ ਇਸ ਵਿਸ਼ੇ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਹਾਰਵਰਡ ਦੇ ਐਕਸਪਰਟਸ ਨਾਲ ਗਲ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਉਹ ਵੀ ਹੈਰਾਨ ਸਨ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਇਕ ਹਜ਼ਾਰ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਔਠਵੀਂ ਕਲਾਸ ਤਕ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਹੈਪੀਨੇਸ ਦੀ ਕਲਾਸ ਹੋਵੇਗੀ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਜੇਕਰ 40 ਲੱਖ ਬੱਚੇ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ ਤਾਂ ਉਨ੍ਹਾਂ 40 ਲੱਖ ਬੱਚਿਆਂ ਦੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿਚ ਹੈਪੀਨੇਸ ਦੀ ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਪ੍ਰੈਕਟਿਸ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਸ਼ੁਰੂਆਤ 10 ਲਖ ਬੱਚਿਆਂ ਤੋਂ ਕਰ ਰਹੇ ਹਾਂ ਜੋ ਨਰਸਰੀ ਤੋਂ 8ਵੀਂ ਕਲਾਸ ਤਕ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹਨ। ਮੇਡੀਟੇਸ਼ਨ ਕਹਿੰਦੇ ਹੀ ਬਹੁਤ ਲੋਕ ਧਰਮ, ਗੁਰੂ ਜਾਂ

ਪ੍ਰਥਾ ਦਾ ਸਵਾਲ ਚੁਕਦੇ ਹਨ, ਇਸ ਲਈ ਇਕ ਸ਼ਬਦ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਹੈ- 'ਮਾਈਡਫੁਲਨੇਸ'। ਮਾਈਡਫੁਲਨੇਸ ਦਾ ਮਤਲਬ ਹੈ ਸਾਈਟਿਫਿਕ ਮੇਡੀਟੇਸ਼ਨ। ਹਰ ਕਲਾਸ ਰੋਜ਼ਾਨਾ 5 ਮਿੰਟ ਦੇ ਮੇਡੀਟੇਸ਼ਨ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਵੇਗੀ ਅਤੇ 5 ਮਿੰਟ ਦੇ ਮੇਡੀਟੇਸ਼ਨ ਤੋਂ ਖਤਮ ਹੋਵੇਗੀ। ਭਾਰਤ ਦੇ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਚ ਬਹੁਤ ਲੋਕ ਮੇਡੀਟੇਸ਼ਨ ਕਰਦੇ ਸਨ। ਮੇਡੀਟੇਸ਼ਨ ਨਾਲ, ਮਾਈਡਫੁਲਨੇਸ ਨਾਲ ਬਹੁਤ ਐਨਰਜੀ ਪੈਦਾ ਹੁੰਦੀ ਸੀ। ਉਹ ਭਾਰਤ ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਬਣਾਉਂਦੀ ਹੈ। ਸੋਚੋ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਦਸ ਲਖ ਬੱਚੇ ਇਕੱਠੇ ਮੇਡੀਟੇਸ਼ਨ ਕਰਨਗੇ ਤਾਂ ਇਕੱਠੇ ਕਿੰਨੀ ਐਨਰਜੀ ਪੈਦਾ ਹੋਵੇਗੀ। ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੋਦਿਯਾ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਹ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਪੂਰੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮੌਲਿਕ ਹੈ।

ਕਿਸੇ ਦੇਸ਼ ਤੋਂ ਉਧਾਰ ਨਹੀਂ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਛੇ ਮਹੀਨੇ ਤਕ ਦਿਨ ਰਾਤ ਮਿਹਨਤ ਕਰਕੇ ਕਰੀਬ 40 ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਅਤੇ ਐਜੂਕੇਟਰਸ ਦੇ ਟੀਮ ਨੇ ਇਸ ਹੈਪੀਨੇਸ ਕਰੀਕੁਲਮ ਨੂੰ ਤਿਆਰ ਕੀਤਾ। ਆਤੰਕਵਾਦ ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣ ਤਕ ਦੀ ਸਮਸਿਆ ਇਸ ਨਾਲ ਦੂਰੀ ਹੋਵੇਗੀ। ਐਸੀ ਪੀੜ੍ਹੀ ਪੈਦਾ ਹੋਵੇਗੀ ਜਿਸ ਦੇ ਅੰਦਰ ਮਨੁੱਖੀ ਮੁੱਲ ਭਰੇ ਹੋਣਗੇ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਇਸ ਕਦਮ ਦੀ ਕਾਫੀ ਸ਼ਲਾਘਾ ਹੋ ਰਹੀ ਹੈ। ਖੁਸ਼ੀ ਪਾਠਕ੍ਰਮ ਦਾ ਮਕਸਦ ਹੈ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਭਾਵਨਾਤਮਕ ਰੂਪ ਨਾਲ ਮਜ਼ਬੂਤ ਬਣਾਉਣਾ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਐਸੀਆਂ ਗਤੀਵਿਧੀਆਂ ਨਾਲ ਜੋੜਿਆ ਜਾਵੇਗਾ ਜਿਸ ਨਾਲ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਗੁਸਾ ਨਾ ਪੈਦਾ ਹੋਵੇ। ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਪ੍ਰੇਰਨਾਦਾਈ ਕਹਾਣੀਆਂ ਸੁਣਾਈਆਂ ਜਾਣਗੀਆਂ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਅਸਾਈਨਮੈਂਟ ਦਿਤੇ ਜਾਣਗੇ ਲੇ ਕਿਨ ਕੋਈ ਕਿਤਾਬ ਜਾਂ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਨਹੀਂ ਹੋਵੇਗੀ। ■



‘ਹਾਰਡਿੰਗ ਬੰਬ ਕੇਸ’ ਦੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ

‘ਹਾਰਡਿੰਗ ਬੰਬ ਕੇਸ’ ਅਜ਼ਾਦੀ ਅੰਦੋਲਨ ਦਾ ਇਕ ਗੌਰਵਸ਼ਾਲੀ ਅਧਿਆਇ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਇਸ ਧਮਾਕੇ ਦੀ ਗੂੰਜ ਸੱਤ ਸਮੁੰਦਰ ਪਾਰ ਵੀ ਸੁਣਾਈ ਪਈ ਸੀ। ਪੂਰਾ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸ਼ਾਸਨ ਹਿਲ ਉਠਿਆ ਸੀ। ਇਸ ਕੇਸ ਵਿਚ ਮਾਸਟਰ ਅਮੀਰ ਚੰਦ, ਭਾਈ ਬਾਲ ਮੁਕੰਦ ਅਤੇ ਮਾਸਟਰ ਅਵਧ ਬਿਹਾਰੀ ਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੇ ਦਿਤੀ ਗਈ ਸੀ। ਲੇਕਿਨ ਦਿੱਲੀ ਵਾਲਿਆਂ ਦੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਨਾਮ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਲਈ ਅੰਕਿਤ ਹੋ ਗਏ।

ਹਰ ਸਾਲ ਇਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੇ ਸਮਾਰਕ ਤੇ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਦੇਣ ਵੱਡੀ ਗਿਣਤੀ ਵਿਚ ਲੋਕ ਪਹੁੰਚਦੇ ਹਨ। ਤਤਕਾਲੀਨ ਫਾਂਸੀ ਘਰ ਦੀ ਜਗ੍ਹਾ ਇਹ ਸਮਾਰਕ ਬਣਿਆ ਹੈ ਜੋ ਹੁਣ

ਮੌਲਾਨਾ ਆਜ਼ਾਦ ਮੈਡੀਕਲ ਕਾਲਜ ਪਰਿਸਰ ਵਿਚ ਹੈ। ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਤਿੰਨੇ ਦਿਵਾਨਿਆਂ ਨੂੰ ਇਥੇ 8 ਮਈ ਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦਿਤੀ ਗਈ ਸੀ। ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਉਪਮੁਖਮੰਤਰੀ ਮਨੀਸ਼ ਸਿਸੌਦਿਆ ਨੇ ਸਮਾਰਕ ਸਥਲ ਪਹੁੰਚ ਕੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਨੂੰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਅਰਪਿਤ ਕੀਤੀ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਕਈ ਵੱਡੇ ਅਫਸਰ ਅਤੇ ਵਿਭਿੰਨ ਵਿਭਾਗਾਂ ਦੇ ਕਰਮਚਾਰੀ ਵੀ ਮੌਜੂਦ ਸਨ।

ਸ੍ਰੀ ਸਿਸੌਦਿਆ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਨ੍ਹਾਂ ਮਹਾਨ ਦੇਸ਼ ਭਗਤਾਂ ਦਾ ਬਲਿਦਾਨ ਕਦੇ ਭੁਲਾਇਆ ਨਹੀਂ ਜਾ ਸਕਦਾ। ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਐਸੇ ਦਿਵਾਨਿਆਂ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਬਲਿਦਾਨ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਹੀ ਭਾਰਤ ਅਜ਼ਾਦ ਹੋ ਸਕਿਆ।

ਇਸ ਮੌਕੇ ਤੇ ਗੰਧਰਵ ਮਹਾਂਵਿਦਿਆਲਯ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਸ਼ਹੀਦਾਂ ਦੀ ਯਾਦ ਵਿਚ ਗੀਤ ਗਾਏ। ਦਰਅਸਲ, 1911 ਵਿਚ ਅੰਗਰੇਜ਼ਾਂ ਨੇ ਭਾਰਤ ਦੀ ਰਾਜਧਾਨੀ ਨੂੰ ਕਲਕੱਤਾ ਤੋਂ ਦਿੱਲੀ

ਤਬਦੀਲ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ। 23 ਦਸੰਬਰ 1912 ਨੂੰ ਭਾਰਤ ਦੀ ਨਵੀਂ ਰਾਜਧਾਨੀ ਵਿਚ ਪ੍ਰਵੇਸ਼ ਕਰਨ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਸ਼ਾਹੀ ਜਲੂਸ ਕੱਢਿਆ ਗਿਆ ਸੀ ਜਿਸ ਵਿਚ ਉਸ ਸਮੇਂ ਦੇ ਵਾਇਸਰਾਏ “ਲਾਰਡ ਹਾਰਡਿੰਗ” ਬਾਦਸ਼ਾਹੀ ਠਾਠ ਦੇ ਨਾਲ ਹਾਥੀ ਤੇ ਸਵਾਰ ਸੀ। ਥਾਂ-ਥਾਂ ਭਾਰੀ ਸੁਰੱਖਿਆ ਬੰਦੋਬਸਤ ਸੀ। ਸ਼ਾਨੋ-ਸ਼ੌਕਤ ਦੇਖਣ

ਦੇ ਲਈ ਅਪਾਰ ਜਨ ਸਮੂਹ ਇਕੱਠਾ ਸੀ। ਜਦ ਜਲੂਸ ਚਾਂਦਨੀ ਚੌਕ ਤੋਂ ਗੁਜਰ ਰਿਹਾ ਸੀ, ਤਦ ਹਾਥੀ ਤੇ ਇਕ ਬੰਬ ਸੁਟ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਜਿਸ ਵਿਚ ਮਹਾਵਤ ਦੀ ਮੌਤ ਹੋ ਗਈ ਲੇਕਿਨ ਲਾਰਡ ਹਾਰਡਿੰਗ ਬਚ ਨਿਕਲੇ।

ਇਸ ਹਮਲੇ ਨਾਲ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸਰਕਾਰ

ਹਿਲ ਗਈ। ਉਸ ਨੇ ਭਿਆਂਕਰ ਦਮਨ ਚੱਕਰ ਚਲਾਇਆ। ਸਾਰੇ ਲੋਕ ਗ੍ਰਿਫਤਾਰ ਕਰ ਲਏ ਗਏ। ਦੋਸ਼ੀਆਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਸੈਸ਼ਨ ਅਦਾਲਤ ਵਿਚ ਮੁਕਦਮਾ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ ਜੋ ਲਗਭਗ ਇਕ ਸਾਲ ਤਕ ਚਲਿਆ। ਮਾਸਟਰ ਅਮੀਰ ਚੰਦ, ਭਾਈ ਬਾਲ ਮੁਕੰਦ ਅਤੇ ਅਵਧ ਬਿਹਾਰੀ। ਅਤੇ ਵਸੰਤ ਕੁਮਾਰ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਨੂੰ ਫਾਂਸੀ ਦੀ ਸਜ਼ਾ ਸੁਣਾਈ ਗਈ। ਬਸੰਤ ਕੁਮਾਰ ਨੂੰ 9 ਮਈ ਨੂੰ ਅੰਬਾਲਾ ਜੇਲ੍ਹ ਵਿਚ ਫਾਂਸੀ ਦਿਤੀ ਗਈ ਜਦ ਕਿ ਲਾਲਾ ਅਨੁਮੰਤ ਸਹਾਏ ਨੂੰ ਤਾਉਮਰ ਕਾਰਾਵਾਸ ਦਿਤਾ ਗਿਆ ਸੀ।

ਇਹ ਹਮਲਾ ਆਪਣੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਸਫਲ ਹਮਲਾ ਮੰਨਿਆ ਗਿਆ ਸੀ। ਤਦ ਤਕ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸ਼ਾਸਨ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਪ੍ਰਤੀਕ ਤੇ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਹਮਲੇ ਦੀ ਗਲ ਕੋਈ ਸੋਚ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸਕਦਾ ਸੀ। ਇਸ ਘਟਨਾ ਨੇ ਪੂਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ ਭਾਰਤ ਦੀ ਅਜ਼ਾਦੀ ਦੇ ਮੁਦੇ ਤੇ ਵਲ ਆਕਰਸ਼ਿਤ ਕੀਤਾ ਸੀ। ■





ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਨਿੱਜੀ ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਕੀਤੀ ਵਧੀ ਫੀਸ ਵਾਪਸ, ਨੌ ਫੀਸਦੀ ਵਿਆਜ ਦੇ ਨਾਲ

ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਲਈ ਇਹ ਹੈਰਾਨੀ ਦੀ ਗਲ ਹੈ, ਲੇਕਿਨ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਸੈਂਕੜੇ ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਵਧੀ ਹੋਈ ਫੀਸ ਵਾਪਸ ਕੀਤੀ। ਸਰਕਾਰ ਨੇ 575 ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ 9 ਫੀਸਦੀ ਵਿਆਜ ਦੇ ਨਾਲ ਵਧੀ ਹੋਈ ਫੀਸ ਵਾਪਸ ਕਰਨ ਦਾ ਹੁਕਮ ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਇਹ ਵਧੀ ਹੋਈ ਫੀਸ, ਸਕੂਲਾਂ ਨੇ ਛੇਵੇਂ ਤਨਖਾਹ ਕਮਿਸ਼ਨ ਨੂੰ ਲਾਗੂ ਕਰਨ ਦੇ ਨਾਮ ਤੇ ਵਸੂਲੀ ਗਈ ਸੀ। ਸਿੱਖਿਆ ਨਿਏਸ਼ਾਲਾ ਨੇ ਸਾਫ਼ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਆਦੇਸ਼ ਦਾ ਪਾਲਨ ਨਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਸਖਤ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇਗੀ।

ਹਾਈ ਕੋਰਟ ਦੀ ਕਮੇਟੀ ਦੀ ਰੀਪੋਰਟ ਦੇ ਆਧਾਰ ਤੇ ਸਿੱਖਿਆ ਨਿਏਸ਼ਾਲਾ ਨੇ ਇਹ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ ਸੀ। ਕਮੇਟੀ ਨੇ ਸਿਫਾਰਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਸੀ ਕਿ ਸਕੂਲ, ਜੂਨ 2016 ਤੋਂ ਲੈ ਕੇ ਜਨਵਰੀ 2018 ਤਕ ਲਈ ਗਈ ਵਧੀ ਹੋਈ ਫੀਸ 9 ਫੀਸਦੀ ਵਿਆਜ ਦੇ ਨਾਲ ਵਾਪਸ ਕਰਨ। ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਸਕੂਲਾਂ ਨੂੰ ਇਹ ਆਦੇਸ਼ ਜਾਰੀ ਕੀਤਾ ਗਿਆ ਹੈ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਕਈ ਨਾਮੀ ਸਕੂਲ ਵੀ ਸ਼ਾਮਲ ਹਨ। ਇਸ

ਮਾਮਲੇ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਕਾਫੀ ਗੰਭੀਰ ਨਜ਼ਰ ਆਏ। ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਮਿਲਣ ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਖੁਦ ਦਖਲਅੰਦਾਜ਼ੀ ਕੀਤੀ। ਇਥੋਂ ਤਕ ਕਿ ਜਨਤਾ ਨਾਲ ਗਲਬਾਤ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਮਿਲੀਆਂ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਤੇ ਵੀ ਸਖਤ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ। ਮਾਡਲ ਟਾਊਨ ਦੇ ਕਵੀਨ ਮੈਰੀ ਸਕੂਲ ਦਾ ਐਸਾ ਹੀ ਮਾਮਲਾ ਸਾਹਮਣੇ ਆਇਆ ਸੀ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਦੇ ਜਨਤਾ ਨਾਲ ਗਲਬਾਤ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਕੁਝ ਮਾਪਿਆਂ ਨੇ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਕੀਤੀ ਸੀ ਕਿ ਸਕੂਲ ਨੇ ਮਨਮਾਨੇ ਢੰਗ ਨਾਲ ਫੀਸ ਵਧਾ ਦਿਤੀ ਹੈ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਇਸ ਤੇ ਸਖਤ ਲਹਿਜ਼ਾ ਅਖਤਿਆਰ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਸਕੂਲ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਕਾਰਵਾਈ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਨੇ ਸਕੂਲ ਨੂੰ ਨੋਟਿਸ ਜਾਰੀ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਫੀਸ ਵਧਾਉਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਤੁਰੰਤ ਪ੍ਰਭਾਵ ਤੋਂ ਵਾਪਸ ਲੈਣ ਨੂੰ ਕਿਹਾ। ਇਹ ਵੀ ਹੁਕਮ ਦਿਤਾ ਕਿ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਮਾਪਿਆਂ ਤੋਂ ਵਧੀ ਹੋਈ ਫੀਸ ਵਸੂਲੀ ਗਈ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਵਾਪਸ ਕੀਤੀ ਜਾਏ, ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਸਰਕਾਰ ਸਕੂਲ ਦੇ ਖਿਲਾਫ਼ ਸਖਤ ਤੋਂ ਸਖਤ ਕਾਰਵਾਈ ਕਰੇ

ਗੀ। ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਨੇ ਨੋਟਿਸ ਦੇ ਜਵਾਬ ਵਿਚ ਸਕੂਲ ਨੇ ਸੂਚਿਤ ਕੀਤਾ ਕਿ ਸੈਸ਼ਨ 2018-19 ਦੇ ਲਈ ਫੀਸ ਵਧਾਉਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਵਾਪਸ ਲੈ ਲਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਕਿਸੇ ਤੋਂ ਵਧੀ ਹੋਈ ਫੀਸ ਲਈ ਗਈ ਹੈ ਤਾਂ ਉਸ ਨੂੰ ਜਾਂ ਤਾਂ ਵਾਪਸ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ ਜਾਂ ਫਿਰ ਅੱਗੇ ਦੀ ਫੀਸ ਵਿਚ ਅਡਜਸਟ ਕਰ ਦਿਤਾ ਜਾਵੇਗਾ।

ਫੀਸ ਵਾਧੇ ਦੀ ਸ਼ਿਕਾਇਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਮਾਪਿਆਂ ਵਿਚ ਸ਼ਾਮਲ ਰੂਚੀ ਜੈਨ ਨੇ ਸਕੂਲ ਦੁਆਰਾ ਫੀਸ ਵਾਧੇ ਦਾ ਫੈਸਲਾ

ਵਾਪਸ ਲਏ ਜਾਣ ਤੇ ਬੇਹਦ ਖੁਸ਼ੀ ਜਤਾਉਂਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਨਾਲ ਸਰਕਾਰ ਅਤੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਦੇ ਪ੍ਰਤੀ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਭਰੋਸਾ ਹੋਰ ਮਜ਼ਬੂਤ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ, ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਦੇ ਸੋਚਿਆ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸੀ ਕਿ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਦੇ ਨਾਲ ਮੀਟਿੰਗ ਇੰਨੀ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਹੋ ਜਾਵੇਗੀ ਅਤੇ ਉਹ ਇੰਨੀ ਅਸਾਨੀ ਨਾਲ ਸਾਡੇ

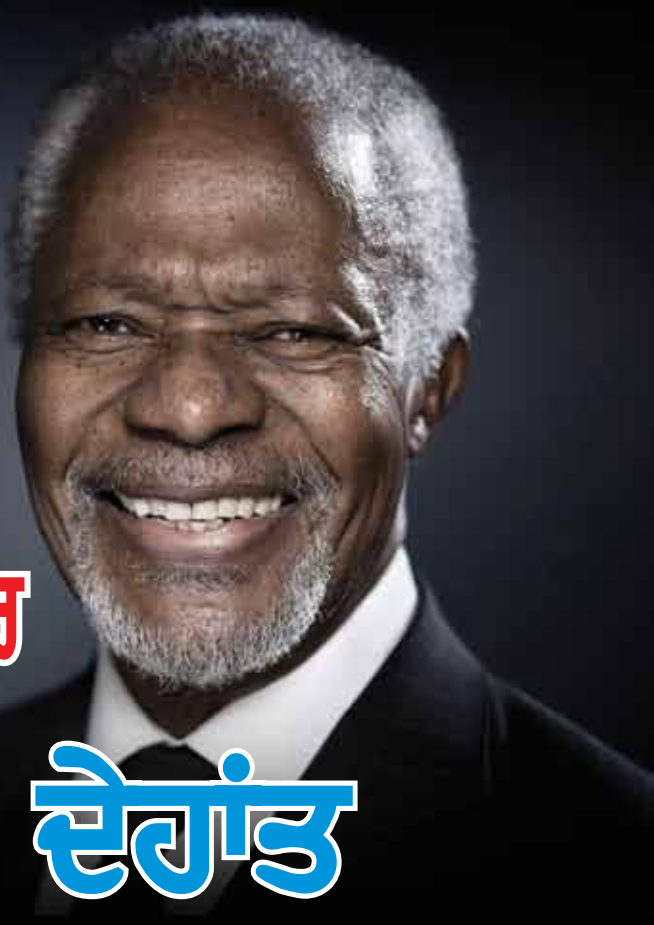
ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਲਈ ਉਪਲਬਧ ਹੋ ਪਾਉਣਗੇ। ਲੇਕਿਨ ਬਹੁਤ ਅਰਾਮ ਨਾਲ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਵਾਸ ਤੇ ਜਨਤਾ ਨਾਲ ਗਲਬਾਤ ਦੇ ਦੌਰਾਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਮੁਲਾਕਾਤ ਹੋ ਗਈ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ

ਰੋਜ਼ਾਨਾ ਆਪਣੇ ਆਵਾਸ ਤੇ 10 ਤੋਂ 11 ਵਜੇ ਦੇ ਵਿਚ ਜਨਤਾ ਸੰਵਾਦ ਵਿਚ ਲੋਕਾਂ ਨਾਲ ਬਿਨਾ ਕਿਸੇ ਅਪ੍ਰਾਇਟਮੈਂਟ ਦੇ ਮਿਲਦੇ ਹਨ। ਜਨਤਾ ਨਾਲ ਗਲਬਾਤ ਵਿਚ ਮਨਮੰਨੇ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਫੀਸ ਵਧਾਉਣ ਅਤੇ ਈਡਬਲਯੂਐਸ ਕੈਟੇਗਰੀ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਮੁਫਤ ਵਿਚ ਵਰਦੀ, ਕਿਤਾਬਾਂ, ਅਤੇ ਸਟੇਸ਼ਨਰੀ ਆਦਿ ਨਾ

ਮੁਹੱਈਆ ਕਰਾਉਣ ਜਿਹੀਆਂ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਮਿਲੀਆਂ ਸਨ। ਇਨ੍ਹਾਂ ਸ਼ਿਕਾਇਤਾਂ ਦੇ ਬਾਅਦ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਨੇ ਸਿੱਖਿਆ ਵਿਭਾਗ ਨੂੰ ਨਿਰਦੇਸ਼ ਦਿਤਾ ਕਿ ਐਸਾ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਸਖਤ ਤੋਂ ਸਖਤ ਕਾਰਵਾਈ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ। ■



‘ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ’ ਨੂੰ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਕਦਮ ਦੱਸਣ ਵਾਲੇ ਸਾਬਕਾ ਯੂ.ਐਨ. ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਦਾ ਦੇਹਾਂਤ



ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸੰਘ ਦੇ ਸਾਬਕਾ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਅਤੇ ਨੋਬੇਲ ਪੁਰਸਕਾਰ ਨਾਲ ਸਨਮਾਨਤ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਦਾ 18 ਅਗਸਤ ਨੂੰ 80 ਸਾਲ ਦੀ ਉਮਰ ਵਿਚ ਦੇਹਾਂਤ ਹੋ ਗਿਆ। ਨੋਬੇਲ ਪੁਰਸਕਾਰ ਨਾਲ ਸਨਮਾਨਤ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਯੋਜਨਾ ਦੇ ਵੱਡੇ ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਕ ਸਨ ਅਤੇ ਜਨਵਰੀ 2017 ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੂੰ ਇਸ ਸਬੰਧ ਵਿਚ ਪੱਤਰ ਵੀ ਲਿਖਿਆ ਸੀ। 8 ਅਪ੍ਰੈਲ, 1938 ਨੂੰ ਘਾਨਾ ਦੇ ਕੁਮਾਸੀ ਵਿਚ ਜਨਮੇ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ

ਨੇ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਵਿਚ ਇਕ ਇਕ ਛੋਟੇ ਅਹੁਦੇ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀਤੀ ਸੀ ਅਤੇ ਵਧਦੇ-ਵਧਦੇ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਦੇ ਅਹੁਦੇ ਤੇ ਪਹੁੰਚੇ। ਉਹ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸੰਘ ਦੇ ਸੱਤਵੇਂ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਚੁਣੇ ਗਏ ਸਨ ਅਤੇ ਇਸ ਪਦ ਤੇ ਉਹ ਦੋ ਵਾਰ ਰਹੇ। ਭਾਵਿਲੇ ਸ਼ੈਲੀ, ਸ਼ਾਂਤ ਸੁਭਾਅ ਅਤੇ ਰਾਜਨੀਤਿਕ ਸਮਝ ਦੇ ਲਈ ਜਾਣੇ ਜਾਣ ਵਾਲੇ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ 1 ਜਨਵਰੀ, 1997 ਤੋਂ 31 ਦਸੰਬਰ, 2006 ਤਕ ਇਸ ਅਹੁਦੇ ਤੇ ਰਹੇ। 2001 ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਦੇ ਨਾਲ ਨੋਬੇਲ ਸ਼ਾਂਤੀ ਪੁਰਸਕਾਰ ਨਾਲ ਨਵਾਜਿਆ ਗਿਆ। ਉਹ ਅਹੁਦੇ ਤੋਂ ਹਟਣ ਤੇ ਇਕ ਐਸਾ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਛੱਡ ਗਏ ਜੋ ਪੂਰੀ ਤੇਜ਼ੀ ਨਾਲ

ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਸ਼ਾਂਤੀ ਦਾ ਮਾਹੌਲ ਬਣਾਉਣ ਅਤੇ ਗਰੀਬੀ ਨਾਲ ਲੜਨ ਦੇ ਲਈ ਲਗਾ ਹੋਇਆ ਸੀ।

ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਦੇ ਮੌਜੂਦਾ ਜਨਰਲ ਸਕੱਤਰ ਅੰਤੋਨੀਯੋ ਗੁਤਰੇਸ ਦੇ ਮੁਤਾਬਕ- ‘ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਚੰਗਿਆਈ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਮਾਰਗ ਦਰਸ਼ਕ ਸ਼ਕਤੀ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਉਸ ਸਮੇਂ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਕੀਤੀ ਜਦ 11 ਸਤੰਬਰ 2009 ਦੇ ਹਮਲਿਆਂ ਦੇ ਬਾਅਦ ਆਤੰਕਵਾਦ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਦੁਨੀਆਂ ਇਕਜੁਟ ਸੀ। ਇਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਇਰਾਕ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਅਮਰੀਕਾ ਯੁਧ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਵੰਡ ਗਿਆ ਸੀ।’

‘ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਚੰਗਿਆਈ ਦੇ ਲਈ ਇਕ ਮਾਰਗ ਦਰਸ਼ਕ ਸ਼ਕਤੀ ਸਨ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਉਸ ਸਮੇਂ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਕੀਤੀ ਜਦ 11 ਸਤੰਬਰ 2009 ਦੇ ਹਮਲਿਆਂ ਦੇ ਬਾਅਦ ਆਤੰਕਵਾਦ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਦੁਨੀਆਂ ਇਕਜੁਟ ਸੀ। ਇਸ ਦੇ ਬਾਅਦ ਇਰਾਕ ਦੇ ਖਿਲਾਫ ਅਮਰੀਕਾ ਯੁਧ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਵੰਡ ਗਿਆ ਸੀ।’

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ, ‘ਮੈਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਦੇਹਾਂਤ ਦੇ ਬਾਰੇ ਵਿਚ ਪਤਾ ਚਲਣ ਦੇ ਬੜਾ ਦੁੱਖ ਹੋਇਆ, ਕਈ ਮਾਇਨਿਆਂ ਵਿਚ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸਨ। ਉਹ ਗਰਿਮਾ ਅਤੇ ਦ੍ਰਿੜ ਸੰਕਲਪ ਦੇ ਨਾਲ ਸੰਗਠਨ ਦੀ ਅਗਵਾਈ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਇਸ ਨੂੰ ਨਵੀਂ ਸਦੀ ਵਿਚ ਲੈ ਕੇ ਗਏ।’

ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਨੇ 1961 ਵਿਚ ਸੇਂਟ ਪਾਲ ਮਿਨੇਸੋਟਾ ਵਿਚ ਮੈਕੇਲੇਸਟਰ ਕਾਲਜ ਤੋਂ ਅਰਥ ਸ਼ਾਸਤਰ ਵਿਚ ਸਨਾਤਕ ਕੀਤਾ, ਉਥੋਂ ਉਹ ਜਨੇਵਾ ਚਲੇ ਗਏ ਜਿਥੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਮਾਮਲਿਆਂ ਵਿਚ ਸਨਾਤਕ ਅਧਿਐਨ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਆਪਣੇ ਯੂਐਨ ਕੈਰੀਅਰ ਦੀ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਕੀਤੀ। ■



ਅਨਾਨ ਨੇ ਇਕ ਨਾਈਜੀਰਿਆਈ ਮਹਿਲਾ ਤਿਤੀ ਅਲਾਕਿਜ਼ਾ ਨਾਲ 1965 ਵਿਚ ਵਿਆਹ ਹੋਇਆ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਇਕ ਬੇਟੀ ਆਮਾ ਅਤੇ ਇਕ ਪੁਤਰ ਕੋਜੋ ਹੈ। ਉਹ 1971 ਵਿਚ ਅਮਰੀਕਾ ਪਰਤੇ ਅਤੇ ਮੈਸਾਚੁਸੇਟਸ ਇੰਸਟੀਚਿਊਟ ਆਫ ਟੈਕਨਾਲੋਜੀ ਦੇ ਸਲੋਨ ਸਕੂਲ ਆਫ ਮੈਨੇਜਮੈਂਟ ਤੋਂ ਮਾਸਟਰ ਡਿਗਰੀ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ। ਉਹ 1970 ਦੇ ਦਹਾਕੇ ਵਿਚ ਆਪਣੀ ਪਤਨੀ ਤੋਂ ਅਲਗ ਹੋ ਗਏ ਸਨ ਅਤੇ ਸਵੀਡਿਸ਼ ਵਕੀਲ ਨਾਨੇ ਲਾਗੇਗਰੋਨ ਨਾਲ 1984 ਵਿਚ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਦੂਜਾ ਵਿਆਹ ਕੀਤਾ ਸੀ।

ਅਹੁਦੇ ਤੋਂ ਹਟਣ ਦੇ ਬਾਅਦ ਵੀ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿਚ ਗਰੀਬੀ ਅਤੇ ਸਵਾਸਥ ਦੇ ਮੋਰਚੇ ਤੇ ਹੋ ਰਹੇ ਪ੍ਰਯੋਗਾਂ ਨੂੰ ਲੈ ਕੇ ਲਗਾਤਾਰ ਉਤਾਵਲੇ ਰਹਿੰਦੇ ਸਨ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੀ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਯੋਜਨਾ ਨੂੰ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕਦਮ ਦੱਸਿਆ ਸੀ।

25 ਜਨਵਰੀ 2017 ਨੂੰ ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੂੰ ਲਿਖੇ ਆਪਣੇ ਪੱਤਰ ਵਿਚ ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਨੇ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਨੂੰ ਮੁੱਢਲੀ ਇਲਾਜ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਇਕ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ ਕਦਮ ਦੱਸਿਆ ਸੀ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਿਹਾ ਸੀ ਕਿ ਆਮ ਆਦਮੀ ਮੁਹੱਲਾ

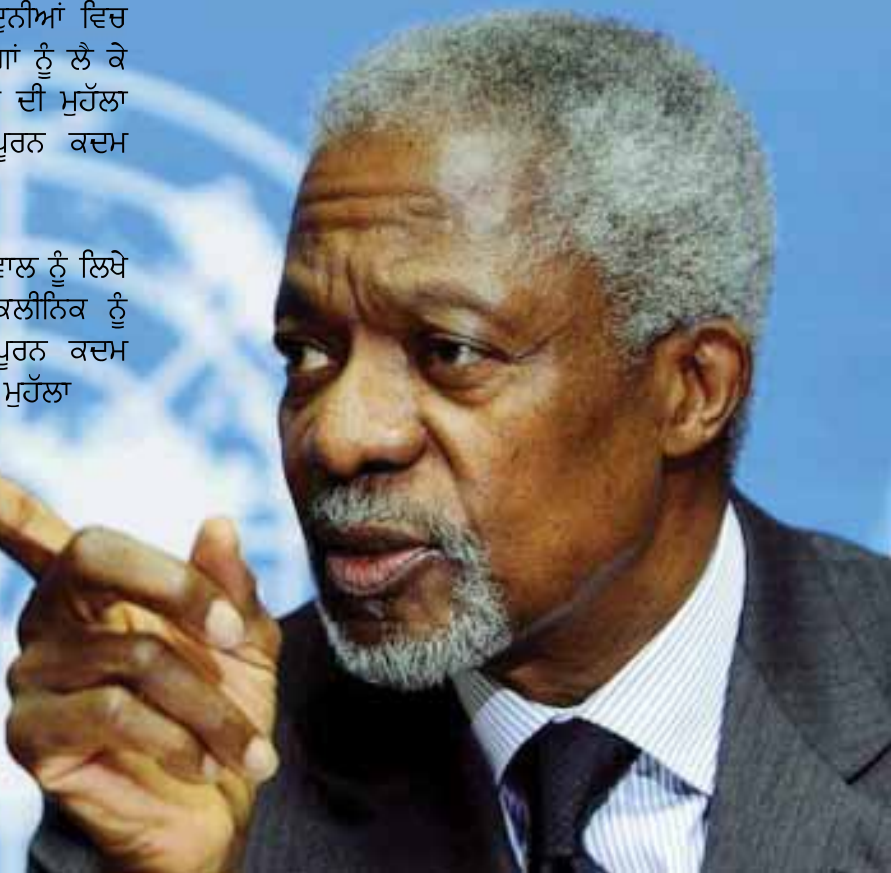
ਕਲੀਨਿਕ' ਦਿੱਲੀ ਹੀ ਨਹੀਂ ਪੂਰੇ ਭਾਰਤ ਦੇ ਹੈਲਥ ਸਿਸਟਮ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਦੇ ਲਈ

ਇਕ ਚੰਗਾ ਮਾਡਲ ਬਣ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਦੇ ਇਸ ਮਾਡਲ ਨੂੰ ਪੂਰੇ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਅਪਨਾਉਣ ਦੀ ਜ਼ਰੂਰਤ ਹੈ। ਅਨਾਨ ਨੇ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਦੇ ਨਾਲ ਮੁੱਢਲੇ ਇਲਾਜ ਨੂੰ ਚੰਗਾ ਬਣਾਉਣ ਦੇ ਲਈ ਕਈ ਸੁਝਾਅ ਵੀ ਦਿਤੇ ਸਨ।

ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਨੂੰ ਪੈਸਿਆਂ ਦੀ ਤੰਗੀ ਨਾਲ ਜੂਝ ਰਹੇ ਗਰੀਬ ਤਬਕੇ ਦੇ ਲਈ ਸ਼ਾਨਦਾਰ ਕਦਮ ਦੱਸਿਆ ਸੀ।

ਅਨਾਨ ਨੇ ਪੱਤਰ ਵਿਚ ਲਿਖਿਆ- 'ਸਾਨੂੰ ਪਤਾ ਹੈ ਦਿੱਲੀ ਵਿਚ ਤੁਹਾਡੀ ਸਰਕਾਰ ਯੂਨੀਵਰਸਲ ਹੈਲਥ ਕਵਰੇਜ ਨੂੰ ਅਪਣਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਤੁਹਾਡੀ ਐਡਮਿਨਿਸਟ੍ਰੇਸ਼ਨ ਇਸ ਦਿਸ਼ਾ ਵਿਚ ਇਕੱਠੇ ਕਈ ਕੰਮ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਫ੍ਰੀ ਪ੍ਰਾਇਮਰੀ ਹੈਲਥ ਕੇਅਰ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਤੁਹਾਡਾ ਮੁਹੱਲਾ ਕਲੀਨਿਕ ਕਾਫੀ ਸਫਲ ਸਾਬਤ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ।'

ਕੋਫੀ ਅਨਾਨ ਨੂੰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ। ■



ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਦੀ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਸਿਖਲਾਈ

ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਦੇ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਪੱਧਰੀ ਮਹੱਤਵ ਨੂੰ ਦੇਖਦੇ ਹੋਏ ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਮੁਹਿੰਮ ਚਲਾਈ। ਉਹ ਨਹੀਂ ਚਾਹੁੰਦੀ ਕਿ ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲਾਂ ਵਿਚ ਪੜ੍ਹਨ ਵਾਲੇ ਬੱਚੇ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਵਿਚ ਕਮਜ਼ੋਰੀ ਦੀ ਵਜ੍ਹਾ ਨਾਲ ਮਾਤ ਖਾ ਜਾਣ, ਇਸ ਲਈ ‘ਸਪੋਕਨ ਇੰਗਲਿਸ਼’ ਯਾਨੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਬੋਲਣਾ ਸਿਖਾਉਣ ਦਾ ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਕੋਰਸ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ।

‘ਸਪੋਕਨ ਇੰਗਲਿਸ਼’ ਕੋਰਸ ਵਿਚ ਦਾਖਲਾ ਲੈਣ ਦੇ ਲਈ 23 ਮਈ 2018 ਤਕ ਰਜਿਸਟਰੇਸ਼ਨ ਦਾ ਮੌਕਾ ਦਿਤਾ ਗਿਆ। ਇਸ ਕੋਰਸ ਨੂੰ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਕਾਊਂਸਿਲ, ਇੰਡੀਆ ਮੈਕਮਿਲਨ ਐਜੂਕੇਸ਼ਨ, ਅਕਾਦਮੀ ਫਾਰ ਕੰਪਿਊਟਰਸ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ (ਗੁਜਰਾਤ) ਅਤੇ ਟ੍ਰਿਨਿਟੀ ਕਾਲਜ, ਲੰਦਨ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਗਿਆ। ਇਹ ਕੋਰਸ ਫੁਲ ਟਾਈਮ ਰੇਗੂਲਰ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਸੀ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਕਲਾਸ 10 ਬੋਰਡ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਵਿਚ ਭਾਗ ਲਿਆ ਅਤੇ ਇਕ ਵਿਸ਼ੇ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਦੇ ਨਾਲ ਤਿੰਨ ਵਿਸ਼ਿਆਂ ਵਿਚ ਪ੍ਰੀ-ਬੋਰਡ ਪ੍ਰੀਖਿਆ ਪਾਸ ਕੀਤੀ।



ਜੂਨ ਵਿਚ ਇਹ ਕੋਰਸ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋਇਆ। ਮੁੱਖਮੰਤਰੀ ਅਰਵਿੰਦ ਕੇਜਰੀਵਾਲ ਨੇ ਟਵੀਟ ਕੀਤਾ—‘ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀ ਜ਼ਿਆਦਾਤਰ ਆਰਥਿਕ ਰੂਪ ਨਾਲ ਕਮਜ਼ੋਰ ਪਿਠ ਭੂਮੀ ਤੋਂ ਆਉਂਦੇ ਹਨ। ਜਦ ਮੈਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨਾਲ ਮਿਲਦਾ ਹਾਂ ਤਾਂ ਇਹ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਮੰਗ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਕਿ ਸਰ ਸਾਨੂੰ ਇੰਗਲਿਸ਼ ਬੋਲਣਾ ਸਿਖਵਾ ਦਿਓ।’ ਮੈਨੂੰ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ੀ ਹੈ ਕਿ ਇਹ ਕੋਰਸ ਹੁਣ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਦੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਦੇ ਲਈ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ।’

ਆਰਥਿਕ ਵੈਸ਼ਵੀਕਰਨ ਦੇ ਇਸ ਯੁਗ ਵਿਚ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰੀ ਹੋ ਗਿਆ ਹੈ। ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿਭਿੰਨ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਵਿਚ ਸੰਚਾਰ ਅਤੇ ਗੱਲਬਾਤ ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਮਹੱਤਵਪੂਰਨ

ਭਾਸ਼ਾ ਹੈ। ਭਾਰਤ ਵਿਚ ਵਿਭਿੰਨ ਰਾਜਾਂ ਦੀ ਆਪਣੀ ਆਪਣੀ ਭਾਸ਼ਾ ਹੈ। ਲੇਕਿਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਆਪਸੀ ਸੰਪਰਕ ਦੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਹੀ ਹੈ।

ਸੰਯੁਕਤ ਰਾਸ਼ਟਰ ਸੰਘ ਨੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਪੰਜ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਨੂੰ ਅਧਿਕਾਰਿਕ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਮਾਨਤਾ ਦਿਤੀ ਹੈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਵਿਚ ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾ ਸਥਾਨ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਦਾ ਹੈ। ਇਸ ਨੂੰ ਸਿੱਖਣਾ ਅਤੇ ਬੋਲਣਾ ਅਸਾਨ ਹੈ। ਇਤਿਹਾਸਕ ਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਕੋਣ ਨਾਲ ਦੇਖੀਏ ਤਾਂ ਪਤਾ ਚਲਦਾ ਹੈ ਕਿ ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਅੱਧਾ ਹਿਸਾ ਕਿਸੇ ਸਮੇਂ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸਾਮਰਾਜਵਾਦ ਦੇ ਤਹਿਤ ਸੀ। ਜੋ ਦੇਸ਼ ਬ੍ਰਿਟਿਸ਼ ਸਾਸਨ ਦੇ ਤਹਿਤ ਸਨ, ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਉਥੇ ਬੋਲ ਦਿਤੀ ਗਈ। ਮਜ਼ਬੂਰੀ ਵਿਚ ਹੀ ਸਹੀ, ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਸਿਖਣੀ ਪਈ। ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਅੱਧੀ ਤੋਂ ਜ਼ਿਆਦਾ ਦੁਨੀਆਂ

ਵਿਚ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਦਾ ਪ੍ਰਚਾਰ-ਪ੍ਰਸਾਰ ਹੋ ਗਿਆ ਤੇ ਅੱਜ ਇਹ ਜ਼ਰੂਰਤ ਬਣ ਗਈ ਹੈ।

ਨਤੀਜਾ ਇਹ ਹੈ ਕਿ ਕਦੇ ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਕਹੀ ਜਾਣ ਵਾਲੀ ਭਾਸ਼ਾ, ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਅੱਜ ਭਾਰਤ ਦੀ ਹੀ ਇਕ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਸਥਾਪਿਤ ਹੋ ਚਲੀ ਹੈ। ਨਾ ਸਿਰਫ

ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ ਨਾਲ ਸੰਪਰਕ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਵਿਚ ਬਲਕਿ ਦੇਸ਼ ਵਿਚ ਵੀ ਸੰਪਰਕ ਭਾਸ਼ਾ ਦੇ ਰੂਪ ਵਿਚ ਇਸ ਦਾ ਮਹੱਤਵ ਨਿਰਵਿਵਾਦ ਹੈ। ਵਿਗਿਆਨ ਅਤੇ ਟੈਕਨਾਲੋਜੀ ਜਿਹੇ ਵਿਸ਼ੇ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਦਰਸ਼ਨ ਅਤੇ ਸਮਾਜਿਕ ਵਿਗਿਆਨ ਦਾ ਅਧਿਐਨ ਵੀ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਵਿਚ ਬੇਹਤਰ ਮੰਨਿਆ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿਉਂਕਿ ਪਾਠ-ਸਮਗਰੀ ਦੀ ਉਪਲਬਧਤਾ ਵਧ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਦਿੱਲੀ ਸਰਕਾਰ ਨੇ ਇਸ ਨੂੰ ਧਿਆਨ ਵਿਚ ਰਖਦੇ ਹੋਏ ਸਰਕਾਰੀ ਸਕੂਲ ਦੇ ਬੱਚਿਆਂ ਨੂੰ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ ਬੋਲਣਾ ਸਿਖਾਉਣ ਦੀ ਯੋਜਨਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤੀ ਤਾਂ ਕਿ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਭਵਿੱਖ ਵਿਚ ਮਿਲ ਸਕਣ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ਮੌਕਿਆਂ ਤੋਂ ਵਾਂਝੇ ਨਾਲ ਰਹਿ ਜਾਣਾ ਪਏ। ■



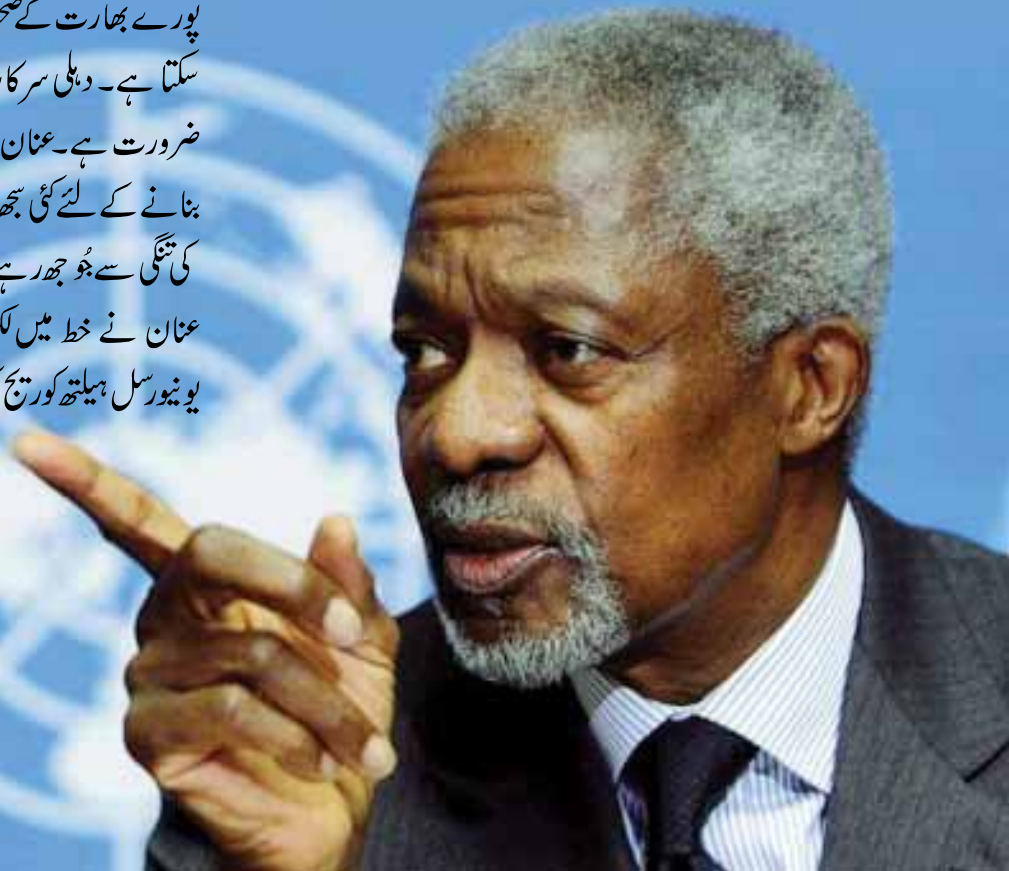
عہدہ سے ہٹنے کے بعد بھی کوئی عنان دنیا میں غربی اور صحت کے مورچے پر ہو رہے تجربوں کو لے کر لگاتار پُر جوش رہتے تھے۔ دہلی سرکار کی محلہ کلینک یوجنا کو انہوں نے ایک اہم قدم مانا تھا۔

25 جنوری 2017 کو وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال کو لکھے اپنے خط میں کوئی عنان نے محلہ کلینک کو اولین معالجہ دوا کے علاقے میں ایک اہم قدم بتایا۔ انہوں نے کہا تھا کہ عام آدمی محلہ کلینک دہلی ہی نہیں پورے بھارت کے صحت سسٹم میں سدھار کے لئے ایک بہتر ماڈل بن سکتا ہے۔ دہلی سرکار کے اس ماڈل کو پورے ملک میں اپنانے کی ضرورت ہے۔ عنان نے محلہ کلینک کے ساتھ فرسٹ ٹریمنٹ کو بہتر بنانے کے لئے کئی سبھاؤ بھی دیئے تھے۔ انہوں نے محلہ کلینک کو پیسوں کی تنگی سے جو جھڑپا ہے غریب طبقے کے لئے شاندار قدم بتایا تھا۔

عنان نے خط میں لکھا - 'ہمیں پتہ ہے دہلی میں آپ کی سرکار یونیورسل ہیلتھ کوریج کو اپنا رہی ہے۔ آپ کا ایڈمنسٹریشن اس جانب میں ایک ساتھ کئی کام کر رہا ہے جس میں مفت پرائمری ہیلتھ کیئر کے طور پر آپ کا محلہ کلینک کافی کامیاب ثابت ہو رہا ہے۔'

■ کوئی عنان کو خراج عقیدت

عنان نے ایک نائجیریائی خاتون تنی علاقہ سے 1965 میں نکاح کیا تھا۔ ان کی ایک بیٹی آمہ اور ایک لڑکا کو زو ہے۔ وہ 1971 میں امریکا لوٹے اور میساچوسٹرس انسٹی ٹیوٹ آف ٹکنالوجی کے سلون اسکول آف مینجمنٹ سے ماسٹر ڈگری حاصل کی۔ وہ 1970 کے دہائی میں اپنی بیوی سے الگ ہو گئے تھے اور سویڈش وکیل نانے لاگیگ گرین سے 1984 میں انہوں نے دوسری شادی کی تھی۔





محلہ کلینک کوشاندار قدم بتانے والے سابق یو این سکرٹری جنرل

کوفی عنان کا انتقال

تیار کی کے ساتھ دنیا میں امن کا ماحول بنانے اور غربی سے لڑنے کے لئے لگا ہوا تھا۔

اقوام متحدہ کے موجودہ سکرٹری جنرل انتونیو گٹیرس کے مطابق 'کوفی عنان اچھائی کے لئے ایک رہنمائی کا راستہ دکھانے والے شخصیت تھے۔ انہوں نے اس وقت اقوام متحدہ کی صدارت کی جب 11 ستمبر 2001 کے حملوں کے بعد دہشت گردی کے خلاف دنیا ایک جٹ تھی۔ اس کے بعد عراق کے خلاف امریکی جنگ کو لے کر تقسیم ہو گیا تھا۔

انہوں نے کہا 'مجھے ان کے انتقال کے بارے میں پتہ چلنے پر بڑا غم محسوس ہوا، کئی معنوں میں کوفی عنان اقوام متحدہ تھے۔ وہ شان اور مضبوط قرارداد کے ساتھ تنظیم کی قیادت کرتے ہوئے اسے نئی ملینیم میں لے کر گئے۔

کوفی عنان نے 1961 میں سینٹ پال مینیوٹا میں میکے لیسٹر کالج سے معاشیات میں گریجویشن کی۔ وہاں سے وہ جنیوا چلے گئے جہاں انہوں نے بین الاقوامی معاملوں میں پچھلے مطالعہ شروع کیا اور اپنے یو این کیریئر کی شروعات کی۔

”کوفی عنان اچھائی کے لئے ایک رہنمائی کا راستہ دکھانے والے شخصیت تھے۔ انہوں نے اس وقت اقوام متحدہ کی صدارت کی جب 11 ستمبر 2001 کے حملوں کے بعد دہشت گردی کے خلاف دنیا ایک جٹ تھی۔ اس کے بعد عراق کے خلاف امریکی جنگ کو لے کر تقسیم ہو گیا تھا“

اقوام متحدہ کے سابق سکرٹری جنرل اور نوبل انعام سے سرفراز کوفی عنان 18 اگست کو 80 سال کی عمر میں انتقال ہو گیا۔ نوبل انعام سے سرفراز کوفی عنان دہلی سرکار کی محلہ کلینک یوجنا کے بڑے مداح تھے اور جنوری 2017 میں انہوں نے وزیر اعلیٰ اردن کچر یوال کو اس تعلق میں خط بھی لکھا تھا۔

8 اپریل 1938ء کو گھانا کے کوماسی میں پیدا کوفی عنان نے اقوام متحدہ میں ایک چھوٹے عہدہ سے شروعات کی تھی اور بڑھتے بڑھتے

سکرٹری جنرل عہدہ پر پہنچے۔ وہ اقوام متحدہ کے ساتویں سکرٹری جنرل چنے گئے تھے۔ اور اس عہدہ پر وہ دوبار رہے۔ خوبصورت انداز، خاموش مزاج اور سیاسی سمجھ کے لئے جانے جانے والے کوفی عنان 1 جنوری، 1997 سے 31 دسمبر، 2006 تک اس عہدہ پر رہے۔ 2001 میں انہیں اقوام متحدہ کے ساتھ نوبل امن ایوارڈ سے نوازا گیا۔ وہ عہدہ سے ہٹنے پر ایک ایسا اقوام متحدہ چھوڑ گئے جو پوری

محکمہ تعلیم کے نوٹس کے جواب میں اسکول نے اطلاع دی کہ سیشن لیکن بہت آرام سے وزیر اعلیٰ کے گھر پر عوامی بات چیت کے دوران 2018-19 کے لئے فیس بڑھانے کا فیصلہ واپس لے لیا گیا ان سے ملاقات ہوگئی۔

ہے۔ اگر کسی سے بڑھی ہوئی فیس لی گئی ہے تو اُسے یا تو واپس کر دیا وزیر اعلیٰ ارون کچر یوال روزانہ اپنے گھر پر 10 سے 11 بجے کے بیچ

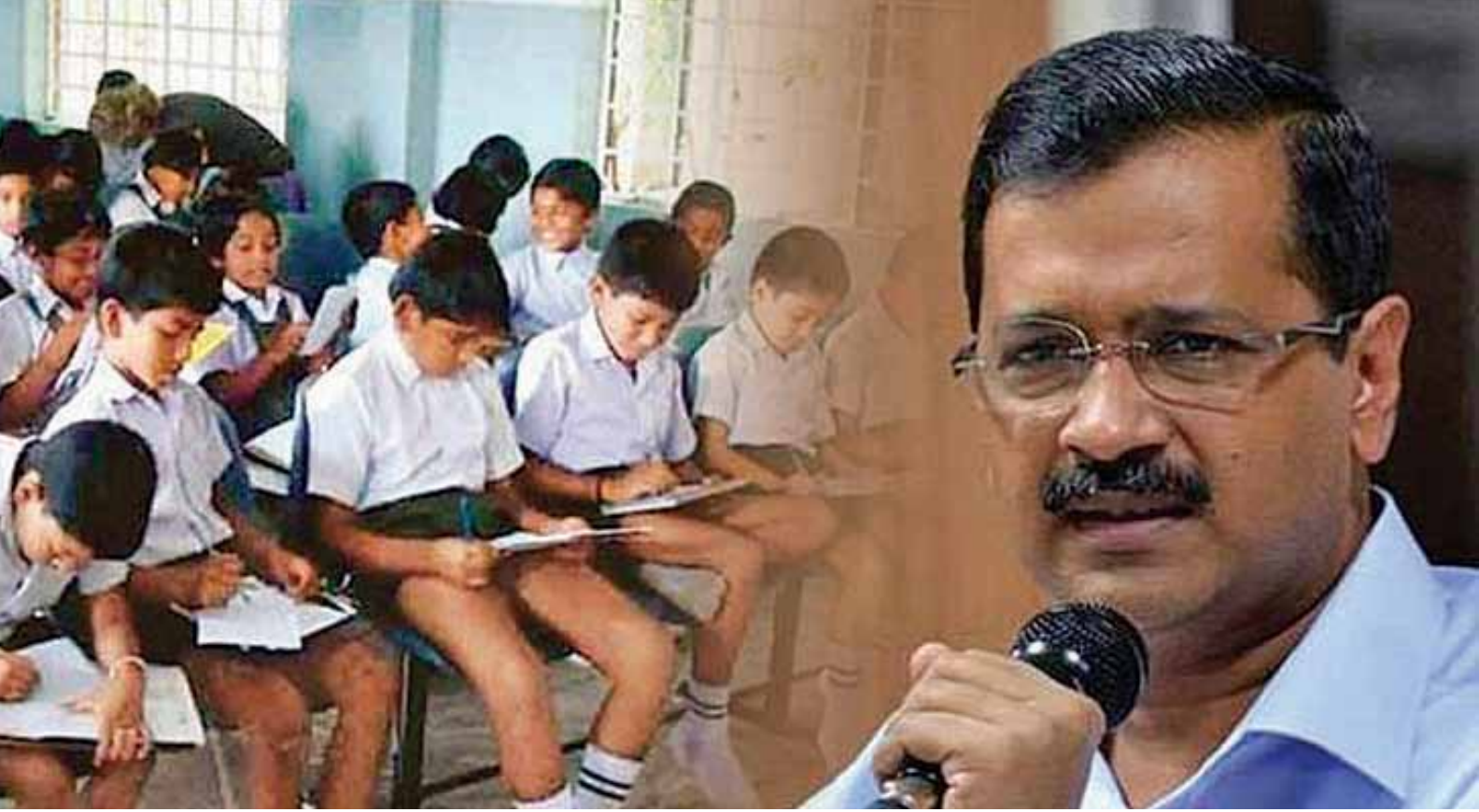
عوامی بات چیت میں لوگوں سے بنا کسی اپوائنٹمنٹ کے ملتے ہیں۔ عوامی بات چیت میں منمانے طریقے سے فیس بڑھانے اور ای ڈبلوائس کئیگری کے بچوں کو مفت میں یونیفارم، کتابیں اور اسٹیشنری وغیرہ نہ مہیا کرانے جیسی شکایتیں ملی



تھیں۔ ان شکایتوں کے بعد وزیر اعلیٰ نے ایجوکیشن محکمہ کو ہدایت دی کہ ایسا کرنے والے اسکولوں کے خلاف سخت سے سخت کارروائی کی جائے۔

کے تئیں ان کا بھروسہ اور مضبوط ہوا ہے۔ ان کے مطابق، انہوں نے کبھی سوچا بھی نہیں تھا کہ وزیر اعلیٰ کے ساتھ میٹنگ اتنی آسانی سے ہو جائے گی وہ اتنی آسانی سے ہم لوگوں کے لئے دستیاب ہو جائیں گے۔





دہلی کے پرائیویٹ اسکولوں نے کی بڑھی

فیس واپس، نو فیصدی نفع کے ساتھ

اس معاملے کو لیکر وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال کا فی سنجیدہ نظر آئے۔ شکایت ملنے پر انہوں نے خود مداخلت کی۔ یہاں تک کہ عوام سے بات چیت کے دوران ملی شکایتوں پر بھی سخت کارروائی کی۔ ماڈل ٹاؤن کے کوین میری اسکول کا ایسا ہی معاملہ سامنے آیا تھا۔ وزیر اعلیٰ کے عوام مکالمہ کے دوران کچھ سرپرستوں نے شکایت کی تھی کہ اسکول نے منمائی ڈھنگ سے فیس بڑھا دی ہے، وزیر اعلیٰ نے اس پر سخت رُخ اپنایا اور اسکول کے خلاف کارروائی کرتے ہوئے محکمہ تعلیم نے اسکول کو نوٹس جاری کرتے ہوئے فیس بڑھانے کا فیصلہ فوری تاثر سے واپس لینے کو کہا۔ یہ بھی ہدایت دی کہ جن سرپرستوں سے بڑھی ہوئی فیس وصولی گئی ہے انہیں واپس کیا جائے، ورنہ سرکار اسکول کے خلاف سخت سے سخت کارروائی کرے گی۔

لوگوں کے لئے یہ تعجب کی بات ہے، لیکن دہلی میں سینکڑوں اسکولوں نے بڑھی ہوئی فیس واپس کی۔ سرکار نے 1575 اسکولوں کو 9 فیصدی نفع کے ساتھ بڑھی ہوئی فیس لوٹانے کی ہدایت جاری کی تھی۔ یہ بڑھی ہوئی فیس، اسکولوں نے چھٹا ویتن آئیوگ لاگو کرنے کے نام پر وصولی گئی تھی۔ ایجوکیشن ڈائریکٹوریٹ نے صاف کہا تھا کہ حکم کی تعمیل نہ کرنے والے اسکولوں کے خلاف سخت کارروائی کی جائے گی۔ ہائی کورٹ کی کمیٹی کی رپورٹ کی بنیاد پر ایجوکیشن ڈائریکٹوریٹ نے یہ ہدایت جاری کی تھی۔ کمیٹی نے سفارش کی تھی کہ اسکول، جون 2016 سے لیکر جنوری 2018 تک لی گئی بڑھی ہوئی فیس 9 فیصدی نفع کے ساتھ واپس کریں۔ جن اسکولوں کو یہ حکم دیا گیا ہے، ان میں کئی نامی اسکول بھی شامل ہیں۔

سرکاری اسکولوں کے بچوں کو انگریزی کی خصوصی تربیت

بھارت میں مختلف ریاستوں کی اپنی اپنی زبان ہے لیکن ان میں آپسی رابطہ کرنے کی زبان بھی انگریزی ہی ہے۔

اقوام متحدہ مجلس نے جن پانچ زبانوں کو سرکاری زبانوں کے طور پر منظوری دی ہے ان میں سب سے پہلا مقام انگریزی کا ہے۔ اسے سیکھنا اور بولنا آسان ہے۔ تاریخی نقطہ نظر سے دیکھیں تو پتہ چلتا ہے کی دنیا کا آدھا حصہ کسی وقت برٹش حکمران کے تحت تھے، انگریزی وہاں لاد دی گئی۔ مجبوری میں ہی صحیح، لوگوں کو سیکھنا پڑا۔ اس طرح آدھے سے زیادہ عالم

میں انگریزی کا نشرو اشاعت ہو گیا اور آج وہ ضرورت بن گئی ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ کبھی دوسری کبھی جانے والی زبان انگریزی، آج بھارت کی ہی ایک زبان کے طور پر معزز



ہو چلی ہے۔ نہ صرف ودیشوں سے رابطہ کے معاملے میں بلکہ دیش میں بھی رابطہ زبان کے طور پر اسکی اہمیت ناقابل اعتماد ہے۔ سائنس اور ٹکنالوجی جیسے موضوع ہی نہیں، فلسفہ اور سماجک و گیان کا مطالعہ بھی انگریزی میں بہتر مانا جاتا ہے کیونکہ درسی اسباب کی دستیاب بڑھ جاتی ہے۔ دہلی سرکار نے اسی کو دھیان میں رکھتے ہوئے سرکاری اسکول کے بچوں کو انگریزی بولنا سکھانے کی اسکیم شروع کی تاکہ انہیں مستقبل میں مل سکنے والے تمام موقعوں سے محروم نہ رہ جانا پڑے۔

انگریزی کی دنیا بھر میں اہمیت کو دیکھتے ہوئے دہلی سرکار نے ایک خاص کیم چلائی۔ وہ نہیں چاہتی کہ دہلی کے سرکاری اسکولوں میں پڑھنے والے بچے انگریزی کی وجہ سے مات کھا جائیں، اس لئے 'اسپیو کین انگلش' یعنی انگلش بولنا سکھانے کا خاص کورس شروع کیا گیا۔ 'اسپیو کین انگلش' کورس میں داخلہ لینے کیلئے 23 مئی 2018 تک رجسٹریشن کا موقع دیا گیا۔ اس کورس کو برٹش قونسل، انڈیا میک ملن ایجو کیشن اکادمی فار کمپیوٹرس ٹریننگ (گجرات) اور ٹرینٹی کالج، ہلندرن کے

تعاون سے شروع کیا گیا۔ یہ کورس فل ٹائم ریگولر طلباء کیلئے تھا جنہوں نے کلاس 10 بورڈ امتحان میں حصہ لیا اور ایک موضوع کے طور پر انگریزی کے ساتھ تین موضوعات میں پری بورڈ امتحان پاس کیا۔

جون میں یہ کورس شروع ہوا۔ وزیر اعلیٰ اروند کچری وال نے ٹویٹ کیا۔ سرکاری اسکولوں کے طلباء زیادہ تر مالی طور پر کمزور نچلے حصے سے آتے ہیں۔ جب میں ان سے ملتا ہوں تو یہ ان کی سب سے بڑی مانگ ہوتی ہے کہ سر ہمیں انگلش بولنا سکھوادیتجئے۔ مجھے بہت خوشی ہے کہ یہ کورس اب سرکاری اسکول میں طلباء کے لئے شروع ہو رہا ہے۔ اقتصادی گلوبلائزیشن کے اس دور میں انگریزی زبان کا مطالعہ ضروری ہو گیا ہے۔ انگریزی زبان مختلف ملکوں کے بیچ مواصلات و مکالمہ کی سب سے اہم زبان ہے۔

ہارڈنگ ایم کیس کے شہیدوں کو خراج عقیدت

ہندوستان کی نئی راجدھانی میں داخل کرنے کیلئے ایک شاہی جلوس نکالا گیا تھا جس میں فوری وائے سرائے "لارڈ ہارڈنگ" بادشاہی ٹھاٹھ کے ساتھ ہاتھی پر سوار تھا۔ جگہ جگہ بھاری سیکورٹی انتظام تھے۔ شان و شوکت دیکھنے کے لئے لوگوں کی بڑی بھیڑ جمع تھی۔ جب جلوس چاندنی چوک سے گذر رہا تھا، بھی ہاتھی پر ایک بم پھینک دیا گیا جس میں مہات کی موت ہو گئی لیکن لارڈ ہارڈنگ بچ نکلے۔

اس حملے سے برٹش سرکار ہل گئی۔ اس نے زبردست دشمنی چکر چلایا۔ تمام لوگ گرفتار کر لئے گئے۔ ملزموں کے خلاف سیشن کورٹ میں مقدمہ

شروع ہوا جو لگ بھگ ایک سال تک چلا۔ ماسٹر امیر چند، بھائی بال مکند اور اودھ بھاری۔ اور بسنت کمار و شواس کو پھانسی کی سزا سنائی گئی۔ بسنت کمار کو 9 مئی کو امبالہ جیل میں پھانسی دی گئی جبکہ لالہ ہنومنٹ سہائے کو عمر قید کی سزا دی تھی۔

یہ حملہ اپنی طرح کا سب سے کامیاب حملہ مانا گیا تھا۔ جب تک برٹش حکومت کے علامتِ عظمیٰ پر اس طرح حملے کی بات کوئی سوچ بھی نہیں سکتا تھا۔ اس حادثہ نے پوری دنیا کی توجہ بھارت کی آزادی کے مدعے کی جانب متوجہ کیا تھا۔ ■



'ہارڈنگ بم کیس' تحریک آزادی کا ایک فخریہ باب ہے۔ دہلی کے اس دھماکے کی گونج سات سمندر پار بھی سنائی پڑی تھی۔ پوری برٹش حکومت ہل اٹھی تھی۔ اس کیس میں ماسٹر امیر چند، بھائی بال مکند اور ماسٹر اودھ بھاری کو پھانسی دے دی گئی تھی لیکن دہلی والوں کے دلوں میں ان کے نام ہمیشہ کے لئے نشان لگا ہوا ہو گیا۔

ہر سال ان شہیدوں کے یادگار پر خراج عقیدت دینے بڑی تعداد میں لوگ پہنچتے ہیں۔ اس وقت کی پھانسی گھر کی جگہ یہ یادگار بنا ہے جو اب مولانا آزاد میڈیکل کالج پریس میں ہے۔ آزادی کے تینوں دیوانوں کو یہیں 8 مئی کو پھانسی

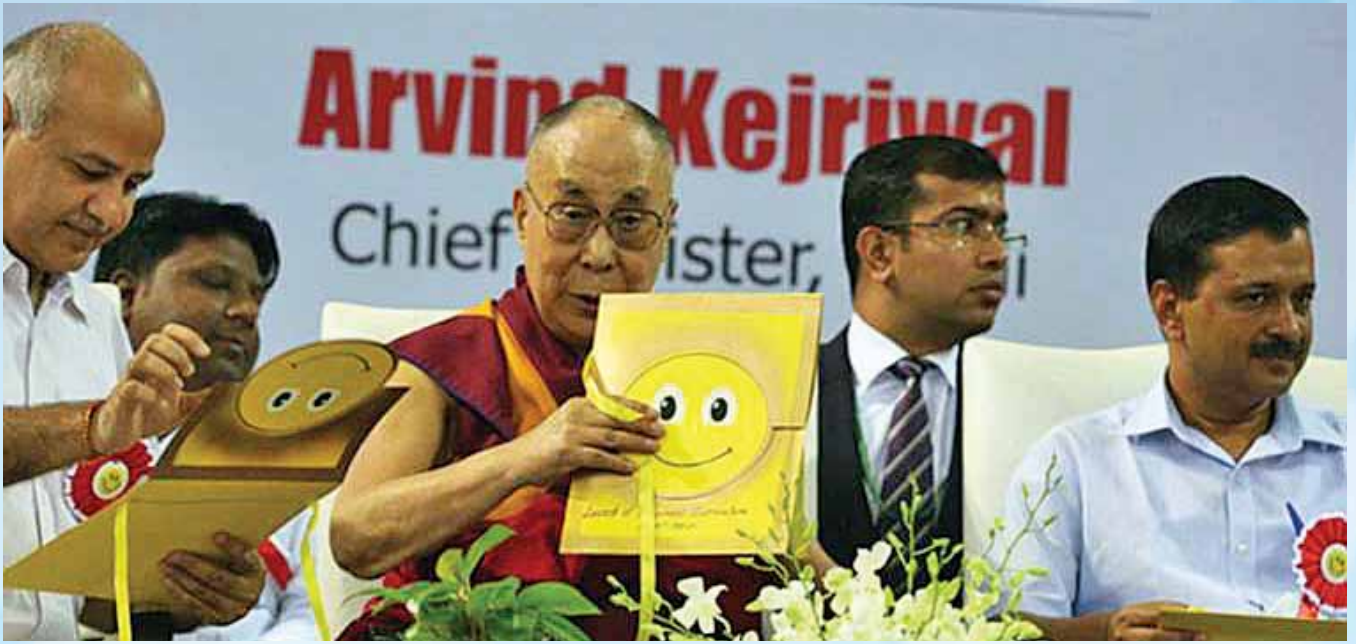
دی گئی تھی۔ دہلی کے نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا نے مقام یادگار پہنچ کر شہیدوں کو خراج عقیدت پیش کی۔ اس موقع پر سرکار کے کئی اعلیٰ افسر اور مختلف محکموں کے ملازمین بھی موجود تھے۔

جناب سسودیا نے کہا کہ ان عظیم محب وطنوں کی قربانی کبھی بھلایا نہیں جاسکتا۔ آزادی کے ایسے دیوانوں کے افضل قربانی کی وجہ سے ہی بھارت آزاد ہوسکا۔

اس موقع پر گندھرو پونیورسٹی کے طلباءوں نے شہیدوں کی یاد میں گیت گائے۔ دراصل 1911 میں انگریزوں نے ہندوستان کی راجدھانی کو کلکتہ سے دہلی منتقل کر دیا تھا۔ 23 دسمبر 1912 کو

اُٹھاتے ہیں، اس لئے ایک لفظ دیا گیا ہے۔ 'مانڈ گلیس' مانڈ گلیس کا مطلب ہے سائنٹفک میڈی ٹیشن۔ ہر کلاس روزانہ 5 منٹ کے میڈی ٹیشن سے شروع ہوگی اور 5 منٹ کے میڈی ٹیشن سے ختم ہوگی۔ ہندوستان کی تاریخ میں بہت لوگ میڈی ٹیشن کرتے تھے۔ میڈی ٹیشن سے مانڈ گلیس سے بہت انرجی پیدا ہوتی تھی۔ وہ بھارت کو بھارت بناتی ہے۔ سوچئے دہلی میں دس لاکھ بچے ایک ساتھ میڈی ٹیشن کریں گے تو ایک ساتھ کتنی انرجی پیدا ہوگی۔ جناب سسودیا نے کہا کہ یہ نصاب تعلیم پوری طرح بنیادی ہے۔

نائب وزیر اعلیٰ نے کہا کہ جن لوگوں نے 100 سال پہلے ایٹم، پروٹون، نیوٹران کھوجا وہ ہمیں ایموشنس نہیں سمجھا سکتے۔ ہمارے پاس پانچ چھ ہزار سال کی تاریخ ہے اسے سیکھنے کا۔ اس خیال کے ساتھ 'خوشی کا نصاب تعلیم' شروع کیا جا رہا ہے۔ تعلیم لینے کے دو طریقے ہیں۔ ایک یہ کہ تعلیم ملے تاکہ ہم خوش رہیں اور دوسرا یہ کہ ہم خوش ہو کر تعلیم لیں۔ بچوں کو پڑھنے میں اور ٹیچروں کو پڑھانے میں خوشی ملنی چاہیئے۔ خوشی۔ خوشی پڑھے اور پڑھائیں گے تو تناؤ کم ہوگا۔ اچھے نمبر مل سکتے ہیں، لیکن خوشی مل جائے یہ

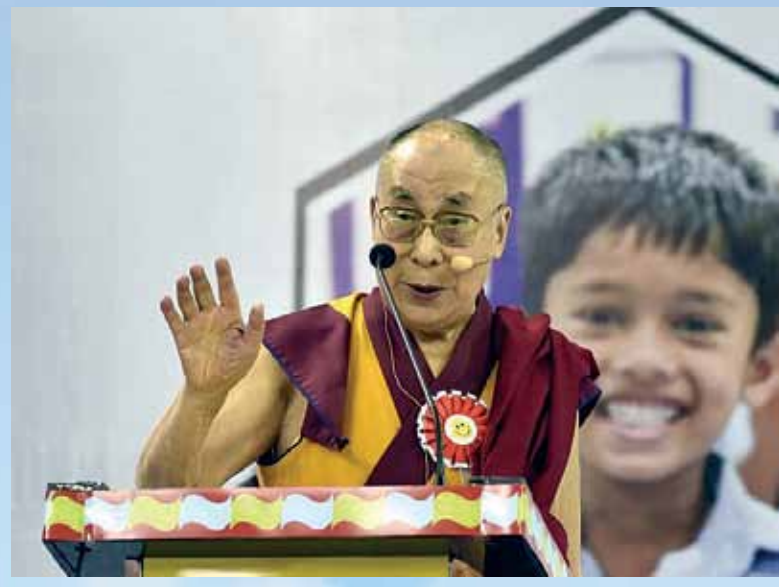


کسی ملک سے اُدھان نہیں لیا گیا ہے۔ چھ مہینے تک دن رات محنت کر کے قریب 40 اساتذہ اور ایجوکیٹرس کی ٹیم نے اس پپی نیس کری کولم کو تیار کیا۔ دہشت گردی سے لیکر آلودگی تک کے مسئلے اس سے دور ہوں گے۔ ایسی نسل پیدا ہوگی جس کے اندر انسانی قدر بھری ہوگی۔ دہلی سرکار کے اس قدم کی کافی سراہنا ہو رہی ہے۔ خوشی نصاب تعلیم کا مقصد ہے بچوں کو جذباتی ہیئت سے مضبوط بنانا۔ بچوں کو ایسی سرگرمیوں سے جوڑا جائے گا جس سے ان میں غصہ نہ پیدا ہو۔ بچوں کو متاثر کن کہانیاں سنائی جائیں گی۔ انہیں اسائنمنٹ دیئے جائیں گے لیکن کوئی کتاب یا امتحان نہیں ہوگا۔ ■

ضروری نہیں ہے۔ انہوں نے کہا کہ پپی نیس کری کولم شاید دنیا کا پہلا تجربہ ہے جہاں ہر اسکول میں روزانہ 45 منٹ کی پپی نیس کلاس ہوگی۔ انہوں نے بتایا کہ اس موضوع میں انہوں نے ہارورڈ کے ایکسپرٹ سے بات کی تو وہ بھی حیران تھے کہ دہلی کے ایک ہزار اسکولوں میں آٹھویں کلاس تک روزانہ پپی نیس کی کلاس ہوگی۔

جناب سسودیا نے کہا کہ دہلی میں اگر 40 لاکھ بچے پڑھتے ہیں تو ان 40 لاکھ بچوں کی زندگی میں پپی نیس کی روزانہ پکٹس ضروری ہوگی۔ شروعات 10 لاکھ بچوں سے کر رہے ہیں جو زسری سے 8 ویں کلاس تک پڑھتے ہیں۔ میڈی ٹیشن کہتے ہی بہت لوگ مذہبی رہنما، یار واج کا سوال





بھارت جدید اور قدیم حکمت کو ایک جُٹ کر دنیا کی رہنمائی کر سکتا ہے اور یہ منفی احساسوں سے ابھرنے میں مدد کر سکتا ہے۔ اس نصابِ تعلیم کی تخیل کرنے والے دہلی کے وزیرِ تعلیم اور نائب وزیرِ اعلیٰ منیش سسودیا نے کہا کہ اس موقع پر دلائی لامہ کی موجودگی سے بڑی نعمت کچھ نہیں ہو سکتی۔ امن کیلئے پوری دنیا ان کی جانب دیکھتی ہے۔ جناب سسودیا نے کہا کہ جدید تعلیم شاندار کام کر رہی ہے، لیکن آدھا ہی کام کر رہی ہے۔ شاندار انجینئر، ڈاکٹر اور پروفیسر سنس مل رہے ہیں۔ 50 سال پہلے یہ سوچا نہیں جاسکتا تھا کہ بھارت میں پڑھے انجینئر دہلی جیسے مصروف شہر میں میٹرو کا جال بچھا دیں گے۔ لیکن اس تعلیم میں 'انسانی اقدار' کی کمی ہے۔ پرانے لوگ لگاتار کہتے ہیں کہ پہلے سماج میں ویلیو سسٹم تھا جواب نہیں ہے۔ ہم نے تعلیمی میدان میں بدلاؤ کیا۔ اسکول کی بلڈنگ بنی۔ کمرے اور فرنیچر بہتر ہوئے۔ ایک کلاس میں 150 بچے بیٹھتے تھے تو پہلا مقصد کمفرٹ لانا تھا، اس وقت پپی نیس کی بات نہیں کر سکتے تھے۔ دہلی کے اسکولوں میں اب ماحول بدلا ہے، تو ہم پڑھائی کے ساتھ ساتھ تعلیم کے بنیادی مقاصد پر بھی کام کر رہے ہیں۔

ایک آدمی جب تعلیم پوری کر کے نکلے تو اپنا پیٹ پال سکے۔ اتنا کما سکے کہ وہ اپنے خاندان کی پرورش کر سکے۔ آج ان کسٹیوں پر ہماری تعلیم کمزور پڑ جاتی ہے۔ لارڈ میکالے نے 150 سال پہلے جو سسٹم دیا تھا بد قسمتی سے آزادی کے بعد ہم نے اس کو ویسے ہی رکھا، بدلائیں۔ اس کی وجہ سے آج کا پورا کا پورا تعلیمی نظام بچوں کو کتابیں پڑانے میں لگا ہوا ہے۔ ایجوکیشن کا تعلیم نصاب بھی ایسا ہے کہ بس بچے کو اسے پڑنا ہے۔ امتحان میں اُسے ایک طرح سے اُگل کے آنا ہے۔ وہ نہیں سمجھتے کہ تعلیمی نظام ایک ایک بچے کو وطن پرستی سے شراور کرتی ہے یا تعلیمی نظام ایک شخص کو ایک اچھا شہری بناتی ہے۔ اتنے سارے لوگ اتنی ساری ڈگریاں لیکر آج بے روزگار گھوم رہے ہیں۔

ہمزہ ہولی نیس 'دلائی لامہ نے دہلی سرکار کے اس قدم کی جم کر تعریف کی۔ دلائی لامہ نے کہا کہ جدید تعلیم روحانی امن پر کوئی بات نہیں کرتی۔ صحت مند جسم کے ساتھ پُر سکون دماغ بھی ضروری ہے۔ انہوں نے کہا کہ صرف بھارت جدید تعلیم کو قدیم حکمت کے ساتھ جوڑ سکتا ہے۔ یہ انسانی جذبہ کو پورا کرنے کے لئے ضروری ہے۔ یہ جسمانی اور ذہنی فلاح کیلئے راستہ قصیدہ کرے گا۔ غصہ، نفرت، اور حسد جیسی منفی سوچ اور تباہ کن خیالات احساسوں کے چلتے پیدا ہونے والے بحران کا حل کرے گا۔



دہلی کے اسکولوں میں شروع ہوا خوشیوں کا نصابِ تعلیم

وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال نے اسے ایک تاریخی دن بتایا۔ انہوں نے کہا کہ میکالے نے انگریزی حکومت کو مضبوطی دینے کیلئے جو تعلیمی نظام دی جس میں صرف کلرک بنائے گئے۔ اب دہلی کے اسکولوں میں ہر روز، ہر کلاس میں، 45 منٹ کیلئے 'ہپی نیس کری کولم' پڑھایا جائے گا۔ اس میں مراقبہ سکھا کر بچوں کو کشیدگی مفت کیا جائے گا۔ انہیں وطن پرستی کا درس دیا جائے گا۔ وزیر اعلیٰ نے کہا کہ گاندھی جی کہا کرتے تھے کہ تعلیم کا مطلب ہے اچھا انسان بنانا، اچھا شہری بنانا ہے۔

دہلی کے سرکاری اسکول کے بچے اب من کی دنیا کو سادھنے کی بھی ترکیب سیکھیں گے۔ 2 جولائی کو تیاگ راج اسٹیڈیم میں اسکولی بچوں کیلئے بنائے گئے 'خوشی پاٹھ کرم' کا افتتاح کیا گیا۔ اس کے تحت زمری سے لیکر 8 ویں کلاس تک کی ہر کلاس پانچ منٹ کے 'مراقبہ' کے ساتھ شروع ہوگی۔ اس نصابِ تعلیم میں اسکول کے طلباء کیلئے، مراقبہ، اخلاقی قدر، اور ذہنی مشق شامل ہے۔ بودھ مذہبی رہنما دلائی لامہ کی موجودگی میں دہلی کے وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال نے اس نصابِ تعلیم کا آغاز کیا۔



رہی ہے۔ انہوں نے کہا کہ یہ بیٹیاں بڑے سنے دیکھ رہی ہیں۔ شہناز پائلٹ بننا چاہتی ہے۔ روزی سائیکلو جسٹ بننا چاہتی ہے۔ اسی طرح سے یہاں کے جتنے بھی بچے ہیں، سب کے سنے ہیں۔ ملک کی ذمہ داری انہی بچوں کے کندھوں پر ہے۔ انہیں ہی دلش کو سنبھالنا ہے۔

وزیر اعلیٰ ارون کچر یوال نے کہا مستقبل میں سرکار ان بچوں کی پڑھائی میں پوری طرح سے مدد کرنے کیلئے تیار ہے۔ ویسے تو 12 ویں تک تعلیم مفت ہے، لیکن اس کے آگے بھی جو بچہ پڑھنا

چاہے گا، سرکار پوری مدد کرے گی۔ دس لاکھ روپے تک کا تعلیمی لون سرکار دلائے گی، وہ بھی بنا کسی گارنٹی کے۔ نو کری لگنے کے بعد 15 سال میں آسان قسطوں میں لون چکا یا جاسکتا ہے۔ اب بچے مہنگی سے مہنگی پڑھائی کر سکتے ہیں۔ ماں باپ غریب ہوں تو بھی بچوں کو پیسے کی فکر کرنے کی ضرورت نہیں ہے۔ دہلی سرکار ان کے ساتھ ہے۔

وزیر اعلیٰ نے کہا کہ سب کو مثبت ڈھنگ سے سوچنا چاہیے۔ کام بگاڑنے والے کا نام نہیں ہوتا۔ کام اچھا کرنے والوں کا نام ہوتا ہے۔ سرکار بچوں کو اچھی تعلیم دینے کی کوشش کر رہی ہے۔ دہلی میں ماحول بدل رہا ہے جس کی جانب پوری دنیا کی نظر ہے۔ دہلی کے سرکاری اسکولوں میں پڑھنے والے بچوں کی تعداد لگاتار بڑھ رہی ہے جو کی ایک مثال ہے۔ ■



ہے۔ انہوں نے پرنس کے خاندان کو خاص طور سے مبارکباد دی۔ وزیر اعلیٰ اور نائب وزیر اعلیٰ اس کے بعد دریا گنج کے ایک یتیم خانہ گئے اور وہاں شہناز سے ملے۔ شہناز نے پیشہ ورانہ تعلیم، میں پہلا مقام حاصل کیا ہے انہوں نے شہناز کے ساتھ ساتھ یتیم خانہ کی باقی لڑکیوں کو بھی مبارکباد دی۔ شہناز نے بتایا کہ وہ پائلٹ یا ڈاکٹر بننا چاہتی ہے۔ شہناز کے ذریعے دہلی کے اسکولوں میں ہوئے بدلاؤ کی کہانی بھی سب کے سامنے آئی۔ شہناز نے بتایا کہ سرکاری اسکولوں میں بہت بدلاؤ ہوا ہے۔ سرکاری اسکولوں میں بہت ساری سہولتیں مل رہی ہیں۔ آروا کو پانی مل رہا ہے، کھانا مل رہا ہے۔ صاف صفائی مل رہی ہے۔ دن میں چار پانچ بار پوچھا لگ جاتا ہے، چیکنگ ہوتی ہے۔ شہناز نے کہا کہ اب اس کا اسکول کسی پرائیویٹ اسکول سے کم نہیں لگتا۔

وزیر اعلیٰ ارون کچر یوال نے خوشی جتائی کہ شہناز کے 94.4 فیصد اور روزی کے 93.4 فیصد مارکس آئے۔ انہوں نے کہا کہ یہ نتیجے بتاتے ہیں کہ سرکاری اسکولوں میں کیسا بدلاؤ آیا ہے۔ پچھلے کچھ سالوں میں سرکاری اسکولوں کی حالت بیحد اچھی ہوئی ہے۔ ایک طرح غریبوں اور امیروں، دونوں کو اچھی تعلیم مل



ٹاپرس کے گھر جا کر ملے وزیر اعلیٰ اور نائب وزیر اعلیٰ، بچوں کی محنت کو سراہا **ذہین بچوں کی راہ میں غریبی حائل نہیں بنے گی - کیجریوال**



نہیں رہا۔ پرنس کے اسکول کے ٹیچر بھی وہاں موجود تھے۔ دونوں نیتاؤں نے انہیں بھی مبارکباد دی۔ پرنس جس کرائے کے گھر میں رہتا ہے، وہاں صرف ایک کمرہ ہے۔ والد نے گھر کے باتھ روم کو اس کے پڑھنے کی جگہ میں تبدیل کرایا تھا۔ اس چھوٹی سی جگہ میں ایک شخص ہی بیٹھ سکتا تھا۔ کبھی پرنس اور کبھی اس کی بہن یہاں بیٹھ کر پڑھتی تھی۔ کتابوں کی کمی کو پورا کرنے کیلئے لائبریری اور دوستوں کی مدد لینی پڑی۔ گھر میں تنگی اور بیمار رہنے کے باوجود پرنس نے اسکول ٹاپ کیا۔ وزیر اعلیٰ کچر یوال نے کہا کہ یہ پورے خاندان اور سماج کیلئے فخر کا لمحہ ہے۔ پرنس کی ہمت تحریک دینے والی

دہلی کے وزیر اعلیٰ اروند کچر یوال اور نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا سرکاری اسکولوں کے اُن طالب علموں سے ملنے اُن کے گھر گئے جنہوں نے انٹر میڈیٹ امتحان میں شاندار کارکردگی کی۔ میرٹ لسٹ میں نام درج کرانے والے بھارتی راگھو، پرنس کمار، پراچی پرکاش اور چترا کوشک کے لئے 29 مئی 2018 کی تاریخ یادگار بن گئی جب دونوں نیتا اُن سے ملنے گھر پہنچے۔

وزیر اعلیٰ کچر یوال اور نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا پالم میں موجود راج نگر میں پرنس کمار کے گھر مبارکباد دینے پہنچے تو اس کی خوشی کا ٹھکانا



انتظام کرایا گیا۔ بورڈ امتحان سے پہلے انہیں اگزام ٹیس دی گئی اور امیٹی ویشنل ٹاکس، کرائی گئی تاکہ وہ حوصلہ افزا ہو سکیں۔

سرکاری اسکول کے بچوں کو کمزور بچوں پر خاص دھیان دینے کی درخواست کی گئی۔ ذاتی ذمہ داریاں لی گئی۔ محکمہ تعلیم میں اضافی ڈائریکٹر سنیتا کوشک نے سلطان پوری کے سرود یہ کنیا ودیا لیمہ کو گود لیا تھا۔ پچھلے سال اس اسکول کے قریب 40 فیصد بچے ہی پاس ہوئے تھے۔ جبکہ اس سال قریب 80 فیصد بچے پاس ہوئے۔

اب یہ پوری دنیا ماننے لگی ہے کہ دہلی کا تعلیمی نظام بہتر ہوا ہے۔ اسکولوں کا بنیادی ڈھانچہ بہتر ہوا ہے۔ استاذ-طالب علم کا تناسب بہتر ہوا ہے۔ صاف صفائی پر خاص دھیان ہے۔ کمروں کا فرنیچر اور دیواروں کا رنگ بھی بدلا ہے۔ مثبت ماحول ہوا ہے تو بچوں کا پڑھنے میں من بھی لگنے لگا ہے۔ بورڈ امتحان کے نتیجوں میں اس کا اثر صاف نظر آیا۔ ■

سرکاری اسکولوں میں سدھار

نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا کے پاس تعلیم کے علاوہ کئی اہم محکمہ ہیں، لیکن محکمہ تعلیم ان کی فوقیت رہا ہے۔ بارہویں کے نتیجوں میں سرکاری اسکولوں کی شاندار کارکردگی کو ان کی 2 سالوں کی محنت کے نتیجوں کے طور پر دیکھا جا رہا ہے۔

دراصل دہلی کے سرکاری اسکولوں کا درجہ بڑھانے کے لئے کئی اہم قدم اٹھائے گئے۔

دہلی میں نہ صرف تعلیم کا بجٹ بڑھایا گیا، بلکہ وزیر تعلیم منیش سسودیا نے جم کر اسکولوں کا غضب معائنہ کیا۔ اس سے ماحول بدلنا شروع ہوا۔ سرپرستوں کی بھاگیداری اسکول منجمنٹ میں بڑھائی گئی۔ ٹیچروں کی ٹریننگ کو سختی سے لیا گیا۔ انہیں بیرون ملک بھیج کر تربیت دلائی گئی۔ موثر پرنسپلوں کا کمزور سمجھے جانے والے اسکولوں میں تبادلہ کیا گیا۔ چھٹیوں کے دوران کمزور سمجھے جانے والے بچوں کے لئے الگ سے پڑھائی کا



تعلیمی نظام میں بدلاؤ کی کمان سنبھال رہے نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا نے کہا کہ پچھلے سال 103 اسکولوں نے 100 فیصد ریزلٹ دیا تھا، اس بار ان کی تعداد 130 ہے۔ یعنی ان اسکولوں میں سبھی بچے پاس ہوئے۔ 546 اسکولوں کے 90 فیصد سے زیادہ طالب علموں نے کامیابی حاصل کی ہے۔ جناب منیش سسودیا نے اس کے لئے سرکاری اسکولوں کے طالب علموں، اساتذہ، سرپرستوں کے ساتھ ساتھ محکمہ تعلیم کی پوری ٹیم کو مبارکباد دی۔

سی بی ایس ای بورڈ کی 12 ویں کے امتحان کیلئے 11510 اسکولوں کے کل 11,84,386 طالب علموں نے رجسٹریشن کرایا تھا۔ جن میں سے 11 لاکھ 6 ہزار 772 نے امتحان دیئے۔ اس میں دو ٹرانزنڈر طالب علم بھی شامل تھے۔ ان طالب علموں کیلئے ملک بیرون ملک میں کل 4145 امتحان مراکز بنائے گئے تھے۔ جس میں سے کل 11,06,772 طالب علم امتحان میں شامل ہوئے اور 9,18,763 طالب علم پاس ہوئے۔

لڑکیوں نے مادی بازی

طالبات کی کارکردگی شاندار رہی۔ نونیڈا کی میگھنا شریواستو نے 500 میں سے 499 نمبر حاصل کر اکل بھارتیہ سطح پر ٹاپ کیا۔ ٹاپر فہرست کی شروعات میں تین لڑکیوں کے نام ہیں۔ ساتھ ہی دریا گنج کے یتیم خانہ میں رہنے والی شہناز نے معاشیات میں پہلا مقام

حاصل کیا۔ یہاں رہنے والی دیگر لڑکیوں نے بھی اچھے نمبروں سے کامیابی حاصل کی۔

ڈی ٹی سی بس ڈرائیور کے بیٹے پرنس کمار نے دہلی کے سرکاری اسکولوں میں سی بی ایس ای کی 12 ویں کے امتحان میں سائنس فیکلٹی میں پہلی پوزیشن حاصل کی۔ نائب وزیر اعلیٰ منیش سسودیا نے پرنس کمار کو مبارکباد دی اور کہا کہ یہ ان کے لئے بہت فخر کا موقع ہے۔ پرنس کمار نے 97 فیصد نمبر حاصل کئے۔ اسے میٹھ میں 100 میں 100 نمبر ملے۔ وزیر تعلیم نے دہلی کے سرکاری اسکولوں کے کامرس فیکلٹی میں اول آنے والی پراچی پرکاش اور آرٹ فیکلٹی میں ٹاپ پوزیشن حاصل کرنے والی چتراکو شک کو بھی مبارکباد دی۔

سرکاری نے پرائیویٹ اسکولوں کو پچھاڑا

لگاتار دوسرے سال سی بی ایس ای کے 12 ویں کے نتیجوں میں دہلی کے سرکاری اسکولوں نے پرائیویٹ اسکولوں کو پیچھے چھوڑ دیا۔ اس سال کے نتیجوں کے مطابق جہاں پرائیویٹ اسکولوں کے 79.29 فیصد بچے پاس ہوئے وہیں سرکاری اسکولوں کا پاس فیصد 88.27 فیصدی رہا۔ اس طرح پاس فیصد کے معاملے میں دہلی کے سرکاری اسکول، پرائیویٹ اسکولوں سے 9 فیصدی آگے رہا۔ سرکاری اسکولوں کی اچھی کارکردگی کیلئے وزیر تعلیم منیش سسودیا کو ہر جانب سے مبارکباد ملیں۔





سی بی ایس ای 12 ویں امتحان میں دہلی کے سرکاری اسکولوں کا شاندار مظاہرہ پرائیویٹ اسکولوں کو پیچھے چھوڑا

دہلی میں تعلیمی نظام کی تبدیلی کا اثر ہر طرف دکھ رہا ہے۔ اس بار بھی دہلی کے سرکاری اسکولوں نے بورڈ امتحان میں شاندار مظاہرہ کیا اور نجی اسکولوں کو پیچھے چھوڑ دیا۔ 26 مئی 2018 کو اعلان کردہ سی بی ایس ای 12 ویں کے نتیجوں نے ثابت کیا کہ سرکاری اسکولوں کا درجہ سال در سال بہتر ہوتا جا رہا ہے۔ دہلی کی سکرتی گپتانے 99.4 فیصد نمبر پا کر ٹاپ کیا۔ اس کارکردگی سے خوش ہو کر دہلی کے وزیر تعلیم منیش سسودیا نے ٹویٹ کر طالب علموں کو مبارکباد دی۔ پچھلے سال دہلی کے سرکاری اسکولوں سے 88.27 فیصد طالب علم کامیاب تھے۔ وہیں اس سال دہلی کے سرکاری اسکولوں کی کامیابی کا آئٹرا 2.37 فیصد بڑھا۔ کل 90.64 فیصدی طالب علم پاس ہوئے۔

دہلی میں تعلیمی نظام کی تبدیلی کا اثر ہر طرف دکھ رہا ہے۔ اس بار بھی دہلی کے سرکاری اسکولوں نے بورڈ امتحان میں شاندار مظاہرہ کیا اور نجی اسکولوں کو پیچھے چھوڑ دیا۔ 26 مئی 2018 کو اعلان کردہ سی بی ایس ای 12 ویں کے نتیجوں نے ثابت کیا کہ سرکاری اسکولوں کا درجہ سال در سال بہتر ہوتا جا رہا ہے۔ دہلی کی سکرتی گپتانے



प्लास्टिक प्रदूषण को उखाड़ फेंके

प्रिय दिल्लीवासियों,

प्लास्टिक एक गैर-जैव विघटित पदार्थ है तथा इसके कूड़े में शामिल होने से अवायुजीवी परिस्थितियों को जन्म देता है तथा कूड़े की प्राकृतिक कंपोस्ट बनाने व क्षय करने की क्रिया को बाधित करता है व इससे काफी दुर्गंध फैलती है। यह हवा के साथ उड़ कर या अन्य कूड़े कचरे के साथ सम्मिलित होकर नदियों/नालों/सीवर लाईनों/नालियों में रूकावट पैदा करता है जिससे जल भराव व लीकेज की समस्या उत्पन्न होती है। शहरीय क्षेत्र में अवारा घूमने वाले पशु अक्सर कूड़ा खाते हुए पाए जाते हैं जिसके साथ वे प्लास्टिक की थैलियां भी खा जाते हैं जो कि उनके लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं।

माननीय राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण ने दिनांक 10.08.2017 के निर्देशानुसार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली में 50 माइक्रोन से कम की प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाते हुए, दोषी पाए जाने पर, दण्ड के रूप में 5,000/- रुपये पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति के रूप में जमा करवाने के लिए भी आदेश दिया है।

इसलिए, मैं तहे दिल से आप सबसे अनुरोध करता हूँ कि आप सभी मिलजुल कर पर्यावरण की समस्या का सामना करें। समय आ चुका है कि हम यह जाने कि इस परिस्थिति से निपटने के लिए हमें अपनी आदतों को बदलना होगा और एक बार प्रयोग में आने वाले डिस्पोजेबल प्लास्टिक को तथा प्लास्टिक की थैलियों को प्रयोग में ना लाएं।

हमें विकल्प के तौर कपड़े/जूट/कागज से बने थैलों का प्रयोग करना चाहिए। घर से बाहर निकलते समय पानी की बोतल साथ रखने से प्लास्टिक की बोतलों का कचरा कम करने में सहायक होगा। सामाजिक एवं सार्वजनिक समारोहों में चाय/जल-पान के लिए मिट्टी के कुल्हड़ का प्रयोग तथा पत्तल को डिस्पोजेबल प्लेट के रूप इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

पर्यावरण अनुकूल विकल्प की ओर चले

एक बार प्रयोग में आने वाले डिस्पोजेबल प्लास्टिक का तथा प्लास्टिक की थैलियों के प्रयोग को मना करें - प्लास्टिक प्रदूषण को उखाड़ फेंके

शुभकामनाओं सहित

अरविंद केजरीवाल, मुख्यमंत्री, दिल्ली

दिल्ली सरकार

आप की सरकार



मास्टर अमीर चंद



बसंत कुमार बिस्वास



मास्टर अवध बिहारी



भाई बालमुकुंद

जिन्होंने, देश पर
न्यौछावर किए अपने प्राण
उन शहीदों को
हम सबका सलाम



श्री अरविंद केजरीवाल, माननीय मुख्यमंत्री, दिल्ली



सूचना एवं प्रचार निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार,

डॉ. जयदेव षडंगी, निदेशक, सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली सरकार, पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054 द्वारा प्रकाशित
एवं आकांक्षा इम्प्रेशन्स, 18/36 स्ट्रीट नं. 5, रेलवे लाइन साइड, आनंद पर्वत इंडस्ट्रियल एरिया, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली-05 द्वारा मुद्रित